समाधान

समाधान

निवंध संग्रह

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5351-293-4
दाम : 200रूपया

पहिल संस्करण : 2019

लेखक एवम् प्रकाशक : रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
Phone: 01202343563 M:9968502767

समाधान

A Collection of Essays in Maithili
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण

पू० मातामह स्वर्गीय राम प्रसाद झा
आ
पू० मातामही स्वर्गीया उत्तमा देवी
(ग्राम-सिंघिया ड्योढ़ी)क
संस्मरणमे
ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

रबीन्द्र

अनुक्रम

दू आखर

एहि पुस्तकमे नित्यप्रतिक जीवनमे व्यवहारमे प्रयुक्त विविध प्रसंगपर आलेखसभ सामिल कएल गेल अछि । किछु संस्मरणात्मक निवंध सेहो अछि । किछु कानूनी विषयपर सेहो चर्च कएल गेल अछि।

एहि पुस्तकक लेखनक क्रममे हमर पत्नी श्रीमती आशा मिश्र आओर समस्त मित्र-मण्डली हमरा निरन्तर उत्साहित करैत रहलाह। एहि हेतु ओसभ प्रशंसाक पात्र छथि।

आशा अछि जे पाठक एकरा पढ़ि लाभान्वित हेताह।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

1/3/2019



देबराहा बाबा

प्रयागराजमे रहैत जे किछु अविस्मरणीय घटनासभ घटल ओहिमे एकटा छल माघमेलामे देवराहा बाबाक दर्शन । ओहि समयमे हमसभ प्रयागराजक १७,नया ममफोड़गंजमे डेरा लेने रही। ममफोड़गंजसँ माघमेला पैरे जाएब एकटा रोमांचकारी यात्रा होइत छल । कै बेर चलिते-चलिते जखन थाकि जाइ तँ एक्काक सहारा होइत छल । जे होइ,जेना होइ .मुदा हम सभसाल माघमेलामे बाबाक दर्शन करए जेबे करी । माघमेलामे सभसँ कातमे गंगाजीक धारसँ सटले हुनकर मचान बनाओल जाइत छल । ओ अपन चेला-चटिआसभक संगे माघमेलामे मचानपर टांगल रहैत छलाह । ओ मचान एहि हिसाबसँ बनाओल जाइत चल जाहिसँ ओ ओकर उपयोग मंच जकाँ

कए लैत छलाह । ओतहि बैसि कए भक्तलोकनिकेँ दर्शन दैत छलाह आ जखन मोन औंट भए जानि तँ मचानक अंदर चलि जाइत छलाह। देबराहा बाबा जखन मचानसँ बाहर होइतथि आ ओहीमे बनल ओसारापर बैसितथि तँ भक्तलोकनिमे अपार प्रशन्नता होइत । सभ हुनकर जयकारा लगबितथि , कीर्तन करए लगितथि ।

बाबाक किछु चीज हुनका आन संतसभसँ एकटा अलग पहिचान दैत अछि । जाहिमे प्रमुख अछि हुनकर बएस । किओ कहैत छथि जे ओ तीन सए बरखक छलाह तँ किओ किछु । भारतक प्रथम राष्ट्रपति सेहो हुनका अपन वाल्यावस्थामे अपन पिताक संगे दर्शन केने रहथि । कहाँ दनि बाबा कहने रहथि –“ई तँ राजा होइ।"- से बात सही भेल । ओ भारतक राष्ट्रपति भेलाह । राष्ट्रपति भेलाक बाद ओ बाबाक दर्शन केने रहथि ।

देवराहा बाबा घंटो गंगामे डुबल नहाइत रहैत छलाह । भक्तसभ हुनकर प्रतीक्षामे कीर्तन करैत रहैत छलाह । गंगासँ निकलि ओ द्रुतगतिसँ अपन मचान दिस भगैत छलाह । बएस बेसी हेबाक कारण ओ झुकि गेल रहथि । मचानमे पाछुएसँ ओ प्रवेश करितथि । तकरबाद लोकसभ आशा करैत जे ओ आब निकलताह,ताब। कै बेर तुरंते निकलि जइतथि,कै बेर घंटो नहि निकलितथि । बाहर अबितहि भक्तसभ दिस प्रसाद फेकितथि । जकरा जे भेट जाए । भक्तलोकनिकेँ आशीर्वाद देबाक हुनकर तरीका सेहो अलग छल । भक्तलोकनि हुनकर मचानलग अबितथि आ बाबा हुनकर माथसँ अपन पैर सटा दितथि । मुदा ई भाग्य सभहक नहि होइत छल। ककरो-ककरो फटकिएसँ नाओँ लए बजबैत छलाह । मचानपर

बैसले-बैसल ओकर माथपर पैर राखि दितथि। ओ धन्य भए जाइत। प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजीक पोथी भागवती कथाक दुनू भाग लेबाक हेतु ओ लोकसभकेँ प्रेरित करैत छलाह । पोथी कीनि कए लोक हुनका लग लए जाइत छल । ओ ओकरा छुबि दैत छलखिन । ओएह भए गेल हुनकर आशीर्वाद। एहि तरहें भरि माघमेला ई कार्यक्रम चलैत रहैत छल ।

देबराहा बाबाक बएसक बारेमे कतेको तरहक किंवदंती अछि । किओ हुनका पाँच सए बरखक तँ किओ तीन सए बरखक कहैत छथि । किओ-किओ तँ हुनका नौ सए बरखक सेहो कहैत छथि। कहल नहि जा सकैत अछि जे वस्तुतः हुनकर बएस कतेक छल । मुदा एतबा तँ तय अछि जे वो सामान्य आदमीसँ बहुत बेसी बएसक रहथि ।

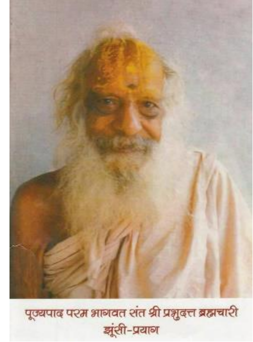
कहल जाइत अछि जे वो एकठामसँ दोसर ठाम जेबाक हेतु कोनो सबारीक प्रयोग करैत कहिओ नहि देखल गेलाह । ओ अपन योगशक्तिसँ कतहु चलि जा सकैत छलाह ,पानिपर ठाढ़ रहि सकैत छलाह ? पानिमे बड़ीकालधरि डुबल तँ हमहु हुनका प्रयागराजमे गंगामे देखने छिअनि । जखन ओ गंगाजीसँ बाहर निकलितथि तँ दर्शकमे अपार हर्ष भए जाइत छल । इहो कहल जाइत अछि जे जानवरसभक भाखवा बूझैत छलाह आ ओ सभ हुनकर कहल करबो करनि । निर्जीव वस्तुसभपर सेहो ओ नियंत्रण कए लैत छलाह। ओ लग-पासक गाछ-बृच्छसँ गप्प करैत रहैत छलाह ।

हुनकर आश्रममे एकटा बबूरक गाछ छल । राजीव गांधी प्रधानमंत्री रहथि तँ ओ बाबाक दर्शन करए आबएबला छलाह ।

सुरक्षाक दृष्टिसँ अधिकारीसभ ओहिगाछकेँ पाँगए चाहैत छलाह । मुदा बाबा अड़ि गेलखिन । कहलखिन-

"राजीवक कार्यक्रम रद्द भए जेतैक । तूँसभ नाहक परेसान छह ।" सएह भेल । हुनकर कार्यक्रम रद्द भए गेल । गाछ बाँचि गेल। बाबाक बात सही साबित भेल ।

बाबाकेँ किओ पुछनि जे ओ पैरसँ आशीर्वाद किए दैत छथि तँ ओ कहितथि जे पैरमे सभटा तीर्थस्थान समाहित छथि । हुनकर अवस्थाक बारेमे पुछितनि तँ कहितथि जे ओ व्रह्मलीन छथि। माने व्रह्ममे ओ आ हुनकामे व्रह्म मीलि गेल छथि । जाढ़-गर्मी,सभमे ओ बिना कोनो वस्त्रकेँ कोना रहैत छथि? तकर जबाबमे ओ मृगछाला देखबैत कहितथि जे इएह हुनकर वस्त्र अछि। योगकृया द्वारा ओ अपन शरीरक तापमानकेँ नियंत्रित करैत रहैत छथि । योगद्वारा ओ जीह्वासँ अमृतपान करैत रहैत छथि जाहिसँ हुनकर शरीरकेँ उर्जा भेटैत रहैत छनि। एहि तरहक अनेको रहस्यसँ भरल ,निरंतरसभक कल्याणमे लागल भारतक एहि महान संत १९ मई १९९०क वर्ह्मलीन भए गेलाह ।



पूज्यपाद परम भागवत संत श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी
झूंसी-प्रयाग

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

अलीगढ़ जिलाक एकटा गरीब ब्राह्मण परिवारमे सन् १८८५मे प्रभुदत्त ब्रह्मचारीक जन्म भेल रहनि । शुरुएसँ संस्कृतमे हुनका बहुत रूचि रहनि । ताहि हेतु ओ मथुरा,वृंदावनक कतेको गुरुकुल गेलाह । अंततः ओ काशीक गुरुकुल पहुँचलाह जतए हुनकर करपात्रीजी संगी रहथिन । स्वतंत्रता आंदोलनमे ओ सकृय रहलाह आ ताहिक्रममे जेलो गेलाह । जवाहरलाल नेहरु जेलमे हुनकर संगे रहथिन । प्रभुदत्त ब्रह्मचारी परिब्राजकक जिनगी जीबैत विभिन्न स्थानक यात्रा करैत रहलाह । ओहिक्रममे हुनका महान संत उरिया बाबा आ हरिबाबासँ भेंट भेलनि । हिनका दुनूगोटेसँ ब्रह्मचारीजीकेँ बहुत प्रेरणा भेलनि आ हुनके सभक प्रेरणासँ ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु ओ हिमालय चलि गेलाह।

हमसभ जखन नेन्ना रही तँ बाबूजी बरोबरि प्रभुदत्त ब्रह्मचारीक चर्चा करैत छलाह। ओहि समयक मानल संतमे हुनकर नाम छल । चर्चाक क्रममे ओ कहितथि जे कोना ओ हिन्दू कोड बिलक मामलापर नेहरुजीक खिलाफमे लोकसभाक चुनाव १९५२मे लड़ल

रहथि । संगमक ओहिपार पूलसँ लोक झूसी जाइत अछि । गंगाक कातमे हुनकर आश्रम छल । ओतहि एकटा संस्कृत महाविद्यालय सेहो ओ चलबैत छलाह । तहिएसँ ओ स्थान संकीर्तन भवनक नाओंसँ जानल जाइत अछि। गाहे-वगाहे हुनकर चर्चा होइते रहैत छल । समाचार पत्रसभमे हुनका बारेमे छपैत रहैत छल।

ओही समयमे हुनकर लिखल किताब "शोक नाश" पढ़बाक अवसर भेटल । अद्भुत किताब छल ओ । एहिमे ओ अपना संगे घटल एकटा दुखद प्रसंगक वर्णन केने छथि । दक्षिण भारतक अपन एकटा भक्तक ओहिठाम ट्रेनसँ जाइत काल किछु सहयात्रीसभ हुनका संगे शायिकाक विवादक क्रममे हुनकर झोटा पकड़ि कए जोर-जोरसँ खिचए लागल । दर्दसँ ओ छटपटाइत छलाह । इसारासँ ओ कै बेर ओकरा मना करथि । मुदा ओ अत्याचार करैत रहल । ओहि असह्य पीड़ाकेँ ओ सहैत रहि गेलाह। किछु बाजिओ नहि सकलाह,कारण ओहि समय ओ मौनमे रहथि,बाजि नहि सकैत छलाह । जखन ट्रेनसँ उतरबाक काल हुनकर स्वागतमे भक्तक भीड़ लागि गेल आ से बात ओ लड़ाका यात्री देखलक तँ ओकरा अपन गलतीक अनुमान भेलैक। ओ हुनकर पैर पर खसि पड़ल । महात्माजी ओकरा आशीर्वाद दैत अपन भक्तसभक संगे चलि गेलाह। ककरो किछु नहि कहलखिन।

शोकनाश पुस्तकमे बर्ह्मचारीजी अपन आश्रममे रहैत एकटानेन्नाकेँ अकस्मात गंगामे नहाइत काल डुबि जेबाक प्रसंगक वर्णन करैत लिखैत छथि जे ओहि बालककेँ ओ दिन-राति ध्यान रखैत छलाह । नित्यप्रति ओ गंगा स्नान करैत छल । ओहिदिन हुनके संगे नहाइत-नहाइत ओ गंगाक पानिक घुर्मीमे फँसि गेल आ डुबल से डुबले रहि गेल । लगपास ठाढ़ गोताखोरसभ बहुत तकलक,अपनाभरि बहुत प्रयास केलक मुदा ओ कतहु नहि भेटल। एहि तरहेँ दुर्घटनामे ओहि नेन्नाक आकस्मिक मृत्युसँ महात्माजी बहुत दुखी भेलाह । कै दिन

अन्न-जल ग्रहण नहि केलाह । फेर लोकेसभ हुनका बुझओलक जे एकटा सन्यासीक लेल एतेक शोक करब उचित नहि । ओहि बालकक स्मृतिमे संकीर्तन भवनमे भगवानक नवाह कएल गेल । आश्चर्यक बात जे ओहि बालकक पिता एहि समाचारसँ उद्वेलित नहि भेल आ कहैत रहि गेल जे महात्माजीक आश्रयमे ओकर मुक्ति भए गेल एहिसँ बेसी भाग्यक बात आओर की भए सकैत छल ?

पहिलबेर हमरा हुनकासँ १९७८ ई०मे भेंट भेल । ओहि समयमे हमर पदस्थापना प्रयागराजमे रहए । हमरासंगे हमर अनुज रहथि । ओ विस्तारसँ हमरासँ गप्प-सप्प करैत रहलाह । संगहि हमर अनुजसँ सेहो हुनकर पढ़ाइ-लिखाइक बारेमे पुछलखिन । आग्रह केलखिन जे ओ हुनकार संस्कृत कालेजमे शास्त्रीमे नाओं लिखा लेथि। मुदा ताहि हेतु ओ तैयार नहि भेलाह। हमसभ घंटा-दूघंटा ओहिठाम बिता कए आपस अपन डेरा चलि आएल रही । तकर बाद कै बेर हम असगर आ परिवारक संगे हुनकासँ भेंट करबाक हेतु जाइत रहलहुँ। एकबेर कृष्णाष्टमीक दिन हम सपरिवार झुँसी स्थित हुनकर आश्रमपर गेल रही । हमर ज्येष्ठ पुत्र भास्कर सेहो संगे रहथि । महात्माजी हुनकर नाओं पुछलखिन। कहलिअनि-"भास्कर।"

" भास्कराय नमो नमः!" -ओ बजलाह ।

हमरा सभकेँ रातिमे ओतहि रहबाक हेतु कहलाह जाहिसँ हमसभ कृष्ण जन्मोत्सव देखि सकी । संकीर्तन भवन पर गेलासँ एकटा अद्भुत सात्विक आनंदक अनुभव होइत छल । कै बेर तँ ओ लिखबा मे व्यस्त रहैत छलाह । हमरा सभक गेलापर किओ चेला जा कए हुनका कहतनि जे भक्तसभ आएल छथि तँ ओ बाहर आबि जइतथि । संकीर्तन भवनमे जन्माष्टमीक पर्व धूमधामसँ मनाओल जाइत छल । कै बेर हमहु ओहिमे सामिल भेल रही।

संत तँ ओ छलाहे,अपना समयकेँ उत्कृष्ट लेखकमे सेहो हुनकर सुमार होइत छल । करीब दू सए पोथी ओ लिखने छथि । साहित्यिक क्षेत्रमे हुनकर योगदानक बहुत प्रशंसा भेल आ हुनका कैटा पुरस्कार सेहो भेटल। हुनकर प्रमुख पुस्तकमे भगवती कथा (११८ खण्ड),भगवत चरित सप्ताह(मूल) , भागवत चरित सटीक (दू भाग),महात्मा कर्ण,महावीर हनुमान ,चैतन्य चरितावली, आदि प्रसिद्ध अछि । देबराहा बाबा माघ मेलामे हुनकर भागवत चरित सटीक दुनू खण्ड आशीर्वाद स्वरुप भक्तगणकेँ कीनबाक प्रेरणा दैत छलाह ।

ब्रह्मचारीजीक वसंतगाँव स्थित आश्रममे हनुमानजीक विशाल मुर्तिक स्थापना करबाक हेतु मुर्ति दक्षिण भारतक कर्कलासँ आनल गेल छल । कै महिनाक प्रयासक बाद ओहि विशालकाय मुर्त्तिकेँ वसंतगाँव स्थित आश्रममे ठाढ़ कएल गेल । ओहि समयमे ब्रह्मचारीजी प्रयागमे माघक कल्पवास कए रहल छलाह। ओ माघभरि ओतए नित्य गंगामे स्नान करैत छलाह । तथापि ओ वसंतगाँव स्थित आश्रममे हनुमानजीक मुर्त्तिक स्वागत हेतु २४ जनबरी १९९०क अएलाह । हनुमानजीक विशालकाय मुर्त्ति देखि कए ओ भावविभोर भए गेलथि । मुदा माघक स्नान संगममे करबाक रहनि । तेँ ओ ओतए ओही राति लौटि गेलाह । माघमेलाक बाद ओ सुनरेखा गाँव स्थित सौबरी ऋषिक आश्रमक जीर्णोद्धार कार्यक्रममे भाग लेबए अएलाह आ तकर बाद वृंदावन चलि गेलाह । ओहिठाम हुनकर स्वस्थ्य बहुत तेजीसँ खराप होबए लागल । देवराहा बाबा एहि समाचारकेँ सुनि बहुत दुखी रहथि । ओ निरंतर हुनकर हालचाल लैत रहलाह । परंतु ओ दबाइ खेबासँ साफे मना कए देने रहथि । खराप स्वास्थ्यक बाबजूद ओ ओहिठामसँ वसंतगाँव स्थित अपन आश्रम अएलाह आ हनुमानजीक पास भावविभोर भए कानए लगलाह । हुनकर आग्रहपर भक्तसभ हुनका कुर्सीपर बैसाकए हनुमानजीक परिक्रमा

करओलथि। दोसर दिन भोरे ११ मार्च १९९०क ओ एहि संसारकेँ छोड़ि अनंतमे विलीन भए गेलाह ।

प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी यशस्वी लेखक आ प्रतिष्ठित संत छलाह। जीवनभरि कोनो-ने-कोनो रूपमे ओ समाजक सेवा करैत रहलाह । ओ सनातन धर्मक एकटा मजगूत खाम्ह छलाह । हुनकर निधनसँ देश ओ संस्कृतिक अपार क्षति भेल । हुनकर चलाओल गेल काजसभकेँ हुनक शिष्य एवम् प्रशंसक लोकनि आगा बढ़बैत रहथि सएह हुनकर प्रति सही मानेमे श्रद्धांजलि होएत ।

ब्रह्मस्थानक इसकूल

जीवनक किछु घटना मोनपर अमिट निसान बना दैत अछि,जे रहि-रहि कए मोन पड़ैत रहैत अछि । जकर प्रभाव संपूर्ण व्यक्तित्वपर पड़ैत अछि । एहने घटना छल हमरसभक नेन्नामे गामक ब्रह्मस्थानक इसकूल गेनाइ।

गाममे सभसँ पछबारी कात पोखरिक भीरपर पीपरक गाछ छल। ओ गामक ब्रह्म बाबा छलाह आ छथिहो । अखनो ओतए लोकसभ कबुलाक बाद दुधक ढार दैत अछि । सालमे एकबेर ओतए महादेवक पूजा होइते अछि । आब तँ नबाह सेहो प्रायः सभसाल होइत अछि। कालक्रमे ओहिठाम काली मंदिरक निर्माण भए गेल अछि । दीयाबातीक दिन ओतए बेस धूमधामसँ कालीक पूजा कएल जाइत अछि । पहिने ओहिठाम खोपड़ीमे एकटा इसकूल चलैत छल जाहि मे गामभरिक नेन्नासभ प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करैत छल । ओ इसकूल स्वर्गीय पण्डित अदिष्ट नारायण झा(बच्चू बाबू) व्यक्तिगत रूपसँ चलबैत छलाह । हमरा अखनो मोन अछि जे वृहस्पतिदिन कए

हमर दरबाजापर ओ हमरा भट्ठा धरओने रहथि। हमर माता-पिता सहित पितामह ताहि समय ओतए रहथि आ कतेक प्रशन्न भेल रहथि।

गामक तीस-चालिसटा नेन्नासभ ओहि इसकूलमे पढ़ैत छलाह । एक-एक विद्यार्थीपर मास्टर साहेबक नजरि रहैत छलनि। कोनो विद्यार्थी जँ पढ़ाइमे कोताही केलक किंवा इसकूलमे कोनो अनुशासनहीनता केलक तँ ओकर सिकाइत माता-पिता धरि अवश्य होइत छलैक मुदा विद्यार्थीक शारीरिक दण्ड देबाक प्रथा ओतए नहि छल ।

हमरा मोन पड़ैत अछि जे एकदिन हम इसकूल नहि गेल रही। ओहि समय हम दूसरा वा तीसरा किलासमे रहल होएब । मास्टर साहेब इसकूलक चारिटा विद्यार्थीकेँ हमरा आनबाक हेतु पठओलथि। इसकूलक विद्यार्थी हमरा लेबए अएलाह अछि,से जानि हम बारीमे केराक गाछसभक बीचमे नुका गेल रही । फेर हमरा ताकल गेल आ ओ सभ लादि कए हमरा इसकूल लए गेलाह। रस्ताभरि ओ सभ हमरा रहि-रहि कए बिठुआ कटैत रहलाह,जाहिसँ हम परेसान होइत रहलहुँ। ओ सभ हमरा ओना लादि कए किएक लए गेलाह से नहि बुझि रहल छी । भए सकैत अछि जे हम ओना जेबासँ मना कए देने होइऐक । पाछू-पाछू हमर बहिन गेल रहथि जाहिसँ मास्टर साहेब हमरा मारथि नहि । जे-से, मुदा ओ घटना एखनधरि हमरा मोनमे गड़ल अछि।

ओहि इसकूलक जतेक प्रशंसा कएल जाए से कम होएत,कारण ओतहि हम प्राथमिक शिक्षा प्राप्त केलहुँ । ब्रह्मस्थानक ओहि इसकूलमे मात्र एकहिटा शिक्षक छलाह-बच्चूबाबू(स्वर्गीय पण्डित अदिष्ट नारायण झा) । कतेक नियम-निष्ठासँ ओ नेन्नासभकेँ पढ़बैत छलाह तकर वर्णन करब मोसकिल। भोरे प्रार्थनासँ इसकूलक कार्यक्रम प्रारंभ होइत छल । विद्यार्थीसभक हाजिरी लेल जाइत छल। एकहि खोपरीमे चारिटा किलास कोना चलैत छल आ एक्केटा मास्टर

एकहि संगे चारू किलासक नेन्नासभकेँ कोना सम्हारैत छलाह से सोचि आश्चर्य लगैत अछि । मुदा एतबा मोन अछि जे हमसभ इसकूलमे निरंतर व्यस्त रहैत छलहुँ । कोनो प्रकारक अनुशासनहीनताक सबाले नहि छल। कहिओ काल गीत-नाद सेहो होइत छल । इसकूलसँ छुट्टीक पहिने खाँति सामुहिक रूपसँ सभ विद्यार्थी दोहरबैत छलाह । निरंतर चलैत एहि अभ्याससँ हमरासभक खाँति कंठाग्र भए गेल छल जे आगा चलि कए अंकगणितमे बहुत सहायक भेल ।

इसकूलक महत्वपूर्ण कार्यक्रममे छल-शनिदिनक शनिचरीक कार्यक्रम । सभ विद्यार्थी अपन-अपन घरसँ अरबा चाउर अनैत छलाह,गुंड़ अनैत छलाह आ इसकूलमे ओकरासभकेँ पानिमे फुलाकए पूजाक हेतु प्रसाद बनाओल जाइत छल, तकर बाद पूजा कएल जाइत छल । एकमुठ्ठी पूजाक प्रसादक सभ विद्यार्थीकेँ देल जाइत छल । इसकूलक सभविद्यार्थीक एहिमे सहभागिता रहैत छल। ओहिदिन इसकूलक चहल-पहल देखएबला रहैत छल । आब सोचैत छी जे एतके छोट कार्यक्रम आ एतेक कम लागतमे केना विद्यार्थीसभ एतेक आनंन्दित होइत छलाह,उत्सव मनबैत छलाह? एकटा आओर जे मनोरंजक कार्यक्रम होइत छल से गणेश चतुर्थीक अवसरपर विद्यार्थीसभ द्वारा गाममे घुमि-घुमि कए ठाम-ठाम "गणेशजी,गणेशजी करे कराम...करैत पूजाक हेतु चंदा एकठ्ठा करब । धियापूताक मोन - कोनो-कनीकोटा नव बातमे सभ प्रशन्न भए जाइत छल । आइ-काल्हि जकाँ बेसी सुविधा संपन्न आ अपेक्षाबला समय तँ रहैक नहि। तेँ जएह-सएहसँ बच्चासभ आनंदित भए जाइत छल ।

आइ-काल्हिक सुविधा संपन्न इसकूलक हिसाबे तँ ब्रह्मस्थानक ओहि इसकूलमे किछु नहि रहैक । घरक नामपर एकटा फूसक खोपड़ी रहैक । बैसबाक हेतु माटि रहैक । खेलेबाक हेतु सेहो पर्याप्त जगह नहि रहैक । कोनो पुस्तकालय नहि छल ।

अभिवावकसभ सेहो शुभानअल्ला । के पढ़ि रहल अछि,के नहि,नेन्ना इसकूल गेल कि नहि तकरो साइते ध्यानमे रहैक ।

तखन रहैक कि जे ओ इसकूल सालक साल चलैत रहल आ कैटा बहुत प्रतिभाशाली व्यक्तिक सृजन केलक? ओहिमे छलैक एकटा अद्भुत व्यक्तित्वक शिक्षक-बच्चूबाबू। साधारण लिबासमे , हाथमे एकटा डायरी लेने ओ नित्य समयपर इसकूल पहुँचि गाम-घरक नेन्नासभमे ज्ञानक ज्योति जगबैत रहैत छलाह। हमरा मोन नहि पड़ैत अछि जे ओ कहिओ कोनो विद्यार्थीकेँ मारि-पीट केने होथि,प्रताड़ित केने होथि । कहि ने हुनकर बातमे कोन जादू छल जे नेन्नासभक मोनकेँ घींचि लैत छल । खेल- खेल मे चारि किलास हमसभ मात्र दूसालमे पास कए गेल रही । शिक्षाक प्रति एहन समर्पण आइ-काल्हि डिबिआ लए कए ताकब तँ नहि भेटत। दुखक बात अछि जे एहन समर्पित व्यक्तिकेँ समाजसँ किछु नहि भेटल । ओ एकतरफा अपन काजमे लागल रहलाह जाहिसँ गामक कतेको विद्यार्थीक जीवन बनि गेल जाहिमे हमहु सामिल छी ।

जा धरि बच्चू बाबू अपन प्रयाससँ इसकूल चला सकलाह ताबे ओ इसकूल चलल । बादमे आर्थिक विवशतासँ मजबूर भए ओ गाम छोड़ि कलकत्ता चलि गेलाह । ओ इसकूल टुटि गेल । नेन्नासभ लगपासक दोसर इसकूलसभमे चलि गेल । बादमे ओ गाम घुरि अएलाह । तखन गामक संस्कृत विद्यालयमे शिक्षक भए गेलाह । मुदा दुर्भाग्यक बात जे ओहि संस्कृत विद्यालयमे विद्यार्थीसँ बेसी मास्टरे छलाह आ खानापूरीक हेतु जहाँ-तहाँसँ विद्यार्थीक नाँओ लिखि देल जाइत छल । विद्यार्थीसभ कै बेर उत्तरमध्यमाक साटीफिकीट लेबाक हेतु ओहि ठामसँ परीक्षाक फार्म भरैत छलाह आ पासो भए जाइत छलाह । कहि नहि आब ओहि संस्कृत विद्यालयक की हाल अछि?

बच्चू बाबू इसकूलमे विद्यादानक अतिरिक्त गाम-घरमे होबएबला पूजा-पाठमे सकृय रहैत छलाह । कोनो शुभ काजक हेतु दिन तकेबाक होअए तँ बेसी लोक हुनके ओतए जाइत चल कारण ओ बहुत व्यवहारिक रुखि रखैत छलाह आ दिन तकबामे ग्रह,नक्षत्रक संगहि लोकक सुविधाक पर्याप्त समावेश करैत छलाह । कोनो विषयपर वाद-विवादमे अपन पक्ष बहुत जोरदार ढ़ंगसँ रखैत छलाह। एकबेर हमर गाम अड़ेरक उच्चारण की सही अछि ताहि विषयपर हुनका चौकपर जबरदस्त वाद-विवाद करैत देखने रहिअनि जे अखनो मोन पड़ैत रहैत अछि। सही मानेमे ओ वहुआयामी व्यक्तित्वक बहुत विनम्र आ विद्वान व्यक्ति छलाह जे जीवन पर्यन्त कोनो-ने-कोनो रूपमे समाजक सभदिन सेवा करिते रहलाह ।

दूसाल पूर्व माऐक श्राद्धक कर्म करबाक हेतु हम ब्रह्मस्थान जाइत छलहुँ । बेर-बेर पुरना समय मोन पड़ैत छल । आब समय बदलि गेल । गामक ब्रह्मस्थानमे काली मंदिर बनि गेल । लगीचेमे सरकारी प्राथमिक विद्यालय खुजि गेल । ओहिमे कैटा मास्टरक बहाली भेल अछि । गामक कतेको विद्यार्थिसभ ओहिठाम पढ़ैत छथि। सरकारी योजनाक तहत ओहि विद्यालयमे दुपहिरआक भोजन सेहो भेटैत अछि । तथापि आब ने ओ रामा ने ओ खोटाला। एतेक सुविधाक अछैतो ओहिठाम ओ चुहचुही नहि बुझाएल ।

अफसोचक बात अछि जे लोक सभ बच्चूबाबू सन परोपकारी विद्वानक किछु नहि कए सकल। से जे होइक मुदा हुनकर उपकारसँ हमहीटा नहि,अपितु ओहिसमयक अनेको विद्यार्थीक जीवन बनि गेल । से सभ हुनका कहिओ नहि बिसरि सकत । एहन महान विभूतिक स्मृतिकेँ शत्-शत् नमन!

गाममे हैजा

कै बेर जखन असगरमे रहैत छी तँ मोन गाम पहुँच जाइत अछि । ओना बूझल जाए तँ पछिला छिआलिस सालसँ हमसभ गामसँ नौकरी करबाक क्रममे बाहरे रहैत छी । कहिओ -काल गाहे -बगाहे गाम गेलहुँ । शुरुमे बेसी काल जाइत रही । जौं-जौं समय बितैत गेल ,गाम जएबाक क्रम मद्धिम पड़ैत गेल । मुदा कैटा बीतल घटनासभ अखनो मोनमे ओहिना घुमैत रहैत अछि जेना कि ओ एखने भेल हो । ओहने घटनासभमे सँ एकटा अछि गाममे हैजा होएब ।

हम सभ जखन इसकुलिआ विद्यार्थी रही ,बात तखनेक अछि । ओहि समयमे इलाजक तेहन सुविधा नहि रहैक । ब्लाकक तरफसँ बड़का सुइआ जँ दए देल गेल तँ बुझू जे एतत्तह भए गेल । कै बेर ओ सुइआसभ सामुदायिक केन्द्र वा कोनो तेहने सार्वजनिक स्थानसभमे छिड़आइत राखल रहैत छल । बेस नमगर होइत छल ओ सुई । जँ गाम-घरमे हैजा फैलि गेल तँ सरकारी लोकसभ गामक चक्कर लगबितथि आ सुइआ देबाक कार्यक्रम होइत। कहि नहि ओहिसँ की प्रभाव होइक?

पहिने गाम-घरमे हैजा होइते रहैत छल । ई बिमारी बहुत तेजीसँ सौंसे पसरि जाइत छल । एकर कोनो सटीक इलाज नहि रहैक। डाक्टरी सुविधा नदारद छल । बहुत भेल तँ लगपासक कोनो झोलाछाप डाक्टर बजाओल जाइत छलाह आ रोगीकेँ पानि छढ़ाओल जाइत छल । कहि नहि ओहि पानिमे की सभ रहैत छल? किओ-किओ ठीको भए जाइत छल । सभ भगवानेक भरोसे चलैत छल । हम जखन नेन्ना रही तँ हमरा गाम मे दू बेर हैजा बिमारी भेल छल । सौंसे गाममे हड़बिड़रो मचि गेल रहए । ओहि समयमे एमबीबीएस डाक्टर हमरा गाममे नहि छल । धकजरीसँ एकटा एलएमपी डाक्टर

बजाओल जाथि । रिक्सापर छढ़ल हाथमे छोटसन बैग आ देहपर लटकैत आलाक समग जखन ओ ककरो ओहिठाम अबितथि तँ लगपासक लोक इएह अनुमान करैत छल जे ककरो आब-तब हेतैक। तहिना जँ मधुबनी बाटाचौकपर सँ सड़ल,सुखाएल समतोला आनि कए जौं कोनो व्यक्तिकेँ देल गेलनि तँ लोक इएह बूझए जे अंतिमे हालत हेतनि । आ जँ मधुबनीक समतोलाक संगे धकजरीक आलाबला डाक्टर सेहो बजाओल गेलाह तँ बुझू जे जल्दिए टिकट कटत ।

धकजरीसँ एलएमपी डाक्टरक आएब तँ बड़का बात होइत छलैक । ओना छोट-मोट रोगक हेतु किंवा सुइआ देबाक हेतु गामक लगीचमे रहनिहार बंगाली डाक्टर अबैत छलाह । बंगाली डाक्टर लग एकटा साइकिल रहैत छलनि जे फटकिए-सँ टिपो-टिपो करैत रहैत छल । बंगाली जकाँ ओ मैथिलिओ बजैत छलाह । कहिओ काल हाटपर हम हुनका चीलमक सोटा लगबैत सेहो देखिअनि । जे होइक मुदा एकटा डाक्टरक रूपमे हुनका लग-पासमे लोक जनैत छल,मानैत छल ।

गामेक स्वर्गीय कुमारचंद्र डाक्टर सेहो बजाओल जाइत छलाह । हुनकर अड़ेर हाटपर दबाइक दोकान सेहो छलनि जे आब हुनकर पुत्र आ हमर इसकुलिआ संगी हरिहरजी चलबैत छथि । स्वर्गीय कुमारचंदकेँ गाममे बहुत इज्जति रहनि । लोक हुनका आदरपूर्वक व्यवहार करैत छल । कै बेर हमर माए दुखित भए जाइत छलीह तँ ओ अबैत छलाह । हुनकर देल दबाइसँ ओ ठीक भए जाइत छलीह। हमरा मोन पड़ैत अछि जे एकबेर हमर मोन खराप रहए । हुनकेसँ दबाइ लेने रही । कतबो कहलिअनि ओ दबाइक दाम नहि लेलाह । कहलाह-"

“अहाँ विद्यार्थी छी, मोनसँ पढ़ू, इएह हमर दाम भेल ।"

बाह! कतेक उदार सोचक लोक छलाह ओ!

ओ सभ गाममे रोगीसभकेँ सुइआ देथिन तँ लगैक जेना कतेक भारी इलाज भए गेलैक । सुइआकेँ स्पीरीटसँ धो देल जाइक आ एकहिटा सिरिंज कहि नहि कतेकगोटेकेँ घोपल जाइक। आबक समयमें तँ लोक हाकरोस करए लागैत । कहैत जे एहि तरहक सुइआसँ बहुत रास संक्रामक रोग भए जाएत । मुदा ताहि समयक बात रहैक। भए सकैत अछि जे लोकक खून बेसी शुद्ध रहल होइक आ की महज संयोगे छल । एहन सुइआ लगेलाक बाद किओ मरल वा दुखित भए गेल से कहिओ सुनबामे नहि आएल । तेँ ओ ठीके चलि रहल छल ।

गाममे पहिलबेर हैजा भेल रहए तँ बहुत छोट रही । कै गोटाकेँ पकड़लकैक । ओहिबेर हमर माए के सेहो हैजा भए गेल रहैक। बाबूजी कै बेर डाक्टर के बजाबथि । धकजरीबला डाक्टर पानि चढ़ओने रहथि । हमर बाबा(स्वर्गीय श्रीशरण मिश्र) बहुत दुखी रहथि । कै बेर आङन आबि कए माएक हाल-चाल लेथि। परिवारमे सभ बहुत चिंतित रहथि। रच्छ भेल जे ओ ठीक भए गेलीह । मुदा ओहिबेर सभसँ जे दुखद घटना भेल से छल एकटा अत्यंत सुंदर युवकक हैजासँ मृत्यु होएब । हुनकर पिताक ओ एकलौता पुत्र छलाह। देखबामे गौर वर्ण,नमगर-पोरगर आ आकर्षक व्यक्तित्व । हुनकर हालेमे विआह भेल छल, द्विरागमनो नहि भेल रहए। किछुदिन पूर्व गाममे नवाह भेल रहैक । नवाहक समाप्ति बेलाक बाद भगवानकेँ सौंसे गाओँ घुमाओल गेल रहैक । ताहि संगे आुगए-आगु ओहो रहथि। खिल-खिल हँसैत,गोर-नार हुनका हम देखने रही जे अखनहुँ ओहिना मोन पड़ैत अछि । दुर्भाग्यवश, ओ हैजाक चपेटमे आबि गेलाह । एहिसँ हुनकर पिता(जिनकासभ शर्माजी कहैत छल) सभदिन हेतु अनाथ भए गेलाह । तकरबाद हम कहिओ हुनका हँसैत नहि देखलिअनि ।

जखन कखनो हमरा ओ घटना मोन पड़ैत अछि,हम बहुत दुखी भए जाइत छी। शर्माजी विद्वान व्यक्ति छलाह । काशीसँ संस्कृत पढ़ने रहथि । बहुत विनम्र स्वभावक छलाह । सौंसे देबालपर लाल-लाल आखरमे संस्कृतक श्लोकसभ लिखने रहैत छलाह । गाममे ककरो दिन तकेबाक होइक तँ हुनका लग जाथि । हमहु कै बेर हुनका ओहिठाम दिन तकेबाक हेतु जाइत छलहुँ । भगवानक परम भक्त आ बहुत निष्ठावान लोक छलाह। तथापि एहन बज्र हुनकापर किएक खसल से नहि कही? एक हिसाबे ओ परिवार सभदिन हेतु शापित रहि गेल।

गाममे हैजाक दोसर घटना भेल छल सन्१९६८ई मे । हम ओहि समयमे आर.के.कालेज,मधुबनीमे प्री.-साइंसमे पढ़ैत रही । गामसँ लोकसभ मास करए सिमरिआ गेल रहथि । ओतहि हैजा फैल गेल रहए । हमर गामक एकटा महिलाकेँ हैजा पटि गेलनि । ओ ओही हालतमे गाम आबि गेलीह । तकरबाद तँ गाममे कै गोटे केँ हैजा भेलैक। नवका पोखरिपर बसल परिवारमे सँ एकगोटेकेँ सेहो हैजा भेलनि । सौंसे गाममे हरकंप मचि गेल छल । सभसँ दिक्कत एहिबात लए कए रहैक जे उचित इलाज गाममे उपलब्ध नहि रहैक । बहुत तँ पानि चढ़ा देल जाइक । लोकसभ अपना भागे जीबए,मरए । सरकारक दिससँ एतबे होइक जे सभकेँ नमका सुइआ लगा देल जाइक ।

ओहिबेरक हैजामे हमर पितिऔत भाए जीवछ भाइ(स्वर्गीय जीवनाथ मिश्र) के सेहो हैजा भए गेलनि। हमरा ओहिना मोन पढ़ैत अछि जे तीन-चारि बजे रातिएमे बच्चाकाका(स्वर्गीय उदयकान्त मिश्र) हमर बाबूजीकेँ उठओने रहथि । हमरि निन्न सेहो टुटि गेल रहए। छठि पावनिक खरना ओही दिन भेल रहए । बाबूजी तुरंते रिक्सासँ धकजरीबला डाक्टरकेँ बजा अनने रहथि । हुनका पानि चढ़ाओल

गेल। मुदा हुनका कोनो फैदा नहि होअए । ओ डाक्टर कै बेर अएलथि- गेलथि । पानि चढ़ा कए चलि जाथि । अंतमे दोसर दिन भोरे सेहो ओ आएल रहथि । मुदा थोड़बे कालक बाद हुनकर देहांत भए गेल । तकरबाद जे दृष्य भेल तकर वर्णन करब कठिन काज थिक। हमर पित्ती(बच्चा काका) आ काकीक हालत बेहाल रहए । हुनकर ओ एकमात्र संतान रहथि । बिआह भए गेल रहनि । तकर साल भरिक भीतरे ई दुर्घटना भए गेल रहए । छठिक भोरका अर्घ हेबाक रहैक। ओमहर कलममे गाछ काटल जाइत रहए । बड़की कलममे हुनका संस्कार देल गेल । वच्चाकाका अड़ि गेलखिन जे आगि ओएह देताह । सोचल जा सकैत अछि जे हुनकापर कतेक भारी बज्र खसल । एकटा परिवार सभदिनक हेतु नष्ट भए गेल ।

जीवछ भाइ छः हाथक बेस करगर जवान छलाह । दुखित होएबासँ एकसाँझ पहिने अखारापर व्यायाम केने छलाह । साँझमे हमहु नवका पोखरिपर हुना संगे रही । ओहिठाम सेहो एकगोटेकेँ हैजा भए गेल रहनि । भोर होइते ओ एना हेजाक चपेटमे पड़ि जेताह से नहि सोचि सकैत छलहुँ । मुदा सएह भेल । हमर काकी भरि राति भगवतीक लग आबि कए छाती पिटैत रहि गेलीह । किछु सुनबाइ नहि भेलनि । हुनकर एकमात्र संतान भोर होइते एहि दुनिआसँ चलि गेलथि । बहुत भारी अन्याय भेल । एहि घटनाक पचास साल भए गेल मुदा अखनहु हम ओहि बारेमे सोचैत छी तँ सोचिते रहि जाइत छी। कै बेर होइत अछि जे हुनका दरभंगा लए जेबाक चाहैत छल। ओतए साइत हुनकर जान बँचि जइतनि । कहि नहि से प्रयास किएक नहि भेल? भए सकैत अछि जे ओतेक जागरुकता नहि रहैक वा की भेलेक से नहि कहि मुदा परिणाम बहुत दुखद भेल ।

एहि घटनाक बाद हमर काका आ काकी दुनूगोटेक दुखक अंत नहि छल । सौंसे गाम भम्म पड़ि रहल छल । कतेको गोटे आबि-

आबि संवेदना प्रकट करैत रहलाह । हमरा अखनो काकाजीक ओ वेसुध पड़ल दृष्य मोन पड़ैत रहैत अछि । दुख आ संतापसँ ओ ततेक परेसान रहथि जे लोढ़ा लए मकानकेँ ढ़ाहए लागथि । सब गुम्म छल।

काकाजी अध्यात्मिक प्रवृतिक लोक छलाह। बादमे ओ कै बेर तीर्थाटन पड़ चलि गेलाह। क्रमशः भगवान मे लीन भए गेलाह । अपने दरबाजापर हनुमानजीक छोटसन मंदिर बनओलथि आ दिन-राति हुनके चाकरीमे लागल रहथि । एहिसँ हुनकर मोन क्रमशः शांत भेल। मुदा काकी तँ ओहिना विक्षिप्ते रहि गेलीह । ओकर बाद कहिओ फेर सामान्य नहि भए सकलीह । आब ओ सभ एहि दुनिआमे नहि छथि। आशा करैत छी,हुनकासभक आत्माकेँ भगवान अपन शरण देने हेथिन।

गाममे भेल हैजाक आक्रमण सभदिनक हेतु एकटा संताप छोड़ि गेल । दूटा परिवारसभ दिनक हेतु बरबाद भए गेल । दूटा नवविवाहिता आजीवन वैधव्यक दंश भोगैत रहलीह । हुनका लोकनिक समस्त परिवार हाकरोस करैत रहि गेल । मुदा ई तँ विधाताक डांग छल । के की करैत?सभ विवश छल । आइओ ओहि घटनासभक स्मरणसँ मोनमे आपार कष्ट भए जाइत अछि । तखन तँ जीवन छैक , कतहु किछु घटनासँ वशीभूत भए ठहरि नहि जाइत अछि ,चलिते रहैत अछि। कालचक्र आगा बढ़िते अछि,बढ़िते रहत । चिकित्सा विज्ञानक विकास ओ उपलव्धताक कारण आशा करैत छी जे आब एहन घटना नहि होएत।

मोहभंग

अप्रैल १९८७मे हम इलाहाबाद(आब प्रयागराज)सँ दिल्ली स्थानांतरित भए दिल्ली आबि गेल रही । दिल्लीमे हमर पदस्थापना पटेल भवनमे काबीना सचिबालएक अधीन जेआइसीमे भेल रहए। तेसर तल्लापर स्थित ओ कार्यालयमे गोपनीय काजसभ होइत छल। तेँ ओहिठाम सुरक्षाक बेसी तामझाम रहैत छल । ओकर किछु भाग तँ अपनो कर्मचारी सभसँ फराक राखल जाइत छल । ओहि कार्यालयमे एनिहार प्रत्येक बाहरी आदमीक बेस जाँच-पड़ताल होइत छल ,जेना ओकर नाओं,पता आदि एकटा बहीमे लिखए जाइक। एहिसभ कारणसँ सचिबालयक कर्मचारीसभ ओहि कार्यालयमे पदस्थापनासँ बँचबाक प्रयास करथि । मुदा हम कोना बचितहुँ । ओतेक बात बूझलो नहि रहए । आदेश भेटल आ ओही दिन जा कए पदभार ग्रहण कएल। अवर सचिव श्री ओमप्रकाश गुप्ताजी बहुत खुश भेल रहथि । ओ बहुत दिनसँ प्रयासमे छलाह जे ककरो पदस्थापना होइ,से भेल रहैक।

पहिने तँ हम प्रशासनमे गेलहुँ ,मुदा किछुए दिनमे उठापटक भेल। ओहिठाम काज केनिहार अधिकारी अपन व्योंत मे सफल भेलथि । हमरा ओतए जइतहि गुणा-भाग कए ओ हमर पदस्थापना अपना स्थानपर करबा देलथि आ ओ स्वयं गृह मंत्रालय पहुँच गेलाह। हमर जगह एहि तरहेँ मासे दिनक भीतर बदलि गेल। खैर इहो सही । जे भेल से भेल । हम ओतए पहुँचि ओहिठामक अधिकारी ब्रिगेडिअर पुरीसँ भेंट केलिअनि । पुरी साहेब बहुत मजेदार व्यक्ति छलाह । ओ गोरखा रेजिमेंटक रहथि । हुनका अंदरमे सेना, वायुसेना आ जलसेनाक कर्नल रैंकक अधिकारीसभ काज करैत छलाह । हमरा देखितहि ओ बैसबाक हेतु कहितथि । मुदा ओ फौजी अधिकारीसभ

ओहिना ठाढ़े रहितथि कारण हुनकासभकेँ बैसबाक हुकुम हमरा लगैत अछि ओ जानि-बुझि कए नहि देथि । भए सकैए ब्रिगेडिहर साहेब एहूमे किछु बात रहल होनि। हमरासँ ओ तीनू अधिकारी बहुत अदबसँ पेश आबथि। पुरी साहेब बहुत नफीस आदमी छलाह । हमरासँ हुनका सबदिन नीक संवंध रहलनि । करीब दूसाल हम हुनका अंदरमे काज केलहुँ। कहिओ ओ हमरा संगे बेअदबी नहि केलाह । ओ गोर-नार छः हाथक मजगूत कद-काठीक व्यक्ति छलाह । फौजक अनुशासन तँ जनित होएब । से हुनका मे छल । ओ चाहैत छलाह जे अधिकारीसभ फौजे जकाँ अनुशासित रहथि ,जे एहिठाम संभव नहि रहैक। एहि कारणसँ हुनका ओतए कै गोटेसंगे बेस मोसकिल भए जानि । एकबेर तँ ओ एकटा अधिकारीसँ तमसा कए कोर्ट मार्शल करबका गप्प करए लगलाह । बहुत मोसकिलसँ हुनका बुझाएल गेल जे ई असैन्य विभाग छैक,सेना नहि छैक आ एहिठाम ई संभव नहि अछि । ओ अधिकारी एहि समाचारकेँ सुनि सन्न रहथि। कहुना कए जोगाड़ लगाए अपन बदली गृह मंत्रालय करबा लेलाह । एहि तरहेँ हुनकर जान बाँचल ।

जेआइसीक पदस्थापना हमरा लेल बहुत रमनगर छल । ओहिठाम स्वर्गीय भागवत झा आज़ादक पुत्र श्री यशोवर्धन आजाद (आइ.पी.एस.) सेहो कार्यरत छलाह। क्रमशः हुनकासँ परिचय बढ़ैत गेल। ओ कैटा काजमे बहुत मदति करथि । ओहि कार्यालयमे काज करितहि हम मधुबनीमे मकान बनेबाक हेतु गृह निर्माण ऋण हेतु आवेदन देलिऐक जे आजादजीक सहयोगसँ तुरंत मंजूर भए गेल । श्री ओम प्रकाश गुप्ता,अवर सचिवजी हमर मधुबनीमे घर बनेबाक प्रस्तावक समर्थक नहि रहथि । हुनकर विचार रहनि जे हमरा दिल्लिएमे फ्लैट लेबाक चाही। ताहि हेतु ओ यमुनापार अपन सोसाइटीमे एकटा फ्लैटक जोगारो करबाक हेतु तैयार रहथि । मुदा

हम हुनकर बात नहि मानि अपन निर्णयपर अडिग रहि गेलहुँ । ओ कहथि जे बहुत मोन अछि तँ जमीन लए कए छोड़ि दिऔक। हम हुनका श्लोक सुनेलिअनि:

अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

हमर मित्र ओ सहकर्मी श्री लाथर साहेब सेहो कहथि जे एहीठाम फ्लैट लए लिअ आ जँ मधुबनीएमे रहबाक होएत तँ बादमे एकरा बेचि कए कै गुणा पाई भेटत । आब सोचैत छी तँ लगैत अछि जे ओसभ सही रहथि । हमर शुभचिंतक तँ रहबे करथि। मुदा आब ताहि बातसभक घमर्थन केलासँ की लाभ होएत?

का बरखा जब कृषि सुखाने।
समय बीति पुनि का पछताने ।।

जे बात जखन हेबाक तखने होइत छैक ,सेहो एकटा कटु सत्य थिक । फेर जीवनमे सभक सोच,परिस्थिति आओर रुचि फराक-फराक होइत अछि । जे किछु,हम अपन निर्णय पर अड़ल रही जे मधुबनीमे पहिल घर बनाएब । ताहि पाछू हमर ई सोचब रहए जे गाम लगमे घरकेँ प्राथमिकता देबाक चाही । तकरबाद चाहे जतए-जतए घर बनाउ । जेआइसीमे ओहि समय गृह निर्माणक ऋण आसानीसँ भेटि गेल । मधुबनीमे हमर ससुर(स्वर्गीय गणेश झा) रहैत छलाह । हम हुनका आग्रह केलिअनि जे घर बनबए जोगर कोनो जमीन जँ नजरि पर आबनि तँ हमरा सूचित करथि। जे बात छैक,ओ बहुत तत्परतासँ एहि काजक निर्वाह केलथि आ थोड़बे दिनक बाद हमरा पत्र लिखलनि जे हुनका एकटा उपयुक्त जमीनक जानकारी प्राप्त भेलनि अछि । हम मधुबनी जा कए ओहि जमीनकेँ देखलिऐक । मधुबनी स्टेडिअमक लगीचेमे प्लाट काटि कए बिका रहल छलैक । ओहि समयमे सौंसे इलाका खाली रहैक। कतहु किछु नहि ।

सवा कट्ठा जमीनक दाम छलैक पचीस हजार । हमरा लगमे तँ एकहुटा टाका नहि छल । बेनाक रूपमे पाँच हजार टाका देबाक छलैक जे हम ससुरजीसँ पैंच लेलहुँ । तकर थोड़बे दिनक बाद हमरा गृह निर्माण ऋणक पहिल किस्त भेटल आ हम ससुरजीक पाँच हजार आपस कए देलिअनि संगहि जमीनक बाँकी दाम सेहो ओकर मालिककेँ दए देलिऐक । किछुए दिनमे ओहि जमीनक निवंधन भए गेल । निवंधन होइत तकर कागज सरकार लग जमा भेल से ताबे जमा रहल जा धरि सूद समेत सभटा मूर कर्ज सधा नहि देलहुँ । एहि प्रकृयामे करीब-करीब पचीस साल लागल। एकटा लाभ ई भेल जे कागज सुरक्षित सरकारक ओहिठाम राखल रहल । हमरा तकरो चिंता नहि करए पड़ल । मुदा कै गोटे कहथि जे कै गोटाकेँ कागज एनामे हरा जाइत छैक आ बाद मे बहुत मोसकिलमे पड़ि जाइत छथि ।

जमीन कीनि तँ लेलहुँ मुदा ओ तँ खेत छलैक । सभसँ पहिने ओकरा भरेबाक छलैक । फेर विचार भेलैक जे पहिने नीचासँ मकान बनाएब शुरु कएल जाए आ जखन मकान ऊपर अएतैक तँ माटि भराएब सुगम रहत । सएह कएल गेल । एहि तरहें बहुत गहींरसँ मकानक नीव पड़ल । जतेक मकान जमीनक नीचामे धँसल अछि ताहिमे आसानीसँ एक तल मकान बनि जाइत वा तहखानामे चलि जाइत । मुदा एहिसँ मकान तँ मजगूत भेवे कएल। मकानक काज शुरु करबासँ पहिने भूमिपूजन कएल गेल जाहि हेतु हमरा गामक प्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय परमानंद झा आएल रहथि। हमर सासुक हाथे ओहि मकानक नीव देबाक बिध पुरा कएल गेल। हमसभ सपत्नीक ओहिठाम रही । हमर ससुर सेहो उपस्थित रहथि।

मकान बला जमीनमे तँ तखनो धरि खेती होइत छल । लगपासक गामक किओ ओहिमे रब्बी छिटने रहैक। ओ बहुत घओना करए लागल । कहुना कए ओकरा किछु टका दए मनाओल गेल ।

काज प्रारंभ भेल। नित्यप्रति किछु गोटे ओहि बनैत मकानकेँ देखबाक हेतु आबथि । देखबाक उत्सुकता ओहू द्वारे बेसी रहनि जे ओ स्थान एकदम बिरान छलैक । दूर- दूर धरि कतहु किछु नहि छल । कनीके फटकी मुर्दासभ फेकल रहैत छल । हमर मकानक जगहक सामनेमे सेहो कहिओ काल मुर्दा जराओल जाइत छल । कनी हटि कए कोनपर पोखरीक भीरपर सेहो मुर्दा जराओल जाइत छल । कहक माने जे लोककेँ लगैक जे एहन जगहपर मकान किएक बना रहल छथि ? कै गोटे गाहे-बगाहे पुछबो करथि । स्थान तँ ओ भयाबह रहबे करैक मुदा हमरा विश्वास रहए जे जखन हमर ससुरजीकेँ ई स्थान नीक लगलनि अछि तँ ई निश्चय किछु विशेष होएत । हुनकामे निर्णय लेबाक विलक्षण दैबीगुण रहनि जे हुनकर व्यक्तिगत ओ पारिवारिक जीवनमे सफलताक मूलमंत्र छल । ओना हमरो ओ जगह बहुत आकर्षित केलक ।

आब तीस सालक बाद जौँ ओहि मोहल्लामे जाएब तँ लागत जे मधुबनीक सभसँ नीक स्थानपर आबि गेल छी । जतए दिने- देखार मुर्दा फेकल रहैत छल ताहिठाम आब हनुमानजी आ भगवान शिवक दिव्य मंदिर बनि गेल अछि । सौंसे मोहल्ला लोकसँ गज-गज करैत अछि । लगीचेमे मधुबनीक सभसँ नीक पब्लिक इसकूल अछि आ कहि ने की-की बनि गेल अछि? दुपहरिआमे जखन इसकूलमे छुट्टी होइत अछि तँ ओहिठाम ठाढ़ होएब पराभव। तरह-तरहक सबारी सँ विद्यार्थी सभ हो-हल्ला करैत अपन-अपन घर आपस जाइत रहैत छथि। घरे बैसल मेलाक दृष्य देखाइत रहैत अछि ।

माङनिक योगदानक चर्चा केने बिना एहि मकानक खिस्सा पूरा नहि भए सकैत आछि । ओहि सुन्न स्थानमे बनैत मकानक रखबारी करबाक हेतु माङनि गामसँ आएल रहथि । हुनकर कै पुस्त हमरा ओहिठाम काज करैत रहल । हमर परिवारसँ ओसभ सबदिन

जुड़ल छलाह। हम नेन्नेसँ हुनका देखि रहल छलिअनि । बादमे बूढ़ भेलापर ओ बाबाजी भए गेलाह आ जटा बढ़ा कए तीर्थसभ घुमैत रहैत छलाह । ओहिमे जँ किछु आमदनी भए गेल तँ गाओँ जा कए अपन पत्नी(निकासीबाली)कैं दए दैत छलाह । फेर आपस तीर्थाटनमे लागि जाथि । दू बेर संगी महात्मासभक संगे वृंदावन जेबाक क्रममे ओ माएक समाद लए कए सरोजिनीनगर(दिल्ली)क हमर डेरापर आएल रहथि । सोचल जा सकैत अछि जे हुनका हमर परिवारक प्रति कतेक सिनेह रहनि ।

माङनिक बाबाजी हेबासँ पहिनेक बात छैक । मधुबनी मकानमे ओएह रखबार रहथि । एकटा नान्हिटा खोपड़ी बनाओल गेल रहैक जाहिमे दिन-राति ओ रहथि । ओतहि भानस-भात बनाबथि । ओहिबाटे अबैत जाइत लोकसभ हुनकर दोस्त बनि गेल छल । कै गोटे हुनकासंगे चीलम पीबाक आनंद सेहो उठाबथि। जे रहैक मुदा ओहि मकानक निर्माणमे माङनिक जबरदस्त योगदान छल , नहि तँ ओहि सुन्नस्थानमे ई काज आगा बढ़िए नहि सकैत छल ।

मकान मधुबनीमे बनैक आ हम अपने दिल्लीमे काज करी। एहि कारणसँ ओहिठाम काज करेबामे बहुत परेसानी होइत छलैक । जखन-जखन छुट्टी भेल तँ काजकैं आगा कएल जाए । कै बेर तँ हमर अनुपस्थिति मे हमर सासुरक लोकसभ काज करबैत छलाह । हम जहिआ कहिओ मधुबनी जाइ,मकानक काज लगले रहैत छल। एकबेर हमर एकटा मित्र विनोदमे कहलाह –

“हमसभ एकबेर मकान बनओलहुँ आ जिनगी भरि रहि रहल छी आ अहाँकैं जखन देखैत छी एहि मकानमे काजे करबैत रहैत छी ।"

एहि मकानक निर्माणसँ लए कए अंतधरि हमर मित्र श्रीनारायणजीक सेहो बहुत योगदान अछि । काज करबाक हेतु मिस्त्री,पेंटरसँ लए कए सामानसभ कीनबामे ओ सदति मदति करैत

रहलाह । टाका आ समय दुनूक अभाव रहबाक कारणसँ कै किस्तमे काज भेल । मकानक लागत ततेक बढ़ि गेल जे सरकारक ऋणक अतिरिक्त एचडीएफसीसँ सेहो ऋण लेबए पड़ल । ऋणसभक भूगतानक मासिक किस्त बहुत भए गेलैक । खर्चाक पुर्वानुमान फेल भए गेल। एहि कारणसँ बहुत कष्टक स्थिति भए गेल । मकानमे खिड़की,केबार लागि गेल रहैक । मुदा ग्रिल नहि लागल रहैक। देबालपर सीमेंट नहि लागल रहैक । तखने ओकरा बिहार सरकारक माप- तौल विभागकेँ किरायापर देबए पड़ल। मकान किराया तँ लागि गेल मुदा किराया देबे नहि करैक । सालक-साल बिना किराया देने ओ सभ रहैत रहलाह। किराया भूगतानक हेतु किराया निर्धारण एसडीओ मधुबनी द्वारा होएब जरूरी छल । ओ किराया निर्धारण केँ सालों लटकेने रहलाह । हम एहि विषयमे श्री किशोर कुणालजीकेँ कहलिअनि । हुनकर हस्तक्षेपसँ किराया निर्धारण भेल मुदा किराया अपेक्षाकृत कम तय कए देलक । १५०० रुपया मासिक किराया देबाक गप्प ओ सभ गछने रहथि मुदा ओकर किराया निर्धारण ९७० रुपया मात्र कए देल गेल। संभवतः एसडीओ मधुबनी कुणालजीक हस्तक्षेपसँ तमसा गेलाह । किराया निर्धारणक बादो बहुत दिन धरि कियायाक भूगतान नहि भेल । तखन तंग भए हम ओकरा खाली करबाक हेतु लिखए लगलिऐक। बँकिऔता किरायाक भूगतानक हेतु सेहो वारंबार लिखैत रहलिऐक।

लगभग साढ़ेतीन साल हमर मधुबनीक मकान माप- तौल विभागकेँ किरायापर रहल । ओहि बीचमे बहुत कोशिश केलहुँ जे किराया दिअए मुदा ओ सभ टस सँ मस नहि होइत छल । बुझा गेल जे सोझ आङुरे घी नहि निकलए बला अछि । एमहर मकानक ऋणक किस्त कटए आ किराया भेटबे नहि करए । एहिबातसँ बहुत परेसानी भए गेल रहए । तखन की कएल जाए ? गृह मंत्रालयमे काज करैत

बसाक साहेब आइएएस (अपर सचिव रहथि)सँ संपर्क भेल। ओ बादमे बिहार सरकारमे मुख्य सचिव भेलाह । हुनका कैटा पत्र लिखलिअनि । ओ ओही पत्रपर आदेश देलखिन जे मास दिनक भीतरे मकानकेँ खाली कए देल जाए आ बाँकी किराया सेहो दए देल जाए । तथापि मकान खाली नहि होअए,ने किराया भेटए ।

मधुबनीमे कलक्टर रहल छलाह बुर्जिआ साहेब । ओ बदली भए कए गृह मंत्रालयमे उप-सचिवक पद पर आएल रहथि। एक बेर रविदिन कए हुनकासँ किछु काजेक प्रसंगे भेंट भेल । ओ हमरा चिन्हए लागल रहथि । हुनका हम अपन मकानक समस्या कहलिअनि । जे बात छैक, ओ तुरंत मधुबनीक कलक्टरक नामे चिठ्ठी देलथि आ हुनका फोनो केलखिन। ऊपरसँ मुख्य सचिवक आदेश रहबे करैक । एतेक प्रयासक बाद माप-तौल विभागबला सभ दोसर मकान ताकए लगलाह । मुदा हुनकासभकेँ किओ मकान किरायापर देबे नहि करए। बात जस-के-तस रहि गेल । हम फेर मधुबनीक कलक्टरसँ भेंट केलिअनि । ओ कहलाह जे हम तँ हुनकासभकेँ वैकल्पिक मकानो दिआ देलिअनि तखन की दिक्कति छैक? भेलैक जे वैकल्पिक मकान सरकारी विभागक छलैक आ ओहोसभ माप-तौल विभागकेँ कोनो बहाना बना कए मना कए देलकैक । ई बात माप-तौल निरीक्षक कलक्टर साहेबकेँ कहलखिन। मुदा कलक्टरसाहेब अड़ि गेलाह । ओ माप-तौलक स्थानीय निरीक्षककेँ हुकुम देलाह जे चौबीस घंटामे हमर मकान खाली हेबाक चाही । सएह भेल । दू दिनक भीतरे हमर मकान खाली कए माप-तौल विभाग भच्छी गाओंमे चलि गेल । जाइत-जाइत निरीक्षकजी आग्रह केलाह जे हुनकर लगाओल गाछसभक रक्षा कएल जाएत । ओ भगवानकेँ धूप -आरती केलाह आ हमरा मकानक कुंजी सुंझा देलाह । मास दिनक अंदरे हमरा दिल्ली स्थित सरकारी आवासक पतासँ बाँकी किरायाक बैंक ड्राफ्ट सेहो भेटि गेल । एहि

तरहें हम बड़का संकटसँ मुक्त भेलहुँ । नहि तँ किछुदिनसँ सप्ताहांत अवकाश होइते मधुबनीक मकानक चिंता होबए लागैत छल आ समाधान इएह होइत जे सोमदिन कार्यालय अबिते ककरो-ने-ककरो फेर एकटा चिठ्ठि लिखतहुँ । एहि काजमे हमर आप्त सचिव श्री प्रकाश चंद्र पाण्डेयजी बहुत मदति करैत रहलाह । तुरंत खूब बढ़िआ चिठ्ठी टंकित कए लए आनथि। ताहिसँ तात्कालिक मानसिक शांति भए जाइत छल । आओर जे होइ,नहि होइ ।

बहुतदिन धरि ओ मकान मधुबनीमे माप-तौलबला आफिसक नाओँसँ जानल जाइत रहल। मकान खाली तँ भए गेल मुदा तकरबाद करीब अढ़ाए साल धरि खालिए रहि गेल, कारण मकानमे बहुतरास काज बाँकी रहैक। तथापि मोन चैन लगैत छल। फेर किरायेदार सँ बहुत मोसकिलसँ जान छुटल छल। मकानक कुंजीसभ हम अपन मित्र लालबच्चा(फ्रोफेसर विष्णुकान्त मिश्र)केँ दए दिल्ली आपस भए गेल रही । तकरबाद कै साल धरि ओ मकान बंद पड़ल रहल ।

एकदिन हमरा भैया(श्री शशिभूषण मिश्र)फोन केलनि- “अहाँक मकानमे पाछु दिसक छिटकनी खुजल बुझाएल ।”ई समाचार सुनि बहुत चिंता भेल । तकर बादो तुरंत मधुबनी जेबाक परिस्थिति नहि रहैक । करीब छ मासक बाद जखन हम ओतए गेलहुँ तँ सौंसे मकानमे विद्यार्थीसभ भरल छल । ओ सभ कोनो परीक्षा देबाक हेतु राजस्थानसँ आएल छलाह आ किओ हुनकासभकेँ टाका लए मकानमे राखि देने रहनि । मकानक एक भागमे पड़ोसमे बनि रहल मकानक समानसभ राखल छल । बाहरसँ ताला ओहिना लटकि रहल छल । कोनो बाहरी व्यक्तिकेँ पता नहि चलि सकैत छलैक जे मकानमे एतेक धमाचौकरी भए रहल अछि । हालत देखि कए गुम्म पड़ि गेलहुँ । विद्यार्थीसभकेँ धमकलिऐक तँ ओ सभ ओहीदिन साँझ

धरि झोड़ा-झपटा उठओलक आ चलि गेल । आब रहि गेल पड़ोसमे बनैत मकानक समानसभ । हम संवंधित व्यक्तिसँ भेंट करए चाहलहुँ मुदा हुनका बदलामे हुनकर ससुर अएलाह। ओ ओकालत कए रहल छलाह। हम हुनका कहलिअनि जे जँ किओ अहाँक मकानमे एना बिना कोनो जानकारीकेँ रहए लागत तँ केहन लागत? कहलाह -"बात तँ अहाँ वाजिब कए रहल छी । मुदा जखन समानसभ राखल छैक तँ ओकरा खाली करबामे किछु समय तँ लगतैक ।"

"कतेक समय चाही?"-हम पुछलिअनि ।

"दू दिन ।"

"एवमस्तु ।"

ओ आदमी जबानक पक्का निकललाह आ दूदिनक भीतरमे सभटा चीजवस्तु निकालि लेलथि । एकबेर फेर मकान खाली तँ भए गेल मुदा ओकर भविष्य लए कए बहुत चिंता होबए लागल ।

किछु दिनक बाद टाकाक जोगार कए मकानमे छूटल जरूरी काजसभ करओलहुँ,जेना खिड़कीसभमे ग्रील लागल,अंदरक देबालसभमे सीमेंट लागल । नीचा सेहो सिमटी लागल । कहक माने जे मकान आब कोनो व्यक्तिकेँ रहए जोगर भए गेल छल । मुदा बिजली तँ अखनो नहि लागल छल । बिजली आफिस गेलहुँ । ओहिठाम एकटा झाजी ओभरसियर रहथि । हम अपन परिचय देलिअनि । गप्प-सप्पमे हमर साढ़ूक सेहो चर्च भेल। ओ बिजली विभागमे अभियंता रहथि । ओभरसियार साहेब हुनकर बहुत प्रशंसा करए लगलाह । कहथि जे ओ तँ देवता छथि। हम हुनका अंदरमे काज केने छी । हमर एहिबातसँ बहुत प्रशन्न रही जे चलू एकटा परिचित व्यक्ति भेटि गेलाह आ बिजलीक काज आसानीसँ भए जाएत । फेर ओ कहलाह जे बिजली आफिस चलि जाउ आ जरूरी फीस जमा कए दिऔ । दू सँ तीन दिनमे काज भए जाएत । तुरंत बिजली आफिस जा

फीस जमा कए देलिऐक । ओतहि एकटा लाइनमेन गोलिआबए लागल । हम ओभरसियर साहेब दए कहलिऐक तँ ओ कहैत अछि- "हुनका चक्करमे रहब तँ घुमिते रहि जाएब ।" बात ओ सही कहलक। हम हुनका तकैत रहि गेलहुँ । हमर छुट्टी खतम होबएपर छल । मुदा हुनकर कोनो अता-पता नहि छल । किओ कहलक जे ओ कोनो संवंधीक इलाज करेबाक हेतु दरभंगा गेल छथि , कहिआ अओताह से कोनो ठेकान नहि । हारिकए ओही लाइनमैनकेँ पकड़लहुँ । ओएह जेना-तेना काज केलक । ई सभ होइत-होइत हमर छुट्टी समाप्त भए गेल छल। हम आपस दिल्ली चलि अएलहुँ । मकानमे ताला मारि देलिऐक । हम अपन मित्र श्रीनारायणजीकेँ भार देलिअनि जे मकानक हेतु कोनो नीक किरायेदारक ध्यान करथि । से ओ केलाह। थोड़े दिनक बाद हमर ज्येष्ठपुत्र भास्कर मात्रिक(पण्डौल डीह टोल) गेलथि। हुनके सामनेमे श्रीनारायणजीक सहयोगसँ मकान किराया लागि गेल। किरायेदार छलाह-मधुबनीसँ लगे डुमरी गामक श्री नंदलाल मिश्रजी । ओ ओहि समयमे मधुबनीमे सरकारी विभागमे कार्यरत रहथि ।

श्री नंदलाल मिश्रजी किरायेदार कम समांग बेसी रहथि। ओहि मकानक लगपासमे बिरान छलैक । रहि-रहि कए कतहु-ने कतहु चोरीक घटना होइत रहैत छलैक । तथापि ओ अड़ल रहलाह। क्रमशः ओहिठाम आओर मकानसभ बनैत रहल । जतए मुर्दा रहैत छल ताहिठाम हनुमानजीक भव्य मंदिर बनि गेल । श्री नंदलाल मिश्रजीक कै बेर बदली होइत रहलनि । मुदा ओ हमर किरायेदार बनल रहलाह। हुनका मकान नीक लागनि आ हमरासभकेँ ओ विश्वस्त लोक लागथि। अपने रही नहि तखन तँ एहन लोकक मकानमे रहब एक हिसाबे मदतिए छल । ऊपरसँ किरायो ओ दैते छलाहे । कै बेर किराया बकिऔता भए जाइक । मुदा ओ पाइ-पाइक जोड़ि कए किराया दए देथि । एहि मामलामे ओ बहुत स्वच्छ छलाह । किरायाक

अलावा बिजलीक बिलक भूगतान सेहो हुनके करबाक रहनि । ओ कोनो-ने-कोनो दिक्कतिसँ से नहि कए पाबथि । प्रायः बिल अएबे नहि करैक । बादमे तकर कारणसँ हुनका नाहकमे बेसी बिल देबए पड़लनि।

श्री नंदलाल मिश्रजी हमर मकानमे तेरह वर्ख किरायदार रहलाह । सेवासँ निवृत्त भए गेलाह । तकरबादो किछु दिन ओ रहलाह। एहि बीचमे ओ अपन गाओंमे बेस भव्य मकान बनओलथि आ हमरा अनुपस्थितिएमे हमर सहमतिसँ ओ मकान खाली कए चलि गेलाह । हम श्रीनारायणजीकें मकानमे ताला लगाबक भार देने रहिअनि जे ओ बहुत तत्परतासँ निर्वाह केलाह । आठटा ताला ओहि मकानमे विभिन्न कोठरीमे लगाओल गेल। मकान खाली छल तें ओहो सावधानी पूर्वक से काज केलाह । सालभरि मकान खालिए रहि गेल। ओहि बीच किओ सभटा ताला तोड़ि देलक । मकानमे तँ किछु रहैक नहि ,मात्र एकटा बक्सामे सीड़क आ एकाधटा ओछाओन रहैक,से लेने चलि गेल । बक्सा ठामहि छोड़ि देलक । जखन हम ओतए गेलहुँ तँ बाहरसँ सभकिछु ठीके बुझाए । गेटपर हाथ दैते ओ खुजए लागल। केबारसभपर हाथ दैते केबारसभ खुजए लागल । केबारसभक दशा तँ देखएबला छल । ककरो कुंडी टुटल छल तँ ककरो किछु । पूरा मकान कहि नहि कतेको दिनसँ एहिना खाली आ खुजल छल ।

मकानक हालत देखि कए माथपर हाथ धए बैसि गेलहुँ । इएह थिक हमर जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी? मोने-मोन अपने पर हँसी लगैत छल। भला एहिमे अनकर की दोख? मकानक रक्षाक दायित्व हमर छल । खैर! जे भेल ,से भेल । आब आगा बढ़ल जाए ,से सोचि मकानक रंग-रोशनक काज शुरु कएल । रातिक चौकीदारी करबाक हेतु आलम आ ओकर एकटा सहकर्मीकें रखलहुँ। प्रसंगवश आलमक नाओं अबितहि एकटा एहन मेहनतकश ओ

इमान्दार व्यक्तिक छवि मोनमे चमकि जाइत अछि जकरापर शत-प्रतिशत विश्वास कएल जा सकैत छल ,जे एकबेर काज शुरु केलक तँ बिना कोनो विश्रामकेँ दिनभरि लागल रहैत छल। एहन संस्कारी ओ कर्मठ कार्यकर्ता डिबिआ लए कए ताकब तथापि साइते भेटए । मकानमे कोन रंग कतए पड़ए आ कोन-कोन कंपनीक रंगक समान लागए सेहो हमर संगी श्रीनारायणजी मार्गदर्शन करथि । हालेमे ओ अपनो मकानक रंग-रोशन केने छलाह । ओएह रंगसभ मोटा-मोटी हम अपनो मकानक हेतु चुनलहुँ ।

मकान रंगा-ढंगा कए तैयार छल । आब की होएत? रहबाक तँ छलहे नहि तखन तँ किरायेदार चाही । संयोगसँ एकटा किरायदोर भेटि गेलाह । किराया कहब तँ हँसी लागि जाएत । जतेक रंग-रोशनमे खर्च भेल से तीनो सालक किरायामे आपस नहि हेबाक छल । मुदा मकान खाली रखबाक फल तँ देखिए लेने रही,तेँ किरायापर दए देलिऐक । दूसाल बाद ओ सेवानिवृत्त भए अपन गाम चलि गेलाह आ मकान एकबेर फेर खाली भए गेल । एकसाल धरि मकान खालिए रहल । आब हमरा सेवा निवृत्त हेबाक समय लगीच छल तेँ सोचलहुँ जे अखन किरायापर नहि दिऐक ।

हम सेवा निवृत्त भेलहुं । रहब कतए? मधुबनी की दिल्ली? परिवारमे सभक निर्णय दिल्लीक पक्षमे भेल। तथापि हम मधुबनीक मकानमे बाँचल लकड़ीक काज सभ करओलहुँ । पानिक टंकी बैसेलहुँ । दोबारा पोताइ करओलहुं । मोनमे ई रहए जे अबैत -जाइत रहब । मधुबनीसँ दिल्ली आपस हेबाक अंतिम दिन एकटा किरायेदार भेटि गेलाह । सभकेँ ओ पसिन भेलखिन । बूढ़ रहथि । मधुबनीमे सरकारी काज करैत रहथि । आखिर फेर मकान किरायापर लागि गेल। हम निश्चिंत भए दिल्ली आबि गेलहुँ।

ओहीबीच हमर माएक जाँघक हड्डी टुटि गेलासँ हुनकर मोन खराप रहए लगलनि । कै बेर गाम,दरभंगा आबा जाही होइत रहल । मकान किरायापर रहैक । किराया समयपर पठा देल करथि । दू सालक बाद ओ सेवानिवृत्त भए गेलाह । तकरबादो ओ मधुबनीमे रहए चाहैत छलाह । हमरा आब मकान बेसीदिन किरायापर राखब ठीक नहि बुझाइत छल । हुनका कै बेर कहलिअनि जे मकान खाली करथि । अगस्त २०१६मे ओ मकान खाली कए दोसर मकानमे किरायापर चलि गेलाह। हमरा फोन केलाह । हम कहलिअनि जे कुंजी अपने लग रखने रहू। मकान खाली भए गेल,से हम मानि आगूक किराया नहि लेब । फेर थोड़े दिनक बाद हम मधुबनी गेलहुँ । मकानक कुंजी हुनकासँ लेलहुँ । मकानकेँ साफ करओलहुँ । एहीक्रममे हम श्रीनारायणजी लग चर्च केलिऐक जे हम एहि मकानकेँ बेचि देबए चाहैत छी कारण कतेक दिनधरि किरायेदारसभसँ निपटैत रहब । अपनेसभ जखन दिल्लिएमे रहब तखन एकर रख-रखाव क्रमशः बेसी मोसकिल होइत जाए। संयोग एहन भेलैक जे ई बात केना-ने-केना लगपासमे रहनिहार लोकसभकेँ पता लगलैक ।

हम एहिबेर मधुबनी मकान बेचबाक उद्येश्यसँ नहि गेल रही। किरायेदार मकान खाली कए देने रहथि। मकानक कुंजी हुनकासँ लेबाक रहए आ भए सकैत तँ किराया लगा दितिऐक । गाममे माए दुखित छलीह । हुनकोसँ भेंट करबाक छलहे । तैं मधुबनी पहुँचलहुँ। दिनमे गाम जाइ आ रातिमे अपन मधुबनी डेरापर आबि जाइ । ओहिदिन भोरे हम तैयार भए गाम जेबाक क्रममे रही कि ओही मोहल्लामे रहनिहार एकटा युवक एकटा अधबयसूक संगे अएलाह-

"मकान बेचबाक सोचि रहल छी की?"-ओ पुछैत छथि।

"जँ नीक ग्राहक भेटत तँ सोचि सकैत छी ।"

"हमसभ साँझमे गप्प करए आएब । ताबे बाबू गामसँ आबि जेताह ।"

"ठीक छैक।"

एतेक गप्प कए ओ चल गेलाह । हमहु गाम चलि गेलहुँ । साँझमे गामसँ आपस अएलहुँ । अन्हार भए गेल रहैक । हम विश्राम करबाक हेतु बैसले रही कि चार-पाँच गोटेके लेने ओ युवक फेर अएलाह । गामघरक घटकैतीबला दृष्य रहैक ।" कतेक दाम लेबैक । एतेक दाम तँ बेसी भए जेतैक ।" तरह-तरहक गप्प होइत रहल। फेर ओ युवक बजैत छथि -

"काल्हि आगाक गप्प करब।"

गप्प-सप्पक क्रममे श्री नंदलाल मिश्रजीक चर्च भए गेल रहैक । ओ भोरे-भोर हुनका गामसँ पकड़ने अएलाह । ई हुनकर प्रभाव कहू वा संयोग कहू तकर दू घंटाक अंदरे मकान बिका गेल। तुरंत किछु बैना सेहो देलथि । एहिठाम ई कहब जे सभकिछु अचानक भेलैक । ओना हमरा मोनमे कतहु-ने-कतहु ई बात रहए मुदा एना तुरंत भए जेतेक से नहि सोचने रहिऐक । हम तँ मकानक मूल दस्तावेजो नहि लए गेल रही । संयोगसँ ओकरसभक फोटोकाँपी रखने रही । ओहीसँ काज चलि गेल । मकान कीननाहर लोकनिक महानता कहबाक चाही जे ओ हमरापर एतेक विश्वास केलाह । तीन दिनक भीतरे बेचबाक सभटा प्रकृया पूर्ण भए गेल। सभ किछु ततेक जलदी भए गेलैक जे श्रीनारायणजीकेँ एहि घटनाक किछु जानकारी नहि दए सकलिअनि ।

जीवनमे कतेको एहन घटनासभ भेल जे अपना-आपमे एकटा शिक्षा बनि गेल । मधुबनीमे मकान बनाएब सेहो सएह भेल। जीवनमे भावना आ यथार्थमे संतुलन जरूरी थिक । हमरा लगैत अछि जे मधुबनीमे मकान बनाएब एकटा भावात्मक निर्णय छल जे यथार्थक

धरातलपर टिक नहि सकल । जँ आर्थिक दृष्टिए सोचबैक तैओ ओहि समयमे दिल्लीमे ओतबे टाका लगा देलासँ मधुबनीक तुलानमे दोबर लाभ जरुर दैत । मुदा बात फेर ओतहि अटकि जाइत अछि । कतबो छटपटाएब जतबे हेबाक आ जखने हेबाक तखने होएत । यद्यपि हम मधुबनीक मकानमे नाममात्रे रहि सकलहुँ मुदा हमरा एहिबातसँ बहुत आनंद होइत रहल जे मधुबनीमे ,गामक लगमे ,हमर मकान अछि । मुदा ततबेटा,ओहिसँ कोनो आओर सुख नहि भेल,अपितु झंझटे होइत रहल । आइ ई मरम्मति भए रहल अछि तँ काल्हि किछु आओर भए रहल अछि । ई प्रकृया सालों चलैत रहल। हालात एहन भेल जे गाम आ गाम लगक मधुबनीक घर दुनूसँ हमर मोह टुटि गेल । हमरा लगैत अछि जे अंततोगत्वा सही निर्णय भेल जाहिमे हमर श्रीमतीजीक बहुत योगदान अछि ।

सन्१९९०मे मकान बनलाक बाद लगभग एक्कैस साल ओ किराया पर रहल । पाँच साल अहिना खालिए रहल । छब्बीस सालमे मोसकिलसँ छब्बीसो दिन हम ओहिमे रहि सकलहुँ कि नहि। ताहि हेतु एतेक झंझट हम सालों सहलहुँ । शुरुएमे कैटा मित्र लोकनिक बात जौँ मानि लितहुँ तँ भए सकैत अछि जे साइत दोसरे परिणाम होइत मुदा भावी प्रवल होइत अछि,से बात मानहि पड़त। सभबातक अनुमान नहि लगाओल जा सकैत अछि। सभ किछु ओहिना नहि घटित भए सकैत अछि , जेना हम-अहाँ चाहैत छी । ठीके कहल गेल अछि-

"सुनहु भरत भावी प्रवल, विहुसि कहे मुनिनाथ ।
हानि-लाभ जीवन मरण यश अपयश विधि हाथ ।।

कहि नहि सकैत छी जे मधुबनीक मकानक हेतु हम स्वयं आ हमर समस्त परिवार कतेक कष्ट सहलनि । मकानक ऋण बहुत भए गेल रहैक । मकानक लागत बजटसँ बहुत बेसी भागि गेल । फेर

सभटा खर्चा तँ दरमहे पर बजरैत चल । मकानसँ किराया नाममात्रक अबैत छल ,ओहो समयपर नहि । असलमे दिल्लीमे रहैत मधुबनीमे मकान बनाएब एकटा दुरूह काज छल । आर्थिक भार तँ हम असगरे सहलहुँ मुदा शारीरिक,मानसिक भार तँ के-के ने सहलथि, तकर की कहू? ककर-ककर नाओं लिअ । हमर सासुरक सभगोटे तँ करिते रहलाह । श्रीनारायणजी सालक साल एहि काजमे हमरा मदति करैत रहलाह । हमरा कै बेर मोनमे होअए जे जँ हम ई मकान बेचैत छी तँ एहिपर पहिल हक हुनके छनि । हम हुनका कहबो केलिअनि जे ओ मकान लए लेथि। मुदा हुनका तकर प्रयोजन नहि रहनि । मधुबनीमे उच्चकोटिक मकान ओ बनओने छथि । कतेक की करताह ? मधुबनीक मकान हमर संघर्ष ओ मनोरथक एकटा प्रतीक बनि गेल छल । करीब२८ बर्ख हम ओहि मकानक निर्माणसँ जुड़ल रहलहुँ । आब तँ जे हेबाक छल से भइए गेल मुदा जाइत-जाइत ओ मकान अपन ऋण चुका गेल । हमरा कै मानेमे निश्चिन्तो कए गेल आ भविष्यक समाधान सेहो ।

न्यायक दलानपर

सरकारी सेवासँ सेवानिवृतिक बाद हम दिल्लीक बार कौंसिलमे निवंधन हेतु गेलहुँ । हौजखासमे अवस्थित ओहि कार्यालयमे बेस गहमा-गहमी छल । बेसी युवकसभ रहथि मुदा बूढ़ोसभक कमी नहि रहए । ओहिदिन एक सएसँ कम लोक नहि रहथि । कैटा फार्मसभ भरबाक रहैक । शुल्क जमा करबाक रहैक। से सभ भेलैक। फेर की भेलैक की नहि काज रूकि गेलैक । लोकसभ अपसियाँत रहथि । जेना-तेना फार्म जमा भेल आ कहल गेल जे चारि-पाँचदिनक बाद पता लागत जे कहिआ लाइसेंस भेटत। हमसभ अपन-अपन घर बिदा भए गेलहुँ । ओहीक्रममे दिल्ली सरकारमे सहायक श्रम आयुक्तक पदसँ सेवानिवृत्त श्री ओम प्रकाश सपराजीसँ भेंट भेल । एहन लोक नहि देखलहुँ । एकटा अपरिचित व्यक्तिक हेतु एहन आपकता कम देखबामे अबैत अछि। कहए लगलाह-

"अहाँ केमहर जाएब?"

"२१ ब्लाक, लोधी कालोनी।"

"चलू, हम अहाँकेँ छोड़ैत चलि जाएब । हमरो ओमहरे जेबाक अछि।"

हम हुनका संगे बिदा भए गेलहुँ । सपराजी हमरा घर धरि छोड़ि देलाह । आग्रह केलिअनि तँ बैसि कए संगे चाहो पिलाह । कनीके कालमे तेहन मिलि गेलाह जेना लागए कतेक सालसँ जनैत होइअनि । फेर ओ हमरासभसँ जेबाक अनुमति लेलाह । एकटा अपरिचित व्यक्तिसँ एहन सिनेह दिल्लीक समाजमे अपवाद थिक। मुदा ओ छथिहे तेहने महान व्यक्ति । दिल्लीमे अनेको सामाजिक संस्थासँ जुड़ल छथि । 'मित्र संगम पत्रिका' अपन किछु संगी सभक संगे प्रत्येक मास सालोंसँ निकालैत छथि । यद्यपि ई पत्रिकामे कम पृष्ठ

होइत अछि मुदा सपराजी आ हुनकर सहयोगीसभ एहिमे गागरमे सागर भरि दैत छथि । प्रत्येक मास नियमित रूपसँ ई पत्रिका निकलैत अछि आ कतेको लोकमे बाँटल जाइत अछि । नियमिततामे तँ ई पत्रिकाक कमे मिसाल भेटि सकैत अछि। अकस्मात भेल ई भेंट-घाँट सँ श्री सपराजीसँ हमर मित्रताक सूत्रपात भेल । पछिला पाछ सालसँ से गहीर होइत गेल । मृदुभाषी आ मिलनसार सपराजी दिल्लीक साहित्यिक जगतमे बहुचर्चित व्यक्तित्व छथि। हुनकासंगे जखन कखनो हम पुस्तक मेला गेलहुँ तँ बाहर होएब मोसकिल भए जाइत छल ,कारण डग-डेगपर हुनकर परिचित लेखक,प्रकाशक भेटैत रहितनि आ ओ सभक संगे तेना ने मिलि जइतथि जेना पानिमे चिन्नी मिलि जाइत अछि । किछुदिनक बाद हमरा ओकालतक लाइसेंस भेटल । सपराजी आ हम दुनूगोटे कैट बार रूममे लगभग डेढ़साल बैसलहुँ । ओहिक्रममे नियमित ओ भेटैत रहलाह ।

सरकारी सेवासँ निवृतिक बाद हम सोचने रही जे आब स्वतंत्र काज करब । ताहि दृष्टिसँ वकालतक लाइसेंस लेलहुँ । नियमित रूपसँ कैटमे बैसल करी ई क्रम करीब डेढ़ साल चलल । ओहि दौरान कैटा नव चीजसभ सीखबाक अवसर भेटल। सरकारी सेवा संबंधी नियम-कानूनक हम जानकार छी आ ओहि क्षेत्रमे चालीस सालोसँ बेसीक व्यवहारिक अनुभव अछि । हमरा उमीद छल जे हमर वकालत चलि जाएत मुदा से भेल नहि । समय बिताबक हेतु कैटक बाररूम बढ़ियाँ स्थान अछि । ओतए अधिकांश ओकील सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी छथि जे मूलतः समय बिताबक हेतु ओतए जाइत-अबैत छथि । बादमे हमरा अनुमान भए गेल जे ई काज चलए बला नहि अछि । नित्यप्रति इन्दिरापुरमसँ कापरनिकस मार्ग स्थित कैटक बाररूम धरि आएब-जाएबमे बहुत खर्चा होइत छल आ आमदनी फोकला । कै दिन एना चलि सकैत छल?

किछुगोटे मात्र समय काटए हेतु ओकिलक ड्रेस पहिरि भरि दिन कैट बाररूममे बैसल गप्प मारैत रहैत छथि । लागत जेना कतेक गंभीर विषयपर चर्चा भए रहल अछि । एहने इकटा रेलवेसँ सेवानवृत वरिष्ठ अधिकारी छथि जे ग्रेटर नोएडासँ नित्य कैट (कापरनिकस मार्ग, दिल्ली) अबैत-जाइत छथि । हम पुछलिअनि-

"किछु काजो चलैत अछि कि नहि?"

"काजक गप्प छोड़ू । जहिआसँ एतए आएब-जाएब शुरु कएलहुँ, ब्लड सुगर सामान्य भए गेल । आँखिक चश्माक नंबर कम भए गेल । ई तँ सद्यः लाभ थिक ।"

एहिना कै गोटे घरमे झंझटसँ बँचबाक हेतु बहराइत छथि। एकदिन दिल्ली उच्च न्यायलयमे एकटा सेवानिवृत्त जिला न्यायाधीश कहलाह-

"सेवा निवृत्तिक बाद किछु दिन घरेमे रही । तरकारी, दूध आनबाक काज हमरे जिम्मा आबि गेल । ताहि लेल तँ कोनो बात नहि मुदा जखन तरकारी कीनि कए आपस घर जाइ तँ गृहणी कहथि-

"कहि नहि अहाँ केना जजक काज करैत छलहुँ । अहाँ बुते तरकारी कीनब सन सोझ काज नहि होइत अछि । सभटा सड़ल-पाकल तरकारी उठा अनैत छी ।"

कहलाह – " तकरबाद ओकालत शुरु केलहुँ । कम-सँ-कम घरक फज्जतिसँ मुक्ति भेटि जाइत अछि । "

एहन उदाहरण बहुत गोटेक अछि । जीवन छैक । तरह-तरहक खिस्सा सुनबामे अबैत रहैत छैक । मुदा सेवा निवृत्त लोकनिकेँ तरह-तरहक समस्या रहिते छैक ।

एकदिन एकटा मोअक्किल पुलिस संगे अएलाह । हुनका नौकरी संबंधी किछु समस्या छलनि । हुनकर केस उच्च न्यायलय दिल्लीमे चलितनि । हुनकर कागज-पत्तर देखबासँ बुझा गेल जे

मामलामे कोनो दम नहि थिक । मुदा ओ मोकदमा करबाक हेतु अड़ल छलाह । हमरा कहलाह-

" हम चाहैत छी जे संबंधित अधिकारी दंडित होअए, हमरा लाभ भले नहि होअए । दोसर दिन भेने ओ फेर अएलाह । कतबो हम बुझाबिअनि कोनो असर हुनकापर नहि पड़ए । ओ वाजिब फीसो देबाक हेतु तैयार छलाह । हम पुछलिअनि-

"अहाँकेँ हमही कोना पसिन पड़लहुँ?"

" अहाँक केस पाकि गेल अछि, बुजुर्ग आदमी छी, भेल जे अहाँ हमरा ठगब नहि ।" हमरा नहि रहल गेल , हँसी लागि गेल । हम ओकर कागज-पत्तर ध्यानसँ पढ़ि ओकरा राय देलिऐक -

"अहाँक मोकदमामे जान नहि अछि । एहिमे अहाँकेँ किछु लाभ नहि होएत । यद्यपि एहिमे प्रशासकीय चूक लगैत छैक आ ताहि हेतु भए सकैत अछि जे न्यायालय ओकरा दंड दैक ।"

"बस इएह हमरा चाही । ओहिमे हमरा लाभ होअए वा नहि मुदा ओहि अधिकारीकेँ दंडित कएल जाए। ओ बहुत बदमास अछि।"

हम लाख प्रयास केलहुँ ओ अपन बात पर अड़ल रहथि ।

“मोकदमा लड़बाक छैक, जे हेतैक।"

हम ओहि केस लेबामे उत्सुक नहि रही आ ओ मोअक्कल से बात बुझलक आ कतहु आनठाम चलि गेल। एहिबातकेँ ओतए कैटा ओकिलसभ देखैत रहथि आ हमरा कहलाह-

"अहाँ तँ हमरोसभक धंधा चौपट करब ।"

एकाध बेर आओर एहने घटनासभ घटित भेल । ओना हमरा न्यायालयमे जा कए ओकिलसभक बहस सुनबामे मोन लगैत छल। कैटा ओकिल बहुत नीक सँ अपन बात रखैत छलाह । मुदा कै गोटेकेँ मोअक्कलकेँ ठकैत सेहि देखिअनि । जे भेल,से भेल करीब डेढ़ साल हम एही मे लागल रहलहुँ । किछुगोटे हमरा ओकिलसाहेब सेहो कहए

लगलाह । मुदा आर्थिक लाभ किछु नहि होइत छल । तकरबाद हम सेवानिवृत्त अधिकारी सभक हेतु उपयुक्त नौकरी सभ ताकए लगलहुँ।

केन्द्र सरकारक इलेक्ट्रोनिक विभागक अधीन नीलीट एकटा संस्था थिक । ओहिमे संविदा आधारपर सलाहकारक हेतु हम चुनल गेलहुँ । भेलैक ई जे किछुदिन पूर्व हम एकटा प्रशिक्षणक किलास लेने रही । ओहिमे सरकारक आरक्षण व्यवस्था कोना लागू कएल जाएत विषयपर पढ़ेबाक रहैक । साक्षात्कारमे ओही विषयपर बहुत रास प्रश्न पुछल गेल जे हम धराधर कहैत गेलिऐक। हम ओहिमे प्रथम स्थान पाबि सफल भेलहुँ । हम साढ़ेतीन मास ओहिठाम काज केलहुँ । ओहीबीचमे हमर दिल्ली उच्च न्यायलयसँ स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेट(विशेष महानगर दंडाधिकारी)क पद हेतु चयन भए गेल। तकर अधिसूचना सेहो जारी भए गेल । हमरा नीलीटमे टाका तँ नीक भेटैत छल मुदा काज किछु देबे नहि करथि । बैसबाक सेहो कोनो ठेकान नहि । एकटा अधिकारीक सोफापर बैसल करी । साढ़ेतीन मासमे ओ सोफा एकहाथ धसि गेल । भरिदिन ओहि अधिकारीक भाषण सुनैत रहू । काज किछु नहि । तीनटा-चारिटा अखबार पढ़ल करी। तैओ समय नहि बीतए । तखन इलेक्ट्रोनिक भवनक भीतरे घुमल करी । समयसँ पहिने ने आपस घर जा सकैत छलहुँ ने देरीसँ दफ्तर आबि सकैत छलहुं कारण ओहिठाम हाजिरीक हेतु बायोमेट्रीक मशीन लागल रहैक । आएब जरूरी,रहब जरूरी मुदा काज किछु नहि । एक हिसाबे ई बड़का दंड छल । एकदिन हमरा बड़ तामस भेल । ओहिठामक वरिष्ठ अधिकारीपर बिगड़लहुँ ।

"ई की तमासा केने छी? मासक-मास बिना काजक हम समय बिता रहल छी । बैसबाक सेहो कोनो ठेकान नहि अछि ।"

ओ कनी परेसान बुझेलाह ।

"चिंता नहि करू । सभटा भए जेतेक । बहुत नीक हेतैक। जगहो भेटत,काजो भेटत । सभटा हेतैक। हेबे करतैक । "-से सभ बड़बड़ाइत बैसबाक जगह बनेबाक हेतु ओ एमहर-ओमहर घुमए लगलाह । लगलैक जेना आइ किछु भइए कए रहत । मुदा ई सभ नाटक छल । किछु नहि भेल । आएल पानि,गेल पानि ,बाटे बिलाएल पानि । हमरा दिल्ली उच्च न्यायलयक अधिसूचना भेटि गेल रहए । आब ओहिठाम रहब उचित नहि बुझाएल । फेर डेरापर हमर माए दुखित छलीह । सोचलहुँ जे इस्तीफा दए दी । जाबे स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक काज नहि शुरु होइत अछि ताबे माएक सेवा भरिपोख करब । सएह सोचि हम इस्तिफा दए देलहुँ। हमर इस्तिफा देखि ओ अधिकारी गाहे-बगाहे ओकरा आपस लेबाक हेतु कहथि मुदा हमर निश्चय पक्का छल। एहि तरहें हम नीलीटसँ कार्यमुक्त भए गेलहुँ।

सोचने रहिऐक जे दस-पंद्रह दिनमे स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक काज शुरु भए जेतैक । उच्च न्यायलयसँ अधिसूचना भेलाक बाद दिल्ली सरकारक अधिसूचना हेबाक रहैक । आब ओहिठाम कागज मासक मास एमहर-ओमहर घुमैत रहल । विलंबक मूल कारण ई रहैक जे अधिसूचना निकालबाक हेतु दिल्ली सरकारमे ककर स्वीकृति लेल जाएत-मुख्यमंत्रीक आ कि उपराज्यपालक -एहि निर्णयमे लगभग तीन मास लागि गेल । हम धरफरा कए नीलीटक काजो छोड़ि देने रही। भरिदिन डेरामे बैसल-बैसल बहुत मोसकिल बुझाइत छल । माएक सेवा करी मुदा तकर बाद?

आखिर दिल्ली सरकारक अधिसूचना जारी भेल । हमरा लोकनिकेँ फोनसँ तकर सूचना भेटल । ओहि समय हम दिल्लीक कनाटप्लेसमे रही । तुरंत तिपहिआसँ उच्च न्यायलय जा कए दिल्ली सरकारक अधिसूचनाक संगे जिला न्यायाधीशक नाम उच्च न्यायालयक आदेशक प्रति प्राप्त कएल । ओहि दिन राति भरि भोर

हेबाक प्रतीक्षा करैत रही । बीचमे हम माएकेँ मजिष्ट्रेटक हेतु अपन चयनक संबंधमे कहने रहिऐक । ओ बहुत खुश रहए । तकर बाद तँ जकरा-तकरा कहने फिरैक -"हमर बेटा मजिष्ट्रेट बनि रहल अछि।" भोरे माएकेँ प्रणाम कए हम तीस हजारी गेलहुँ । ओहिठाम ओही पदपर चुनल गेल किछु आओर गोटे पहिनहिसँ आएल रहथि। ई पता लागल जे चारि बजे जिला न्यायाधीश हमरा लोकनिकेँ शपथ दिओताह आ काल्हिसँ राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी,द्वारका,दिल्लीमे हमरा सभक प्रशिक्षण प्रारंभ होएत । इहो कहल गेलैक जे शपथ ग्रहण हेतु कारी कोट जरूरी थिक । उजरा सर्ट जरूरी थिक । उजरा सर्ट तँ ओहीठाम कीनि लेलहुँ मुदा कोट नहि भेटल । तखन की कएल जाए। हमर मित्र श्री ओम प्रकाश सपराजी कोनो अपन पूर्वपरिचित मित्रसँ कारीकोट मंगनी केलाह। हुनका कहलखिन जे घंटाभरिमे आपस भए जाएत । ओकिलसाहेबकेँ उच्च न्यायालयमे केसक हेतु जेबाक रहनि। घंटाभरि के कहए दू घंटा बीति गेल । हुनकर कोट आपस नहि भेल। ओ बेर-बेर फोन करथि । सपराजी सेहो परेसान छलाह । शपथ ग्रहणक समय आगा बढ़ल जाइक । हम हुनकर कोट पहिरने प्रतीक्षा करी जे आब शपथ ग्रहण हेतैक तँ ताब । मुदा चारि बजे जा कए से संभव भेलैक । ताबे तँ ओकिलसाहेब बहुत तमसा गेल रहथि। हमरा बहुत अफसोच भेल जे बेकारे हुनकर कोट लेलहुँ । कै बेर छोट-छोट बात बहुत शिक्षा दए जाइत अछि, सएह ई मंगनी कएल कोट कए गेल । बादमे हम देखलिऐक जे कै गोटे बिना कोटोकेँ शपथ लेलथि आ कोनो दिक्कत नहि भेलैक । शपथ ग्रहण समाप्त होइतहि हम ई कोट ओकिलसाहेबकेँ आपस केलहुँ । ताबे ओ हमरेसभक लग आबि गेल रहथि आ बड़बड़ाइत चलि गेलाह । शपथ ग्रहण केलाक बाद हमसभ कानूनन दिल्लीक मजिष्ट्रेट बनि गेल रही ।

दोसर दिन भोरे माएकेँ प्रणाम कए राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी,द्वारका,दिल्लीमे प्रशिक्षणक हेतु हम पहुँचलहुँ । हमरासँ पहिने कैगोटे अंडाकार टेबुलक चारूकात पसरि गेल रहथि । जलदीसँ किछु कागजसभ भरलहुँ । प्रशिक्षणक क्रममे जिला न्यायाधीश,ककरडूमा न्यायालयक ओहिठाम हमरा सात दिन बिताबक छल । जिला न्यायाधीश डा० नवल गजबकेँ व्यक्ति छलाह। विनम्र व्यवहार आ स्पष्टवादितासँ तुरंत प्रभावित करैत छलाह । एक सप्ताह धरि विभिन्न न्यायाधीशगणक संग हमर प्रशिक्षण चलल । तकर बाद एक सप्ताह बेगर्स कोर्ट(भिखमंगा न्यायालय)क स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक संग हमरा संवद्ध कएल गेल । एतहि पता लागल जे भिखमंगासभसँ निपटबाक हेतु दिल्लीमे बेगर्स कोर्ट चलैत अछि । पुलिसक लोकसभ यत्र-तत्रसँ भिखमंगासभकेँ पकड़ि अनैत छलाह आ न्यायालयमे मजिष्ट्रेटक सोझा पेश करैत छलाह । भिखमंगा न्यायालयक मजिष्ट्रेट चाहए तँ हुनकासभकेँ सालो सुधार गृहमे बंद कए दिअए । मुदा से प्रायः कमे काल होइत छल । बेसी भिखमंगाकेँ डाँटि कए छोड़ि देल जाइत छल । ई क्रम अनवरत चलैत रहैत छल । हमरा तँ ई व्यवस्था ब्यर्थ लगैत छल । एक तँ बेचारासभ भीख मांगए हेतु मजबूर छल ताहि परसँ पकड़ल गेलहुँ तँ कोट कचहरीक चक्कर लगाउ । मुदा एकटा बात देखबाक ,बुझबाक मौका भेटल जे कैटा भिखमंगाक गैंग सभ सेहो सकृय छल जे भिखमंगासभसँ ठाम-ठाम भीख मगबैत छल । तकरासभक हेतु कानूनमे कठोर व्यवस्था छैक । मजिष्ट्रेटो हुनकासभकेँ सख्ती करैत छलखिन । मुदा तुरंते ओकिलसभ ओकरासभकेँ बचेबाक हेतु हाजिर भए जाइत छल । भिखमंगाकेँ एहन कानूनी संरक्षण के दैत छल? जाहिर छैक जे ई काजसभ भिखमंगा गैंग चलनिहारेसभ करैत छल । भिखारी न्यायालयक हाल तँ बेहाल छल । एहन खानापुरी नहि देखलहुँ । रच्छ

अछि जे हालेमे दिल्ली न्यायालय एहि कानूनकेँ दिल्लीमे निरस्त कए देलक अछि आ भिखारी न्यायालयसभ आब काज केनाइ बंद कए देलक।

प्रशिक्षणक अंतिम एक सप्ताह राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी,दिल्लीमे किलास चलल । बेसी सैद्धांतिक बात सभ होइत रहल । जरूरी ई छल जे काजसँ जुड़ल व्यवहारिक बातसभपर चर्च होइत । ओहिठाम रहब एकटा मनलग्गू अनुभव छल । पैघ-पैघ विद्वानसँ अपन-अपन विषय-वस्तुपर भाषण देलाह। अंतिम दिन जिला न्यायाधीश महोदयक हाथे हमरा लोकनिकेँ प्रशिक्षण समाप्तिक प्रमाणपत्र आ पदस्थापनाक आदेशक प्रति देल गेल । विदाइ भाषण भेल । हमसभ बहुत प्रशन्न भेल रही । सरकारी सेवासँ निवृत्त भेलाक बाद फेरसँ न्यायिक सेवामे बहाल होएब एकटा महान संयोग छल ।

प्रशिक्षण समाप्त भेलाक बाद सितम्बर २०१५क अंतिम सप्ताहमे हम यमुना विहार स्थित म्युनिसिपल न्यायालयमे स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक काज शुरु केलहुँ । ओहिठाम तीनटा आओर मजिष्ट्रेट हमरे संगे पदभार ग्रहण केलथि । एकटा मजिष्ट्रेट पहिने सँ रहथि । अस्तु,आब ओहिठाम पाँचटा मजिष्ट्रेट भए गेलहुँ। एकदिन गेरुआ वस्त्र पहिरने,दाढ़ी बढ़औने एकटा वृद्ध यमुना विहार न्यायालयमे अएलाह । ओ गोपालन करैत छलाह । अपन गलती ओ सही-सही कहि देलाह । हम हुनकर स्पष्टवादितासँ प्रभावित भए मात्र एक सए टाका आर्थिक दंड देबाक आदेश देलहुँ। मुदा ओ तैओ बहुत दुखी भेल छलाह । जुर्माना तँ ओ दए देलाह मुदा कहए लगलाह-

"हम जीवनमे कहिओ कोनो प्रकारसँ दंडित नहि भेल छी। जुर्माना नहि देने छी । एहि घटनासँ हम बहुत दुखी छी ।"

छोटो-छीन घटना कै बेर बहुत मार्मिक भए जाइत अछि। हुनका गेलाक बाद हमरा कै दिन धरि ई प्रसंग मोन पड़ैत रहल ।

हम करीब तीन बर्ख चारिमास स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेट रहलहुँ । ओहिक्रममे तीनटा विभिन्न न्यायालयमे हमर पदस्थापना भेल। पहिल न्यायालय छल यमुना विहारमे जतए हम करीब एकसाल काज केलहुँ । हमर डेरा ओहि समयमे इन्दिरापुरममे छल । हम तकरबाद नोएडा आबि गेल रही आ नोएडा सेक्टर चालीस स्थित हमर घरसँ यमुना विहारक न्यायालय बहुत दूर छल। तेँ हम लाजपतनगर स्थित कोनो न्यायालयमे पदस्थापना हेतु दर्खास्त देलिऐक जे मानि लेल गेल आ हमर पदस्थापना लाजपत नगरक दिल्ली जलबोर्डक न्यायालयमे भेल । एहि न्यायालयक अधिकार क्षेत्र दिल्लीक दक्षिण,पश्चिम,आ दक्षिण पश्चिम जिला छल । एहि तरहे जनकपुरी,नजफगढ़ ,वसंत विहार सँ लए कए संगम विहार,वसंत कुंज आ कहि नहि कतए कतएक जलबोर्डसँ संबंधित मामला एहि न्यायालयमे अबैत छल । एहिठाम सामान्यतः एहने लोकक मामला अबैत छल जिनका पासमे घर छल। तेँ अपेक्षाकृत एहिठाम नीक आ संभ्रांत लोकसभ चलान होइत छल ।

हम जलबोर्डक न्यायालयमे अबितहि किछु एहन मामलासभक सामना भेल जाहिमे बहुत ज्यादा जुर्माना (लाख आ कैटा मामलामे ओहूसँ बेसी) हमर पूर्ववर्ती मजिष्ट्रेट द्वारा कए देल गेल छल । प्रथमद्दष्ट्या ओ सभ गलत छल मुदा हम चाहिओ कए किछु नहि कए सकलहुँ कारण पिछला न्यायालयक फैसलाक खिलाफ मात्र अतिरिक्त न्यायालयक ओहिठाम अपील कएल जा सकैत छल । जब्ती,कुर्कीक आदेश दए जुर्मानाक भारी रकमक वसूली करए पड़ल आ लोकसभ देबो केलक अन्यथा जेल जाइत।

लगभग सालभरि जलबोर्डक न्यायालयमे काज केलाक बाद हमर बदली लाजपतनगरक नगर निगम न्यायालयमे भए गेल। एकसाल पाँच मास धरि हम ओहिठाम काज केलहुँ । एतए

आनठामक अपेक्षा सुबिधा बेसी छल । सरकार बैट्रीसँ संचालित नव कार देने रहए । ग्रेटर नोएडाक घरमे अएलाक बाद दिल्लीक एहि नौकरी करब मोसकिल बुझाइत रहए मुदा एहिठाम नीकसँ समय कटल । कारक बेहतर सुबिधा रहबाक कारणे पचास मिनटमे हम ग्रेटर नोएडा स्थित अपन घरसँ लाजपतनगरक न्यायालय चलि जाइत छलहुँ ।

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक काज करबाक क्रममे कैटा जे नीक लोग संग भेलाह ताहिमे स्वर्गीय विजेन्द्र सिंह पुंडीरजीक नाओं अविस्मरणीय अछि । ओ दिल्ली पुलिसमे सहायक पुलिस आयुक्तक पदसँ सेवानवृत भेलाक बाद स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक काज शुरु केने रहथि । उत्तराखणडक बहुत संभ्रान्त परिवारसँ अबैत छलाह। सीआरपीसीक बहुत नीक ज्ञान हुनका रहनि। जखन कखनो कोनो कानूनी विषयपर शंका होइत तँ ओ बहुत स्पष्ट मत दैत छलाह । हुनकासँ गप्प केलासँ होइत जेना कोनो बहुत अपन लोकसँ गप्प कए रहल छी। दिल्लीक प्रवासी भवनमे नवंवर २०१७मे हमर पुस्तक"भोरसँ साँझ धरि”क विमोचन छल । हमर मित्र आ स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेट श्री ओम प्रकाश सपरा मित्र संगम पत्रिकाक तत्वावधानमे ई कार्यक्रम आयोजित केने रहथि । मैथिलीक प्रसिद्ध कवियत्री डाक्टर शेफालिका वर्माजी एहि कार्यक्रमक अध्यक्षता केने रहथि । ओहि कार्यक्रममे स्व० पुंडीरजी सेहो आएल रहथि आ अंत धरि रहलाह । पुण्डीरजीक मृत्यु बहुत आकस्मिक रूपसँ हृदयाघातसँ दिल्लीक प्रसिद्ध सेंट जोजेफ अस्पतालेमे भए गेलनि । ओहि समयमे ओ अपन पुतहु आ नवजात पोतीकेँ अस्पतालसँ आनए गेल छलाह । हृदयाघात ततेक सवल छल जे अस्पताल परिसरमे रहितहुँ किछु इलाज नहि कएल जा सकल आ ओ मरि गेलाह । लोक किछु भेलापर अस्पताल जाइत अछि मुदा ओ तँ ओहि समयमे

अस्पतालेमे रहथि । मुदा कालक आगू ककर चलैत अछि?पुंडीरजीक असामयिक निधनसँ हमर एकटा पैघ क्षति भेल । हमर आ हुनकर स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक पदसँ सेवा निवृत्ति लग-पासमे रहए । हमसभ गप्प करी जे संगे-संगे विदाइक माला पहिरल जएतेक । मुदा से विधाताकेँ कहाँ मंजूर भेलनि । असमयमे ओ चलि गेलाह । छोड़ि गेलाह हमर मोनमे सिनेहक एकटा तेहन निसान जे साइते मिटा सकत।

एहि क्रममे श्री सी.बी.शर्माजी स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक नाओँ सेहो मोन पड़ैत अछि । यद्यपि ओ मैथिलभाषी नहि छथि तथापि ओ एहि कार्यक्रममे भाग लेलाह आ हमर मैथिलीमे लिखल ओहि किताबकेँ बादमे पढ़लाह आ कहथि जे ओ बुझबो केलाह। श्री सी.बी.शर्माजी सरकारमे उच्चपद(आइओएफएसक जीएम)सँ सेवा निवृत्त भेलाक बाद स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेट बनलाह । ओ बहुत सुयोग्य,इमान्दार, मृदुभाषी ,उदार आ भावुक व्यक्ति छथि । आइ-काल्हिक समयमे एहन नीक लोग भेटनाइ बहुत मोसकिल ।

न्यायालयमे काज करैत किसिम-किसिमक लोकसँ भेंट भेंल। करीब सात हजार चलानक निपटान हम केने होएब । हमर अंतिम पदस्थापना दक्षिणी नगर निगमक लाजपतनगर न्यायालयमे छल । स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक काज करैत तीन साल चारिमासक अवधिक एकटा महत्वपूर्ण उपलब्धि मजिष्ट्रेट लोकनिक समय-समयपर होबए बला आपसी बैसार छल । एकर आयोजन हम आ श्रीसपराजी मिलिकए करैत छलहुँ । आयोजनमे होबएबला खर्चाकेँ सभगोटे आपसमे बाँटि लैत छलहुँ । सामान्यतः प्रति व्यक्ति दू सए टाकामे काज चलि जाइत छल । पचीसक लगपासमे मजिष्ट्रेट उपस्थित होइत छलाह । एहि बैसारमे सेवानिवृत्त मजिष्ट्रेटसभ सेहो

भाग लैत छलाह । आयोजन स्थल बेसी बेर कनाट प्लेसक काफी हाउस,वा अन्य कोनो एहने स्थान रहैत छल। दिल्लीक कोन-कोनसभसँ हमर सहकर्मीसभ एहिमे उल्लासपूर्वक भागे नहि लैत छलाह,अपितु आग्रह करथि जे एहन आयोजन बेरि-बेरि कएल जाए। एहि आयोजनमे चाह-पान,जलखैक संगे भेंट-घाँटक एकटा नीक अवसर रहैत छल । एही क्रममे सेवानिवृत्त भेनिहार मजिष्ट्रेटक विदाइ सेहो कएल जाइत छल । एहि कार्यक्रममे गजबक आनंद रहैत छल । एतेक कम खर्चामे एहन नीकसँ काज चलि जाइत छल ताहिमे श्री सपराजीक बहुत योगदान रहैत छल । कै बेर एहिमे गीत-नाद सेहो होइत छल । कुल मिला कए आपसी विचार-विमर्शक ई एकटा सफल माध्यम बनि गेल छल ।

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक काज अधिकतम ६५ सालक बएस धरि चलि सकैत अछि । हमर कैटा सहकर्मीसभ पैसठि साल पूरा होबाए काल परेसान भए जाइत छलाह जे एहन नीक काज छुटि जाएत । छुटि जाएब तँ एहि दुनिआक एकटा अनिवार्य अंग अछि । जे चीज शुरु भेल अछि से खतम भए जाएत। सएह हाल एहि नौकरीक सेहो अछि । ई असालतन चलएबला तँ नहि भए सकैत अछि । मानि लिअ जे सेवा निवृत्तिक आयु बढ़िओ जइतैक तँ कतेक बढ़ितैक? कखनो-ने-कखनो तँ एकरा खतम हेबेक छैक । ओना कै बेर सभगोटे मिलि कए उच्च न्यायलयकेँ दर्खास्त देलथि जे सेवा निवृत्तक आयु बढ़ाओल जाए,मुदा से उच्च न्यायलयमे स्वीकृत नहि भेल । सेवानिवृतिक बाद भेटल ई नौकरी निश्चय सम्मानजनक ओ सुविधापूर्ण छल मुदा केहनो नीक सँ नीक कथाक कतहु तँ अंत हेबे करत, से एहू कथाक संगे भेल । १जनवरी २०१९क ६५ वर्खक आयु भेलापर हम एहि नौकरीसँ सेवा निवृत्ति भेलहुँ। ओना हमरा एहिसँ

किछु परेसानी नहि भेल । हम मानसिक रूपसँ एहि हेतु बहुत पहिनेसँ तैयार छलहुँ।

सेवा निवृत्तिसँ एकदिन पहिने जलबोर्डक वर्तमान स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेट श्री सी.बी.शर्माजी आ हुनकर सहकर्मीसभ हमर विदाई समारोहक आयोजन केलथि । दोसर दिन शर्माजी लाजपतनगरक स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेट श्री मानसिंहजीक संगे हमरा नोत सेहो देने रहथि । थोड़े दिनक बाद दिल्लीक सिभिल लाइन्स स्थित पुलिस अधिकारीक क्लवमे दिल्लीक तमाम स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटसभ मिलि कए सेवा निवृत्त भेनिहार पाँचटा स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक विदाइ समारोह आयोजित केलाह। एहि कार्यक्रममे करीब पचास गोटे उपस्थित रहथि । श्री हरिदर्शनजी स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेट एहि आयोजनमे मुख्यकर्ता-धर्ता रहथि।

सेवा निवृत्तिक बाद भेटल स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक नौकरी बहुत मजेदार छल । एहिमे बेसी बंधन नहि छल । काज थोड़बे काल होइत छल । आवागमनक समय सेहो आगा-पाछा कएल जा सकैत छल । ऊपरसँ इज्जति पूरा छल । न्यायालयमे अएनिहार मोअक्किल तँ ओहिना सर्द रहैत अछि। सामान्यतः जे जुर्माना लगाओल जाइत छल से बिना कोनो बेसी उठापटककेँ अभियुक्त दए दैत छल। सभसँ बेसी दिक्कति स्टाफ लए कए होइत छल मुदा जेना तेना ओकर जोगार कएल जाइत छल । कुल मिला कए सेवानिवृतिक बाद भेटएबला नौकरीसभमे ई एकटा बहुत बढ़िआँ विकल्प छल । कुल मिला कए स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिष्ट्रेटक तीनसाल चारिमासक अनुभव एकटा बहुत सुखद प्रसंग छल । एहि क्रममे कैटा बहुत नीक सहकर्मीसभसँ दोस्ती भेल जे आगुओक जीवनक हेतु एकटा संचित निधि जकाँ काज करत से विश्वास अछि ।

न्याय करब बहुत कठिन काज थिक । कहल जाइत अछि जे एकटा सही आदमीकेँ न्याय करबाक हेतु जँ ९९टा गलत आदमी संदेहक लाभ लैत छुटि जाइत अछि तँ से बढ़िआ मुदा एकटा निर्दोषकेँ गलतीमे सजा भेटब बहुत खराप । निर्दोष व्यक्तिक हित रक्षा सर्वोपरि हेबाक चाही से न्याय व्यवस्था हेतु एकटा जटिल समस्या अछि । संतुलित रुखि आ मध्यमार्ग अपनबैत जँ काज कएल जाए तँ सामान्यतः उचित न्याय संभव भए सकैत अछि । मुदा से एतबो आसान नहि अछि ।

न्यायालय लोक आपसी झंझटिक समाधान हेतु जाइत अछि मुदा ई प्रक्रिया कै बेर नव-नव समस्या उतपन्न कए दैत अछि। आपसी कटुता तँ बढ़िए जाइत अछि ,संगहि आर्थिक क्षति सेहो होइते अछि। फेर कै बेर न्यायमे ततेक समय लागि जाइत अछि जे ओ अर्थहीन भए जाइत अछि । तेँ आपसी सहमतिसँ विवादक समाधान सर्वोत्तम विकल्प थिक ।

बेनामी संपत्ति कानून

बहुधा ई देखल जाइत अछि जे कदाचार कए बहुत रास धन-संपत्ति संग्रह करएबला व्यक्ति अपनाकेँ कानूनसँ बचेबाक हेतु तरह-तरहक व्योंत कए लैत छथि । परिणाम होइत अछि जे सरकारी व्यवस्था एहन लोकक किछु नहि बिगारि पबैत अछि । एहन लोक समाजमे पूर्ण सम्मानक संग मोंछपर ताव दैत जीवन-यापनेटा नहि करैत छथि अपितु दोसरकेँ छोट कहबाक कोनो अवसर हाथसँ नहि जाए दैत छथि । एहने लोक कोनो सामाजिक धार्मिक काजमे सबसँ बेसी चंदा दैत छथि,माए-बापक श्राद्धमे जबार के कहए पूरा परिपट्टाकेँ भोज खुअबै छथि । कोनो मंदिर बनेबाक होइक,वा पुरान मंदिरकेँ जीर्णोद्धार करक होइक तँ ओ सभसँ बेसी टाका चंदा दए अपनाकेँ सम्मानित करैत छथि । मुदा सबाल अछि जे एतेक टाका हुनका अबैत छनि कतएसँ? जाहिर बात अछि जे कोनो-ने-कोन बैमानी-सैतानी केनहि एतेक धन भए सकैत अछि,खास कए नौकरी पेशाबला लोककेँ जकर दरमाहा बान्हल छैक,अकूत संपत्ति कतएसँ भए सकैत अछि,मुदा कैगोटाकेँ से भए जाइत छैक ।

कै बेर एहन समाचार पढ़ैत छी जे काज चपरासीक कए रहल अछि आ करोड़ोंकेँ मकान,सोनाक गहना जमा केने रहैत अछि । निश्चय एहन लोकक संख्या कम होइत अछि मुदा होइते अछि से कोना? कानूनी प्रकृयाकेँ ओसभ कोनो परबाह नहि करैत अपन काजमे लागल रहैत छथि आ जँ कहिओ छापा पड़ल तखन भोम्हार निकलैत अछि । ओ व्यक्ति जहल जाइत छथि,नौकरीसँ हटाओल जाइत छथि,मुदा एहन मामिला कमे होइत अछि । ओहो सामान्यतः विभागमे अन्तर्विरोधक कारणे होइत अछि। सरकार एहि समस्याकेँ कोना की करए-ताहि विषयपर चिंतन होइत रहल आ निर्णय लेल गेल

जे बेनामी संपत्ति कानून १९८८कें संशोधित कए एकरा फेरसँ परिभाषित कएल जाए संगहि एहन व्यक्तिक बेनामी संपत्तिकें जब्त करबाक एवम् अपराध सिद्ध भेलापर ओकरा पर्याप्त दंड देबाक व्यवस्था सेहो संशोधित कानूनक मार्फत कएल गेल।

जाहि संपत्तिक हेतु टाका किओ दैत छथि आ संपत्तिक कागजमे नाओँ ककरो आनक जेना बेटा,भाए,बहिन आदिक किंवा नौकर-चाकर वा किओ विश्वस्त लोकक रहैत अछि तँ ओकरा बेनामी संपत्ति कहल जाइत अछि । जे व्यक्ति से करैत अछि तिनका बेनामीदार कहल जाइत अछि । सबाल अछि जे किओ एना किएक करैत अछि? असलमे ई काजसभ ओएह करैत अछि जिनका बैमानीक कमाइ रहैत छनि । ओ अपन आयक स्रोत नहि बतबैत छथि आ टैक्स सेहो बचा जाइत छथि । उदाहरणस्वरूप ,कै बेर सरकारी अधिकारी कदाचार कए अकूत धन जमा कए लैत छथि । विभागीय जाँचमे पकड़ाथि नहि ताहि हेतु कागजमे पत्नी,बेटा वा ककरो अनकर नाओँ देने रहैत छथि । आब जे कानूनमे संशोधन भेल अछि तकर बाद एहन बैमान लोकसभकें बचनाइ मोसकिल भए गेल अछि । संपत्ति संगे ओकर आयक स्रोत जँ स्पष्ट नहि होइत अछि तँ सरकार एहन संपत्तिकें जव्त कए सकैत अछि, संगहि ओहि व्यक्तिकें दंडित सेहो कएल जा सकैत अछि ।

बेनामी लेन-देन (निषेध) संशोधन अधिनियम, 2016 लागू भेलाक बाद एहन लोकपर कारबाइ आसान भेल अछि जे अनकर नामे संपत्तिक क्रय-विक्रय करैत छथि । एहि कानूनकें लागू भेलाक बाद जौँ किओ बेनामीदार बेनामी संपत्तिकें ओकर असली मालिकक नामे बेचैत अछि तँ संपत्तिक ओ हस्तांतरण खारिज भए जाएत । संशोधित कानूनक अनुसार बेनामी संपत्ति अर्जित केनिहारकें सात साल धरिक जहल आ बेनामी संपत्तिक बाजार मूल्यक चौथाइ जुर्मानाक रूपमे

देबए पड़ि सकैत अछि । कोनो गलत जानकारी वा दस्तावेज देलापर पाँचसाल धरि सश्रम कारावास आ संपत्तिक दस प्रतिशत धरि जुर्माना भए सकैत अछि। हिन्दु अभिवाजित परिवारक कर्त्ता द्वारा परिवारक सदस्य हेतु कीनल गेल संपत्ति,कोनो ट्रस्ट आदि हेतु ओकर प्रवंधकक नाओँसँ लेल गेल संपत्ति एहि कानूनक प्रावधानसँ मुक्त राखल गेल अछि , मुदा ताहि हेतु ई जरुरी अछि जे लेन-देनक हेतु आमदनीक स्रोत ज्ञात होइ ।

बेनामी संपत्तिमे सामान्यतः अवैध रूपसँ कमाएल टाका लगाओल जाइत अछि जाहिसँ ओकरा कर नहि देबए पड़ैक आ ओकर अनैतिक धनोपार्जनपर लोकक वा सरकारक ध्यान नहि जाइक । ई काज ओ सभ बहुत सावधानीसँ आ फर्जी कागजात बना कए करैत छथि । तेँ एहन लोककेँ पकड़नाइ बहुत कठिन काज अछि। बेनामी संपत्तिक क्रय-विक्रय केनिहार व्यक्तिकेँ तकनाइ आ ओकरापर आवश्यक कानूनी कार्रवाई केनाइ मोसकिल काज साबित भए रहल अछि । ताहि हेतु आब ई विचार भए रहल अछि जे संपत्तिक क्रय-विक्रयक समस्त प्रकृयासँ आधार संख्याकेँ जोड़ल जाए । ताहिसँ संपत्तिक असली मालिकक पता लागि जाएत। जौँ संपत्ति बेनामी अछि तँ तकर जानकारी सेहो भेटत । मानि लिअ जे किओ अपन नौकर-चाकरक नाओँसँ संपत्तिक लिखा-पढ़ी करैत छथि तँ ओकर नाओँ धर दए पकड़ा जाएत । तखन इहो पता लगाएब आसान भए जाएत जे ओकरा ओहि संपत्ति कीनबाक हेतु टाका के देलक,ओकर आयक श्रोत की अछि ?

एहि कानूनक बनलाक बाद संपत्तिक लेन-देनमे पार्दर्शिता आएत। गलत तरीकासँ उपार्जित संपत्तिकेँ नुकाएब वा ककरो आनक नाओँमे कागज बना कए टैक्सक चोरी करब मोसकिल भए जाएत । संगहि असली मालिकक नाओँमे संपत्तिक निवंधन भेलासँ हेराफेरीक

संभावना कम होएत। निश्चय ई कानून अचल संपत्ति क्षेत्रमे समग्र आत्मविश्वासमे सुधार दिस एकटा प्रगतिगामी प्रयास अछि ।

यद्यपि बेनामी संपत्ति कानूनक धार मजगूत कए देल गेल अछि मुदा असल समस्या तँ ई अछि जे बेनामी संपत्तिक असली मालिकक जानकारी किओ नहि देबए चाहैत अछि । किओ एहि झमेलामे किएक पड़त? विभागसँ जानकारी देनिहारक नाओँ पता लगा कए बदमाससभ ओकर जानो लए सकैत अछि । एहि डरसँ किओ जानकारी नहि दैत अछि । एहि परिस्थितिसँ बँचबाक हेतु सरकार जानकारी देनिहारकेँ एक कड़ोर धरि इनाम देबाक घोषणा सेहो केलक अछि ।

बेनामी लेन-देन(निषेध)अधिनियममे नबंबर २०१६मे भेल संशोधनक बाद कतेको बेनामी संपत्ति जब्त कएल गेल अछि । एहिसँ ई अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे बेनामी संपत्तिक मालिकसभ एखनो कानूनी प्रकृयासँ बचि रहल छथि। तकर मूल कारण बेनामी संपत्तिक पता लगाएब थिक । जमीन-जायदादक रेकार्ड ऐखनधरि सही तरहसँ उपलव्धो नहि अछि । ताहि हेतु जरूरी अछि जे सभटा रेकार्डक कम्प्युटरीकरण कएल जाए । भ्रष्टाचारपर तखने अंकुश लागि सकैत अछि जखन कि चल-अचल संपत्तिक छानबीन आसान होइ । बेनामी संपत्तिसँ संवंधित मामलामे ई देखल गेल अछि जे सामान्यतः एहने लोक आयकर विभागक चाङुरमे फँसैत अछि जे कोनो घपला-गोटालामे फँसि गेल हो ।

बेनामी लेन-देन(निषेध)अधिनियाम २०१६मे न्यायाधिकरणक स्थापनाक प्रावधान अछि जे एखन धरि कागजेमे समेटल अछि जाहि कारणसँ बेनामी संपत्तिसँ जुड़ल मामलाक शीघ्रतासँ सुनबाइ नहि भए पबैत अछि। एखन एहन मामलाक

सुनबाइ मनी लांड्रींग निरोधक कानून संबंधी प्राधिकरण करैत अछि जे पहिनहिसँ बहुत व्यस्त अछि ।

मकान मालिक आ किरायादार

आइ-काल्हिक युगमे लोकक आवास बदलैत रहैत अछि। नौकरी पेशाक लोकक बदली होइत रहैत अछि । व्यापारीसभ सेहो अपन सहर बदलैत रहैत छथि । गाम-घरक लोक सेहो लगपासक सहरमे अपन घर बना लेने छथि । जिनकासभकेँ भगवान बेसी संपदा देने छथिन से सभ कै-कैटा घर बनेने रहैत छथि। जाहिर छैक कि फाजिल घरक ओ की करताह,किराया लगेताह वा बंद रखताह । घरकेँ बंद रखनाइ सेहो कोनो लाभकर समाधान नहि अछि ,तथापि किछुगोटे किरायादारक संगे झंझटमे नहि पड़ए चाहैत छथि आ घरकेँ बहुत-बहुत दिन धरि खालिए छोड़ि दैत छथि। ई बात सही अछि जे कै बेर किरायादारक संगे मकान खाली करेबाक हेतु ,किंवा किराया वसूलीमे दिक्कति भए जाइत अछि मुदा तकर माने तँ ई नहि जे सदिखन सएह होइत रहत । फेर अहाँ जहन गाम-घर छोड़िकए बाहर जाएब तँ किरायाक मकान चाहबे करी,अपन मकान कतए-कतए बनबैत रहब?किरायाक मकान भेटैत रहए आ दुनू पक्षकेँ ठीकसँ समय बितनि ताही उद्येश्यसँ देशभरिमे किराया नियंत्रण कानून बनल अछि ।

मकान मालिक आ किरायेदारक बीचमे समस्या बहुत पुरान अछि । समस्याक जड़िमे मकानक अभाव आ बढ़ैत किराया अछि । मकान मालिक चाहैत रहैत छथि जे हुनकर किराया बढ़ैत रहनि आ जखन ओ चाहथि मकान खाली भए जानि । कहक माने जे एहन नहि होइक जे किराएदार मकानपर अबैध कब्जा कए लिअए,किराया सेहो

नहि दिअए । मुदा किरायदारक समस्या सेहो मानबीय दृष्टिसँ देखब बहुत जरूरी अछि । मकान मालिक बेर-बेर जँ मकान खाली करबैत रहताह तँ ओकरा नाना प्रकारक समस्या होएब स्वभाविक। बच्चासभक इसकूल,अपन कार्यालय आ बढ़ैत खरचामे तालमेल बैसाएब मोसकिल भए जाइत अछि । कानून एहि समस्यासभकेँ समाधान करैत बीचक रस्ता निकालबाक प्रयास करैत अछि । मुदा कै बेर ई संभव नहि भए पबैत अछि । दुनू पक्ष एक-दोसरसँ सामंजस्य नहि बैसा पबैत छथि आ मोकदमाबाजी धरि बात चलि जाइत अछि। जँ मकान मालिक दबंग अछि तँ जबरदस्ती सेहो करैत अछि । बदमासकेँ लगा कए किरायेदारक समान कै बेर बाहर फेकि देल जाइत अछि ।

महानगर जेना कोलकाता,मुम्बइ, दिल्लीमे हालत आओर बहुत खराप अछि । कैटा किरायेदार मुख्य व्यापारिक स्थानमे पाँच-दस रुपया किराया दैत छथि आ पचासो सालसँ अड़ल छथि,मकान खाली नहि कए रहल छथि । मकानक हालत जर्जर भए चुकल अछि। मकान मालिक मोकदमा ठोकने छथि । मुदा तँ की? किरायेदारसभ आपसमे संगठन बना कए तकर प्रतिवाद करैत रहैत छथि,मुदा मकान खाली हेबाक कोनो संभावना नहि लगैत अछि । जौँ ओ मकानसभ आइ-काल्हि किरायापर लेल जाएत तँ किराया लाखोमे भए सकैत अछि । उदाहरणस्वरुप, जँ कनाटप्लेस दिल्लीक कोनो दोकान साबिक किरायापर चलि रहल अछि तँ किओ किएक खाली करत? जँ ओ ओहिठाम किरायापर मकान वा दोकान आब लेबए जाएत तँ किराया कतेक बढ़ि जाएत,सोचबो मोसकिल अछि। आनो महानगरसभमे तेहने हालत अछि । अस्तु,मकान मालिकसभक चिंता सेहो वाजिब अछि । आखिर लोक संपत्तिकेँ एहि लेल तँ नहि कीनलक

जे ओकरा एहि तरहक घनचक्करमे गमा देल जाए? मुदा उपाय की अछि?

जीवनमे भोजन,वस्त्र,आवास मौलिक आवश्यकता मानल जाइत अछि । भोजन.वस्त्रक बाद रहए लेल घर तँ चाहबे करी । लोको पुछैत अछि जे अपनेक कोन गाम घर भेल? माने जे घर आदमीक परिचय थिक। ग्रामीण परिवेशमे तँ अखनो घर माने अपन घर बूझल जाइत छैक ,कारण ओहिठाम किरायाक मकान ने उपलव्ध होइत अछि आ ने लोक लैत अछि । गाममे लोकक पुस्तक-पुस्त गुजरि जाइत छैक । एकहिठाम लोक जीवन भरि रहि जाइत अछि । पहिलुका समयमे ई बात सही छलैक । मुदा आब परिस्थिति बदलि गेल अछि । पढ़ाइ-लिखाइ,नौकरी,व्यापार हेतु लोक गाम-घरसँ बाहर होइत छथि । ई संभव नहि थिक जे सभ सहरमे अहाँ अपन घर बनेने फिरी । तेँ किरायापर मकान लेब जरुरी भए जाइत अछि ।

छोट सहरमे किरायाक मकान आसानीसँ भेटि जाइत अछि,किराया सेहो कम होइत छैक आ मकान मालिक जखन-तखन खाली करए सेहो नहि कहैत छैक । मुदा पैघ सहरमे खास कए महानगरमे हालत दोसर अछि । मुम्बइमे तँ ई हाल अछि जे एकहि कोठरीमे कतेको गोटे कहुनाक किरायापर गुजर करैत छथि। ऊपरसँ मकान मालिककेँ पगड़ी सेहो दिऔक,मासे-मासे किराया तँ चाहबे करी । रहि-रहि कए मकान मालिक दुलत्ती मारिते रहत,जाहिसँ अहाँ ई नहि बिसरि जाइ जे मकान किरायापर लेल गेल अछि आ किछु दिनक बाद खाली करहि पड़त । अस्तु,किरायेदारक हालत कै बेर बहुत चिंताजनक भए जाइत अछि । मुदा समाधान की अछि? सभ आदमी मकान नहि कीनि सकैत छथि । किरायापर मकान लेनाइ एकटा मजबूरी रहैत छैक। एहि विषयमे कतेकोबेर न्यायलयमे

मामिला कएल गेल । एहि विषयपर उच्चतम न्यायलय सेहो कतेको फैसला देलक । ओहिसभसँ किछु सुधारो भेलैक अछि।

मकान मालिक आ किरायादारमे सामान्यतः दूइएटा बात लेल झंझट होइते छैक:-१.किराया बढ़बए हेतु,२.मकान खाली करेबाक हेतु । आओर छोट-मोट समस्यासभ सेहो भए सकैत छैक जेना मकानकैं मरम्मति केनाइ,किराया बकिऔता भए गेनाइ,आदि-आदि । एहि समस्यासभसँ निपटए हेतु दुनू पक्ष मकान किरायापर लेबए- देबएसँ पहिनहि आपसमे किरायाक एकरारनामा बनबैत छथि। जौँ लीजक अवधि सालभरिसँ कम अछि तँ ओकरा निवंधित करबाक जरुरी नहि अछि अन्यथा एकर निवंधन सब-रजिष्ट्रारक ओहिठाम कराएब कानूनी बाध्यता अछि । जौँ किरायाक एकरारनामा बनल अछि तँ लीजक तय अवधिमे किरायाक ओहि मकानक सभ विषय-वस्तु तकरे अनुसार चलत चाहे ओ किराया बढ़ेबाक गप्प होइक,मकान खाली करेबाक गप्प होइक वा किरायाक भुगतान करब होइक । जँ किरायाक एकरारनामा नहि बनल अछि ,किंवा लीजक अवधि बीति गेल अछि तँ मकान मालिक आ किरायेदारक बीचमे स्थानीय सरकार द्वारा बनाओल गेल किराया नियंत्रण कानूनक अनुसार विवादक निर्णय होएत ।

किरायेदारक हेतु ई बहुत जरुरी अछि जे ओ तय किराया समयसँ मकान मालिककैं दैत रहथि । किराया नहि देनाइए अपना-आपमे मकान खाली करेबाक हेतु प्रयाप्त कारण भए सकैत अछि। यदि मकान मालिक किराया नहि लैत छथि तँ किराया मुद्रादेशसँ पठाओल जा सकैत अछि । यदि सेहो संभव नहि होइत अछि तँ किराया नियंत्रण अधिकारीक ओहिठाम आवेदन दए किराया जमा करा देबाक चाही । सामान्यतः एहन परिस्थिति तखने होइत अछि जखन कि मकान मालिक मकान खाली कराबए चाहैत छथि ।

जँ मकान मालिक आ किरायेदारक विवाद आपसमे नहि सोझराइत अछि तँ दुनूमे सँ किओ किराया नियंत्रण अधिकारीक पास आवेदन दए अपन समस्या राखि सकैत छथि । उदाहरणस्वरुप,जँ मकान मालिक मकान खाली करबए चाहैत छथि तँ तकर कारण दैत मकान खाली करबा सकैत छथि । सामान्यतः मकान खाली करेबाक हेतु प्रमुख कारण मे किराया नहि देब,मकान मालिककेँ स्वयं मकानक आवश्यकता भए सकैत अछि। जँ किरायेदारकेँ अपन मकान छनि तँ किरायाक मकान खाली करेबाक ओ मजगूत आधार बनि जाइत अछि। मकान मालिक किराया निर्धारणक हेतु सेहो ओतहि अर्जी दए सकैत छथि।

देश भरिमे सभ राज्य अपन-अपन किराया नियंत्रण कानून बनओने अछि । कैटा राज्यमे ऐहि कानूनक अधीन आबएबला मकानक किरायाक सीमा तय कएल अछि । संगहि राज्य वा केन्द्र सरकार ,स्थानीय निकायक मकानसभ सेहो एहि कानूनसँ बाहर अछि। कैटा राज्यमे नव निर्मित मकान किंवा धर्मार्थ कार्यरत संस्था क मकान सेहो एहि कानूनक अधिकार क्षेत्रसँ बाहर राखल गेल अछि । विभिन्न राज्यक कानूनमे समरूपता होइक जाहिसँ ई कानून सर्वग्राही भए सकए आ सामान्य लोक एकर सुविधा सरलतासँ लए सकए,ताहि हेतु १९९२मे संसद द्वारा आदर्श किराया नियंत्रण कानून पास कएल गेल । एहिमे किरायेदारीक विरासतपर मौजूदा प्रावधानमे सँ किछुकेँ संशोधित करबाक प्रस्ताव छल आओर किरायाक एकटा सीमा सेहो निर्धारित कएल गेल जाहिसँ बेसी भेलापर किराया नियंत्रण लागू नहि होएत। तकरबाद दिल्लीमे ओहि आधारपर १९९७मे कानून बनबो कएल जे स्थानीय व्यापारी वर्गक विरोधक कारण लागू नहि कएल गेल।

मकान मालिकक आ किरायेदारक बीच संवंध मधुर रहए आ कोनो मतभेद भेलापर सुगमतासँ तकर समाधान भए जाए ताहि हेतु ई आवश्यक अछि जे दुनू पक्ष मकानकेँ किरायादारी प्रारंभ हेबासँ पहिने स्पष्ट प्रावधानक संगे किरायाक लीज एग्रीमेन्ट(किरायाक एकरारनामा) उचित मूल्यक स्टांप पेपरपर हस्ताक्षरित करथि। ओहिमे सभ बात जेना किराया कतेक होएत,मकान कतेक दिन किरायापर रहत,मकानक मरम्मति केना की हएत, मकान कहिआ खाली करए पड़त, स्पष्टतासँ लिखल रहए । जौँ सालभरिसँ अधिक हेतु किरयापर मकान लेल जाइत अछि तँ एकरारनामाक निवंधन सेहो कराएब जरुरी अछि । एहिमे दुनू पक्षकेँ हितक समाधान भए जाइत अछि । अस्तु, मकान किराया लेबए वा देबएसँ पहिने उपरोक्त बातसभकेँ ध्यानमे रखैत कानून सम्मत किरायाक एकरारनामा बना लेबाक चाही आ तकर अनुवंधकेँ दुनू पक्षकेँ पालन करैत रहक चाही जाहिसँ सुख-शांति बनल रहए । ई सभ बात जँ ठीकसँ कएल गेल अछि तँ मकानकेँ किरायापर देबामे कोनो हर्जा नहि छैक।

कार्यस्थानपर यौन उत्पीड़न

देशक लगभग आधा जनसंख्या महिला अछि । कोनो देश अपन आधा जनसंख्याकेँ मुख्यधारामे सामिल केने बिना समुचित विकास नहि कए सकैत अछि । निश्चय समयक संग बदलैत परिवेशमे महिला सशक्तीकरणक आवाज जोरसोरसँ उठैत रहल अछि तथापि व्यवहारमे ओ बात नहि आबि सकल जे हमर संविधानक निर्माता समानताक अधिकारक व्यवस्था करैत काल सोचने होएताह । तकर कतेको कारण भए सकैत अछि । शिक्षासँ लए कए नौकरी धरिमे

भेदभाव होइत रहल अछि । कैठाम तँ एकहि काज करबाक हेतु महिला कर्मचारीकेँ कम वेतन देल जाइत रहल अछि । एहि तरहक तमाम असुविधाक अछैत महिला लोकनि जँ काज करितो छथि तँ कार्यस्थानपर तरह-तरहक परेसानी होइत रहल अछि । तकर सिकाइतो होइत रहल अछि । मुदा कानूनमे एहन कोनो व्यवस्था पहिने नहि छल जे महिलाक यौन उत्पीड़नक मामिलाकेँ अपराधक श्रेणीमे राखैत आ एहन परेसानीक कानूनी निवारणक हेतु भारतीय दंड संहिता 1860क धारा 354 एकमात्र विकल्प रहि जाइत छल । 3 अप्रैल, 2013 सँ लागू आपराधिक कानून संशोधन अधिनियम 2013 क द्वारा भारतीय दंड संहितामे धारा 354A,354B,354C, आ354D जोड़ल गेल अछि जाहिसँ यौन अपराधकेँ अलग श्रेणीमे राखि तकर व्याख्या तँ कएले गेल अछि संगहि तकरा हेतु तीनसँ सात साल धरिक जहल आ जुर्मानाक दंड देल जा सकैत अछि ।

माननीय उच्चतम न्यायलय द्वारा विशाखा बनाम राजस्थान राज्य ((JT 1997 (7) SC 384),क मामलामे कामकाजी महिलाक कार्यस्थानपर यौन उत्पीड़न रोकबाक हेतु आ दोषी व्यक्तिकेँ दंडित करबाक हेतु विस्तृत दिशा निर्देश जारी केलक। तकर बादे साल 2013 में कार्यस्थल पर महिलाक यौन उत्पीड़न अधिनियमकेँ संसद द्वारा पारित कएल गेल छल। जाहि संस्थामे दससँ अधिक लोक काज करैत अछि ओकरापर ई अधिनियम लागू होइत अछि । ई कानून कार्यस्थल पर महिलाक यौन उत्पीड़नकेँ अवैध घोषित केलक अछि । यौनउत्पीड़न के विभिन्न प्रकारकेँ चिह्नित केलक अछि, आ कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़नक स्थिति मे सिकाइत आ तकर निवारण करबाक व्यवस्था केलक अछि। एहि कानूनमे निस्तारणक हेतु जरूरी नहि अछि जे महिला ओहीठाम काज करैत हो जतए एहन घटना भेल ।

कार्यस्थल कोनो कार्यालय/दफ्तर भए सकैत अछि,चाहे ओ निजी संस्थान हो वा सरकारी।

माननीय उच्चतम न्यायलय विशाखा बनाम राजस्थान राज्य ((JT 1997 (7) SC 384),क मामलामे कामकाजी महिलाक कार्यस्थानपर यौन उत्पीड़न रोकबाक हेतु आ दोषी व्यक्तिकेँ दंडित करबाक हेतु निम्नलिखित दिशानिर्देश जारी केलक-

नियोक्ताकेँ ई कानूनी दायित्व अछि जे कार्यस्थानपर कोनो कामकाजी महिलाकेँ यौन उत्पीड़नसँ वचाओल जाए आ जँ एहन घटना भइए जाइत अछि तँ तकर उचित निदान करबाक एवम् दोषी व्यक्तिकेँ दंडित करबाक त्वरित आ सही व्यवस्था करए । ताहि हेतु यौन उत्पीड़नक निम्नलिखित व्याख्या कएल गेल-

१.शारीरिक संपर्क आ छेड़खानी,

२.यौन संपर्क हेतु आग्रह,

३.कामुक गप्प-सप्प,

४.अश्लीलतापूर्ण चित्र आदिक प्रदर्शन,

५.कोनो प्रकारक शारीरिक, मौखिक वा गैर मौखिक व्यवहार,

आंतरिक सिकाइत समिति:

कार्यस्थल पर महिलाक यौन उत्पीड़न (निवारण, निषेध, और निवारण) अधिनियम, 2013क धारा 4 क तहत प्रत्येक नियोक्ताकेँ ई कानूनी दायित्व अछि जे ओ अपना ओहिठाम आंतरिक सिकाइत समितिक गठन करए । दस वा एहिसँ अधिक कर्मचारीकेँ काजपर रखनिहार मालिक नियोक्ता एहि कानूनी दायित्वक निर्वाह करबाक हेतु वाध्य छथि अन्यथा हुनका पचास हजार धरि जुर्माना कएल जा सकैत अछि । कानूनमे इहो प्रावधान अछि जे प्रत्येक जिलामे एकटा स्थानीय सिकाइत समितिक गठन कएल जाएत । जतए कतहु आंतरिक सिकाइत समिति नहि अछि वा नहि गठित कएल जा सकैत

अछि ओहिठाम कार्यरत महिला एहि तरहक सिकाइत स्थानीय सिकाइत समितिक समक्ष कए सकैत छथि ।

आंतरिक सिकाइत समितिमे निम्नलिखित व्यक्ति सामिल कएल जाएत-

१. वरिष्ठ स्तर पर कार्यरत महिला पीठासीन अधिकारी हेतीह ,

२.दूटा एहन कर्मचारी जिनका कानूनक जानकारी होनि आ जे सामाजिक कार्य करबाक हेतु प्रतिवद्ध होथि,

३.गैर सरकारी संगठनक प्रतिनिधि

एहि समितिक कम-सँ- कम आधा सदस्य महिला हेतीह आ एकर अध्यक्ष सेहो महिले भए सकैत छथि ।कानूनमे इहो प्रावधान अछि जे किओ सदस्य तीनसालसँ बेसी एकर सदस्य नहि रहताह ।

स्थानीय सिकाइत समितिः

स्थानीय सिकाइत समितिमे निम्नलिखित परिस्थितिमे सिकाइत कएल जाएत-

१.जरवन सिकाइत नियोक्ताक खिलाफ कएल जाएत,

२.जरवन दससँ कम कर्मचारी हेबाक कारण ओहि संस्थामे आंतरिक सिकाइत समितिक गठन नहि भए सकैत अछि,

३.घरेलु नौकर द्वारा कएल गेल सिकाइत,

स्थानीय सिकाइत समितिक संरचना निम्नलिखित होएतः-

१.सामाजिक क्षेत्रमे काज केनिहारि एहन महिला जे महिलाक कल्याण हेतु प्रतिवद्ध होथि अध्यक्ष भए सकैत छथि,

२.ब्लाक तहसील,तालुका,नगरपालिकामे कार्यरत महिला कर्मचारी सदस्य भए सकैत छथि,

३.महिलाक कल्याण काजमे रूचि रखनाहरि एहन दूटा महिला जिनका कार्यक्षेत्रमे यौन उत्पीड़नक गहन जानकारी होनि सदस्य भए सकैत छथि,

४.जिला स्तरपर समाज कल्याण वा महिला एवम् वाल विकासक काजसँ जुड़ल अधिकारी (पदेन सदस्य),

सिकाइत करबाक समय सीमाः

एहि कानूनक तहत सिकाइत घटित घटनाक तीन महिनाक भीतरे हेबाक चाही । जँ एकहि संगे कैटा घटना भेल अछि तँ एहि अवधिक गणना एहि प्रकारक अंतिम घटना घटित हेबाक तिथिसँ होएत । जँ आंतरिक सिकाइत समितिकेँ लगैत अछि जे पीड़ित महिला बाजिब कारणसँ समयपर सिकाइत नहि कए सकल तँ एहि अवधिकेँ आओर तीन महिना धरि बढ़ाओल जा सकैत अछि,मुदा ताहिसँ बेसी एकरा नहि बढ़ाओल जाएत। कहक माने जे पीड़िताकेँ चाही जे एहि समय सीमाक भीतर लिखित सिकाइत आंतरिक सिकाइत समितिसँ करए।

सिकाइत के करत?

सामान्यतः पीड़ित व्यक्ति तय समय सीमाक भीतर संबंधित समितिक समक्ष लिखित सिकाइत करतीह। जौँ पीड़ित शारीरिक रूपसँ सिकाइत करबामे सक्षम नहि अछि तँ ओकर बदलामे ओकर संबंधी,मित्र वा सहकर्मी सिकाइत कए सकैत अछि। घटनाक जानकारी रखनिहार किओ उपरोक्त व्यक्तिसभक संगे सिकाइत कए सकैत अछि । जँ पीड़ित व्यक्तिक मृत्यु भए गेल होइक तँ ओहि घटनाक जानकारी रखनिहार किओ व्यक्ति ओकर उत्तराधिकारीक सहमतिसँ सिकाइत कए सकैत अछि ।

अंतरिम आदेश

आंतरिक सिकाइत समितिक द्वारा जाँचक क्रममे अंतरिम आदेश दए दुनू पक्षमेसँ ककरो दोसर कार्यालयमे स्थानान्तरित कए सकैत अछि, पीड़ित महिलाकेँ तीन महिना धरि छुट्टी दए सकैत

अछि,पीड़ित महिलाकेँ ओकरा आओर तंग नहि कएल जा सकए ताहि हेतु उचित व्यवस्था कए सकैत अछि ।

आंतरिक सिकाइत समिति मामलाक दुनू पक्षक आपसी सहमतिसँ समाधानक अवसर दए सकैत अछि मुदा ओहिमे टाकाक लेन-देनक गप्प नहि होइक । मुदा जँ से संभव नहि होइत अछि तँ ९० दिनक भीतर समिति सिकाइतक जाँच कए अपन प्रतिवेदन नियोक्ताकेँ देत जाहि आधारपर सिकाइत सावित भेलापर आरोपित व्यक्तिपर विभागीय नियमानुसार आ से नहि भेलापर निम्नलिखित कारवाइ नियोक्ता कए सकैत छथि-

लिखित माफी

चेतावनी

पदोन्नति/प्रमोशन या वेतन वृद्धि रोकब

परामर्श या सामुदायिक सेवाक व्यवस्था करब

नौकरी सँ निकालि देब

जौँ जाँच-पड़तालक बाद समितिकेँ ई पता चलैत अछि जे सिकाइत झूठ अछि तँ सिकाइत केनहारि महिलाक खिलाफ विभागीय कारवाइक अनुशंसा कए सकैत अछि जाहिकेँ तहत ओकरा चेतावनी,लिखित माफी,पदोन्नति रोकब वा नौकरीसँ निकालबाक कारबाइ कएल जा सकैत अछि ।

उपरोक्त कानूनक धारा १३क अनुसार जाँच समिति प्रारंभिक जाँचमे जौँ सिकाइतकेँ प्रथम द्दष्टया सही पबैत अछि तँ एकरा अनुशासन समितिकेँ विस्तृत जाँचक हेतु पठाओल जाएत । मेधा कोतवालक मामलामे माननीय उच्चतम न्यायलय ई व्यवस्था देलक अछि जे जाँच समितिक रिपोर्ट अंतिम मानल जाएत आ ताहि आधारपर उचित अनुशासनात्मक कार्रवाई कएल जाएत ।

सरकारी विभागमे उपरोक्त कानूनी व्यवस्थाकेँ लागू करबाक पर्याप्त तंत्र विकसित कएल गेल अछि मुदा अखनहु निजी क्षेत्रमे एकरा नीकसँ लागू करबाक हेतु सक्रियताक अभाव अछि जाहिसँ अपूर्णीय क्षति भए रहल अछि । भारतीय संविधान द्वारा प्राप्त समानताक अधिकारक की माने रहि जाइत अछि जखन कि देशक आधा आवादी अपन आस्तित्व ओ सम्मानक रक्षा नहि कए सकए?

कार्यस्थानमे महिला कर्मचारीक संग यौन दुर्व्यवहारकेँ रोकबाक हेतु माननीय उच्चतम न्यायलयक दिशानिर्देश आ संसद द्वारा पारित कानूनक अछैत महिला कर्मचारी सभक एहि प्रकारक समस्याक अंत नहि भए सकल तँ तकर कारण मूलतः हमरा लोकनिक समाजक पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना आ ताहि सँ उत्पन्न पुरुष श्रेष्ठताक भाव अछि । अस्तु,एहि समस्याक निदानक हेतु जरूरी अछि जे पुरुषक मोनमे महिलाक प्रति सम्मानक भावना हो । जे देश हजारों बर्खसँ नारी शक्तिक प्रतिरूप दुर्गा माताक आराधना करैत रहल अछि ताहिठाम से भाव होएब कोनो कठिन नहि हेबाक चाही ।

वकालतनामा

जँ अहाँकेँ कोट कचहरीक चक्कर पड़ल अछि तँ वकालतनामाक बारेमे अवश्य सुनने होएब कारण बिना वकालतनामाकेँ कोनो ओकील अहाँक मोकदमा न्यायालयमे लड़िए नहि सकैत अछि । जहाँ कोनो मोकदमा लड़बाक उद्येश्यसँ लोक न्यायालय बिदा भेल तँ पहिल स्टाप ओकीलक दरबाजापर होइत अछि। ओकील साहबे मोछपर हाथ दैत छथि जे चलू एकटा आओर मोअक्किल फँसल । ओ करबो की करताह? हुनकर तँ ओएह पेशा छनि। बिलारि जँ मूससँ दोस्ती कए लेत तँ जीबत कोना? खाएत की?

सएह बात एतहुँ लागू होइत अछि । सामान्यतः ई देखबामे अबैत अछि जे जँ अहाँ ओकील लग चल गेलहुँ तँ ओ अहाँकेँ मोकदमा लड़बाक हेतु ततेक उत्साहित कए देताह जे होएत जे गाम घुरएसँ पहिनहि मोकदमा केनहि जाइ । मोअक्किलकेँ अपना काबूमे लेबाक हेतु ओकिल साहेब झट दए ओकलातनामा पर दस्तखत करओताह आ किछु फीस सेहो चाहबे करी ।

कै बेर मोअक्किल नहि बुझैत छथि जे ओ कुन-कुन कागजपर दस्तखत कए ओकिलकेँ दए रहल छथि। ओना एतेक विश्वासतँ ओकिलपर करए पड़ैत छैक । एहन कागज सभमे वकालतनामा तँ जरूर रहैत अछि । ओकलातनामा मोअक्किल वा ओकर अधिकृत प्रतिनिधि द्वारा ओकरा एबजमे न्यायालयमे ओहि मामलाक पैरबी करबाक आज्ञा पत्र थिक । एकरा मोख्तारनामा वा ओकीलपत्र सेहो कहल जाइत अछि ।

ओकालतनामामे निम्नलिखित बात होएब जरुरी थिकः-

१. ओकालतनामा निष्पादनक तारिख,

२.केसक नाओँ जाहि हेतु ओकालतनामा बनाओल जाइत अछि,

३.न्यायालयक नाओँ जाहि हेतु ओकालतनामा बनाओल जाइत अछि,

४.अधिवक्ता नियुक्त केनिहारक नाम,

५.ओकिलक नाओँ आ पता,

६.केस संख्या आ केसक शीर्षक,

७.अधिवक्ताकेँ देल गेल शक्ति / निर्णय लेबाक अधिकार,

८. अधिवक्ता नियुक्त केनिहारक आ अधिवक्ता क हस्ताक्षर,

ओकालतनामाक मार्फत ओकिलकेँ बहुत रास अधिकार प्राप्त भए जाइत अछि । मोअक्किलकेँ ओकालतनामापर दस्तखत करएसँ पहिने ओकरा बहुत ध्यानसँ पढ़बाक चाही आ जे अधिकार ओ ओकीलकेँ नहि देबए चाहैत अछि तकरा हटा देबाक चाही । समझौता करबाक अधिकार,ओकिल नियुक्त करबाक अधिकार,पैसा लेबाक अधिकार देलासँ कै बेर बहत क्षति हेबाक संभावना भए सकैत अछि ।

ओकालतनामा केस लड़निहर व्यक्ति स्वयं वा ओकरा द्वारा अधिकृत व्यक्ति हस्ताक्षर कए सकैत अछि। पार्टीक एबजमे व्यापार वा व्यवसाय करए बला व्यक्ति सेहो ओकालतनामापर हस्ताक्षर कए सकैत छथि। जौँ कोनो मामलामे कै गोटे सामिल छथि तँ सभगोटे संयुक्त रूपसँ एकाधिक ओकिलकेँ ओकालतनामा दए सकैत छथि ।

माननीय उच्चतम न्यायालय उदय संकर त्रीयार बनाम राम कलेश्वर प्रसाद सिंह एवम् अन्य(2005(11) TMI-436 SC)क मामलामे ओकालतनामाक संवंधमे विस्तृत मार्गदर्शन जारी करैत स्पष्ट केलक अछि जे कोनो मामलामे ओकालतनामा बहुत सावधानीक संग बनाओल जेबाक चाही आ न्यायालयक रजिष्ट्रीकेँ ई चाही जे सुनिश्चित करए जे ओकालतनामा सही अछि अन्यथा ओकरा शुरुएमे रोकि देबाक चाही जाहिसँ आगू परेसानी नहि होइ। एक बेर ओकालतनामापर संवंधित व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षर भए गेलाक बाद ओकरा तय अवधिमे मामलासँ संवंधित अन्य कागजातक संगे न्यायालयमे जमा कएल जाएत । तकरबाद बिना न्यायालयक मंजूरीकेँ मोअक्किल वा ओकिल वकालतनामाकेँ खारिज नहि कए सकैत छथि। जँ दुनू पक्षमेसँ किओ मरि जाइत छथि वा संवंधित मोकदमाक न्यायालय द्वारा निस्तारण भए जाइत अछि तँ ओकालतनामा स्वतः खारिज भए जाएत।

माननीय उच्चतम न्यायालयक रामप्पय्या बनाम शुभम्मा एवम् अन्य(1947)2 MLJ 580 मामलामे ओकील द्वारा ओकालतनामामे बिना स्पष्ट प्रावधानकैं केसमे समझौता करबाक विषयपर आदेश देलक । अस्तु, ई स्पष्ट होइत अछि जे कोनो मोकदमामे मोअक्कल द्वारा ओकालतनामापर दस्तखत करब बहुत महत्वपूर्ण काज अछि आ तकरा बहुत सावधानीसँ ओकरा पढ़ि कए हस्ताक्षर करबाक चाही । मुदा सामान्यतः लोक आँखि मुनि कए ओहिपर हस्ताक्षर कए दैत छथि। कै बेर ओकर परिणाम प्रतिकूल भए जाइत अछि खास कए जखन कि संवंधित ओकिल तकर दुरुपयोग करए चाहथि । मोअक्कील कैं तकर अनुमानो नहि भए पबैत छनि आ जखन से होइत छनि ताबे न्यायालयमे मामिला बहुत आगू भए गेल रहैत अछि ।

मतभेद आ समाधान

प्रकृतिक समस्त आयाममे समन्वय स्वभाविक रूपसँ देखबामे अबैत छैक । इएह कारण छैक जे एतेक भारी शृष्टि एतेक दिनसँ एना निर्वाध रूपसँ चलि रहल अछि । एतेक ग्रह-नक्षत्रसभ निरंतर अपन काज करैत रहैत छथि । किओ ककरोसँ कखनो टकराइत नहि छथि । एकटा हमसभ छी जे अकारण एक-दोसरसँ टकरेबाक मौका तकैत रहैत छी । परिणामतः यत्र-तत्र-सर्वत्र अशांति पसरि गेल अछि। दुनिआक देशसभ बम बना-बना कए बैसल छथि। जापानपर कहिआ एटमबम खसल तकर विनाशक दृष्य अखनोधरि ओहिठामक लोक नहि बिसरि सकल । लाखो निर्दोष लोक मारल गेलाह । विनाशक विभीषिका एहि हद धरि घातक छल जे पेटक वच्चासभ जन्मसँ पहिनहि मरि गेल आओर जे जन्मल से जन्मजात विकलांगताक शिकार भए गेल । सहर-के-सहर वर्वाद भए गेल । ई सभ किएक भेल? मात्र किछु लोकक अहंकारक हेतु । किछु अतिमहत्वाकांक्षी ,घमंडी लोकनि विश्वविजेता बनबाक स्वप्न लए विश्वक विनाशक कारण बनि गेलाह। कहू,केहन निकृष्ट काज भेल? दोख एटमबमक नहि छल । ओही उर्जाक उपयोग रचनात्मक काजमे कएल जा सकैत अछि । परुमाणु उर्जाक अक्षय श्रोत साबित भए सकैत अछि,भइओ रहल अछि । अस्तु,कोनो शक्तिक हम कोन तरहेँ उपयोग वा दुरुपयोग करैत छी,एहीपर सभटा बात निर्भर करैत अछि।

आपसी समझ आ संयमक अभावक परिणाम जहिना राष्ट्रसभ भोगि रहल छथि तहिना गाम-गाममे व्यक्ति-व्यक्तिक अहंक टकरावसँ समस्यासभ विकराल रूप ग्रहण कए लेने अछि । गामघरसँ अगुता कए लोकसभ सहर अएलाह ,जाहिसँ शांतिसँ जीवि सकी । मुदा कहबी छैक जे गेलहुँ नेपाल कर्म गेल संगे। शहरोमे लोकक प्रवृति

तँ ओएह रहि गेल । लोक बेगर्ते आन्हर छथि। ई नहि बुझैत छथि जे जखन सभकिछु विषाक्त भए जेतैक तँ ओ कोना बचताह ? यत्र-तत्र बैमानीक वर्चस्व भए गेल अछि । कोनो उपायसँ टाका हेबाक चाही। मुदा एहि टाका सँ हेतेक की? दबाइ कीनब से नकली निकलि जाएत,इलाजमे हेराफेरी होएत,वच्चाकेँ इसकूलमे मास्टर पढ़ाओत नहि । एहि तरहेँ एकटा दुष्चक्रमे संपूर्ण समाज फँसि गेल अछि । राष्ट्रसभमे सेहो सएह हाल अछि । सभ एक-दोसरकेँ डरा रहल छथि। ई नहि बुझैत छथि जे काल्हि भेने हुनकोसंगे एहिना होएत ।

जतए मनुक्ख रहत ततए विवाद रहबे करत कारण इहो जीवनक अंग थिक। मतभेद स्वाभाविक थिक,जनतांत्रिक समाजक अनिवार्यता थिक मुदा तकरा सही सर्वमान्य समाधान ताकि लेब सेहो जरूरी अछि। जँ हमरासभकेँ शांतिसँ जीबाक अछि,जँ विकासक गतिकेँ आगू बढ़ेबाक अछि आ अपन समय आ उर्जाकेँ व्यर्थक बातमे नष्ट नहि करबाक अछि तँ दोसरक परिस्थिति आ आवश्यकताकेँ ध्यानमे राखए पड़त । मनुक्खक जीवनक मूल्य तखने बूझल जा सकैत अछि ।

आइ-काल्हि अधिकांश समस्या संवादहीनताक कारण उतपन्न भए रहल अछि । लोक एक-दोसरसँ गप्पे तखने करैत छथि जखन कोनो समस्या ठाढ़ भए जाइत अछि । ई ओहिना भेल जे जखन बरिआती दरबाजापर आबि गेल तँ चललहुँ कुमहर रोपए । आपसी गप्प होइते अछि एहि लेल जे हम एक-दोसरकेँ बुझी । मुदा ताहि हेतु उचित माहौल होएब जरूरी अछि,इहो आवश्यक अछि जे हम पूर्वाग्रहरहित होइ । हमर माथ स्वतंत्रतापूर्वक बातकेँ ग्रहण करबाक स्थितिमे हो । आब जखन झगड़ा भइए गेल तखन गप्प शुरु करबैक तँ ओतेक नीक परिणाम नहि भए सकैत अछि जे कि अन्यथा होइत। गप्प-सप्प जखन होइत रहैत छैक तखन कोनो समस्या अएबो करत

तँ ओकर समाधान नीक माहौलमे भए सकैत अछि । अखन की होइत अछि? कनीकोटा समस्या भेल कि गोली चलि जाइत अछि । निश्चय ई बहुत शोचनीय स्थिति अछि ।

कै बेर लोक लकीरक फकीर भए जाइत छथि । एकटा नहि अनेक एहन उदाहरण भेटत जे लोक बहुत छोट-छोट बातपर अड़िअल रूखि धए लेलथि । परिणाम विस्फोटक भेल । एकबेर भाइ-भाइमे पैतृक संपत्तिमे बटबारा लए कए विवाद बढ़ि जाइत अछि । किओ पाछू हटबाक हेतु तैयार नहि होइत छथि । परिणामतः जे नहि हेबाक चाही से होइत अछि । मानि लिअ जे कोनो घर दूतल्ला अछि आ दुनू भाइ नीचलेक भाग चाहैत छथि,तखन की समाधान हेतैक? ककरो-ने-ककरो तँ पाछा हटए पड़तैक । कै बेर जखन एहन परिस्थितिमे दुनू पक्ष अड़ि जाइत छथि तँ लोक तमासा देखैत अछि आ घर वर्वाद होइत अछि । एहिसँ वचबाक एकमात्र उपाय इएह भए सकैत अछि जे अधिकारकेँ बिसरि समस्याक समाधान कएल जाए जाहिसँ साँपो मरि जाए आ लाठिओ नहि टुटए ।

समस्याक समाधान होइ ताहि हेतु जरुरी थिक जे हम दोसरक बातकेँ निष्पक्ष भए ध्यानसँ सुनी । ओकर परिस्थितिक विचार करी आ एहन उपाय ताकी जे दुनू पक्षक बात रहि जाए । एहन नहि लागए जे किओ ई सोचथि जे हुनकर बात सुनले नहि गेल किंवा सभ एकहि दिस भए गेलाह । कहक माने जे समस्याक समाधान एहन हेबाक चाही जे कालक्रममे आपसी सह्रदयताकेँ बढ़ाबए, ह्रदयकेँ विकसित करए, ने की सकुंचित कए दिअए । तकनीकी आधारपर न्यायलयसँ जीतिओ कए कै बेरि हारि जाइत छी । जेना महाभारतक युद्ध भने पाण्डव जीति गेलाह मुदा तकर बाद बाँचले की जाहिपर राज करितथि आ राज करैत के? एहि विजयसँ ततेक दुख उतपन्न भेल जे किओ

कहिओ सुखी नहि रहलाह आ पाण्डवसभ तँ जीवैत स्वर्गारोहणपर चलि गेलाह। राज नहि भोगि सकलाह ।

हमसभ अपन शक्तिक सही उपयोग कए सकी ताहि हेतु शांतिपूर्ण वातावरण जरुरी अछि । से तँ तखने संभव अछि जखन छोटमोट बातमे हमसभ नहि ओझराइ । जे समस्या सामने आबि जाइत अछि तकर न्यायपूर्ण समाधानक प्रयास करी । जँ एक डेग पाछा गेलासँ बात बनि जाइत अछि,अपन आदमीसँ संवंध मजगूत होइत अछि, तँ से करक चाही । भए सकैत अछि जे तत्काल हमरा घाटा लगैत हो मुदा दीर्घकालमे हम कै गुना बेसी लाबान्वित अनुभव कए सकैत छी । छोटसन एहि जीवनकेँ हम जेना बिता ली। बात-बातपर विवाद ठाढ़ कए लड़ैत-लड़ैत मरि जाइ वा सहनशीलताक परिचय दैत एकदोसरकेँ समावेश करैत जीवन यात्राकेँ शांतिपूर्ण ढ़ंगसँ विता ली,ई हमर सोचपर निर्भर करैत अछि।

कोनो जनतांत्रिक समाजमे असहमतिक स्वरकेँ सुनबाक आ ताहिपर वाजिव विचार करबाक गुंजाइस होएब जरुरी अछि । ताहि हेतु हमरा सभमे पर्याप्त सहनशीलता हेबाक चाही । कोनो जरुरी नहि अछि जे अहाँ दोसरक बात मानिए लिअ मुदा सुनि तँ लिऔ जे ओ की कहए चाहैत छथि । भए सकैत अछि जे अपन बात कहिए देलासँ हुनका संतोख भए जानि आओर ओ सोचथि-“जे चलू हमरो बात सुनल गेल” किंवा ओहिमेसँ किछु एहन तथ्य बाहर होअए जे समस्याक समाधान कए सकए । तेँ मतभेद अछि तँ कोनो बात नहि मुदा मनभेद नहि हेबाक चाही । सही नेत रहत तँ समाधान हेबे करत। तखने समरस आ सुखकर समाजक रचना संभव होएत । सारांश ई जे आपसी समस्याकेँ आपसमे मिलिजुलि कए समाधान कए ली तखने सुख-शांति स्थापित भए सकैत अछि।

अपसकुन आ अंधविश्वास

ओना समाजमे बहुत बातमे बहुत परिवर्तन भेल अछि । आधुनिक विज्ञान जीवनक अर्थे बदलि देलक अछि । घरे बैसल दिल्ली,पटना आ कतए-कतएक दृष्यसभ सद्यः देखल जा रहल अछि। मोबाइल फोन कि आबि गेल, सौंसे दुनिआ लोकक पाकिटमे सीमटि गेल अछि । एकटा समय छल जे लोक रातिमे एगारह बजे फोनक बूथपर जा कए सस्त फोन करैत छल । आओर आब की हाल अछि? फोन तँ लगभग मुफ्त भए गेल अछि । एतेक तरहक बात भेल अछि मुदा लोकक मानसिकता खास कए ग्रामीण क्षेत्रमे ओहिने अछि । अखनो जँ घरसँ निकलैत काल किओ छीक देलक तँ लोक ई कहि आपस भए जाइत अछि जे अपसकुन भए गेल। जँ बिलारि रस्ता काटि देलक तँ लोक आगा नहि बढ़त,आपस भए जाएत । एहने प्रकारक कतेको प्रकारक मान्यता अछि जे गाहे-बगाहे समाजमे ओहिना जड़ि जमओने अछि।

अपसकुनक मान्यताक आधार की अछि से कहब मोसकिल। मुदा ई तँ तय अछि जे परंपरासँ आबि रहल मान्यता थिक जकर कोनो वैज्ञानिक आधार नहि ताकल जा सकैत अछि । जेना अहाँ आगा बढ़लहुँ आ पाछासँ किओ टोकि देलक तँ मोनमे अपसकुनक भय होमए लगैत अछि । तहिना जँ बिलारि बामासँ दहिना रस्ता काटि देलक तँ लोक ओकरा अशुभ मानए लगैत अछि। जँ कतहुँ जेबासँ पहिने छिक्का भए गेल तँ कनी काल लोक ठहरि जाएत तखने आगू बढ़त । एहि तरहक अनेको मान्यता लोकक मोनमे बैसल छैक जे मूलतः अंधविश्वासपर आधारित लगैत अछि ।

जहिना अपसकुनक चर्चा होइत अछि तहिना सकुनोक अपन स्थान छैक। किछु घटना विशेषसँ एकरा लोक जोड़ि दैत अछि । जेना जँ कतहु यात्रापूर्व किओ जल भरल कलश लए सामनेमे ठाढ़ छथि तँ एकरा शुभ मानल जाइत अछि । यात्राक समय जँ नीलकंठ देखा गेल तँ ओ मंगलकारी मानल जाइत अछि। कतहु जेबासँ पहिने दही खेनाइ शुभ भेलैक । एहि तरहेँ नाना प्रकारक किंवदंती कहू,अंधविश्वास कहू, लोकमे प्रचलित अछि जकरा गाहे-वगाहे लोक अनुसरणो कए रहल अछि ।

बात जँ एतबे धरि रहैत तखन तँ कोनो बात नहि । जकरा जे नीक लगैक, करए । मुदा कै बेर इहो देखल जाइत अछि जे एहि तरहक अंधविश्वासक कारणे कैटा निर्दोष लोक तबाह भए जाइत छथि। कैटा विधवा अकारण सामाजिक अपमान ओ प्रतारणाक शिकार भए जाइत छथि । कै बेर तँ एहन पटिदारी प्रतिशोधक कारणसँ कएल जाइत अछि । जौँ ककरो परेसान करबाक अछि वा कोनो ओलि चुकेबाक अछि तँ ओकरा डाइन घोषित कए दिऔक । तकरबाद तँ ओकर जिनगी नर्क भइए कए रहत । काने-कान सौंसे गाममे ई बात पसरि जेबामे कोनो समय नहि लगैत अछि। अकारण अंधविश्वास वा शंकाक कारण निर्दोष लोक अपमानित होइत रहैत छथि । काज-तिहारमे हुनका नहि बजाओल जाइत अछि आ जँ गेबो केलीह तँ किओ हुनका उचित सम्मान नहि दैत अछि । किओ हुनका हाथे चाह-पान नहि लेत। हुनका ओहिठाम जलखै नहि करए चाहत । जौं ओ आङन आबि गेलीह तँ हंगामा भए जाएत । छैक ने जुलूम?

अपसकुनक कोनो हाथ-पैर नहि होइत अछि । ई लोकक मोनमे बसैत अछि आ तकर निवारण मोनेमे भए सकैत अछि । कतहु-ने-कतहु मनुक्खक अज्ञानता सेहो एकर कारण अछि । असलमे लोकक मोनमे अनेरे सक रहैत छैक किंवा भए जाइत छैक जे ई करब

तँ ओ भए जाएत । जीवनक प्रति वैज्ञानिक रुखि भेनहि एहि तरहक अंधविश्वाससँ मुक्ति दिआ सकैत अछि । अपसकुनक जड़ि अंधविश्वासमे होइत अछि । कै बेर पढ़ल-लिखल लोकसभ सेहो एकर चपेटमे आबि जाइत छथि। जखने हम ककरोपर आंखि मुनि कए विश्वास करए लागब तँ एहन समस्या उतपन्न भए जेबाक पूरा संभावना रहैत अछि । तेँ जरूरी अछि जे हम कोनो बात, चाहे ओ केहनो पैघ आदमी ने कहने होइ,तखने मानी जखन अपन मोन तकर स्वीकृति दिअए । कहक माने जे अपन आँखि-कान खोलि कए राखब जरूरी अछि नहि तँ कखनो खत्तामे खसि सकैत छी ।

सामान्यतः ई देखल जाइत अछि जे गाम-घरमे जँ ककरोसँ झगड़ा भेलैक किंवा दिआदी कुन्नह भेलैक तँ ओकरा घरक महिला कैँ डाइन घोषित कए देत । तरह-तरहक खिस्सासभ गढ़ि देत । "हुनका तँ अष्टमीक रातिमे नङ्टे नचैत देखलिअनि ,ओ तँ सावर मंत्र सिद्ध कए लेने छथि,जँ हुनका हाथे चाह पीब तँ गेले घर छी, हे आर जे करब से करब हुनकर नोत नहि मानब ।" मुदा एहिसभक पाछा आओर किछु नहि अपितु ओहि महिला किंवा ओकर परिवारसँ ओलि चुकाएब मूल लक्ष्य रहैत अछि । एकबेर जे किओ डाइन घोषित भए गेल तखन ओकरा सालक साल एहि अपमान आ अघोषित सामाजिक बहिष्कारक सामना करए पड़ैत अछि । एहि तरहक अनेको घटना गाम-घरमे घटित होइत रहैत अछि,निर्दोष लोक अकारण प्रताड़ित होइत रहैत छथि आ तकर कोनो निराकरण नहि भए पबैत अछि,कारण लोकक मोनमे कतहु-ने-कतहु अपनो डर पैसल रहैत छैक-"की पता बात सहिए होइक?"

गाम-घरमे अखनो झाड़-फूकक खूब चलन अछि । ककरो साँप कटलक आ लोक चटिबाहकेँ पकड़ि अनैत अछि । ओ चटिबाहो चाटी चलबए लगैत अछि । जकरा जीवाक भेलैक से जीवि

गेल,मरबाक भेलैक,मरि गेल । ई एकटा संयोगे होइत अछि। जँ ढोंढ़ कटलक तँ जीबि जाएत ,जँ गहुमन वा एहने कोनो विषधर साँप कटलक तँ गेल घर छी । आब ई सभ जनैत अछि जे साँपक डाक्टरी इलाज भए सकैत छैक,तरह-तरहक दबाइक निजात भेल अछि मुदा सभठाम,सदिखन ओ उपलब्धो नहि रहैत अछि,फेर अधिकांश लोक अखनो पुरने अंधविश्वासकें धेने अछि । पहिने गाममे जँ ककरो किछु चोरी भए गेलैक तखनो चटबाहकें बजाओल जाए,बट्टा चलैक आ ओ एमहर-ओमहर घुसकए लगैक,किंवा घुसकाओल जाइक आ कहल जाइक जे चोर ओही बाटे भागल अछि । ततबे नहि,कै बेर निर्दोष लोकक नामो लगा देलि जाइक ।

यद्यपि समय बहुत बदलल अछि मुदा अखनो लोकक कै बेर गंभीर बिमारीक इलाजक हेतु एहन झाड़-फूक करबए पहुँच जाइत छथि। हमरा अधीनस्थ एकटा चतुर्थ श्रेणीक कर्मचारी कै माससँ कार्यालयसँ अनुपस्थित रहैत छलाह । एकदिन अचानक ओ हाजिर भेलाह । हम पुछलिऐक-"एतेक दिनसँ कतए छलह?"

"सर! ऊपरी हवा लागि गेल छल । बहुत प्रयास केलहुँ मुदा जाने नहि छोड़ैत छल।"

अहीं कहू एहन लोकक की कएल जा सकैत अछि? भए सकैत अछि जे ओ भगल केने होइक,वा सहिएमे अंधविश्वासक शिकार रहल हो। एहि तरहक घटना तँ होइते रहैत अछि । लोकक मोनमे गड़ल अंधविश्वासक कम हेबाक नामे नहि लैत अछि ।

अपसकुनसँ बचबाक हेतु लोक तरह-तरहक अंधविश्वाससँ ग्रसित भए तकर निवारणक तरह-तरहक प्रयास करैत छथि । कतेको गोटे तांत्रिकसभक ओहिठाम पहुँचि जाइत छथि आ कतेको तरहक दुर्गतिमे पड़ि जाइत छथि । अपनासभमे कोनो काज करबका हेतु दिन तकेबाक प्रथा अछि । कतहि कोन दिन जाइ,कखन जाइ,अधपहरा

देखि कए जाइ ,एहि तरहे तरह-तरहक विध-विधानक कारण लोकक समय ओ शक्तिक नष्ट तँ होइते अछि संगहि समाजमे एकटा गलत संदेश सेहो जाइत अछि । आब ई समस्या कम भेल अछि जरूर मुदा अरवनो समाप्त नहि भेल अछि। एहि प्रसंगेमे एकटा सरदारजी सँ भेल बातक उल्लेख करैत छी । गप्प-सप्पक क्रममे एकदिन ओ कहलाह जे हुनकासभमे बिआह रविदिनक दूपहर बारह बजे गुरुद्वारामे होइत छैक । ताहि लेल फराकसँ कोनो शुभदिनक प्रतीक्षा नहि कएल जाइत छैक । जँ नीक दिने बिआह केलासँ जीवन सुखी रहैत तँ किओ सरदार जीबे नहि करैत। हुनकर ई बात बहुत वैज्ञानिक बुझना जाइत अछि। हम ई नहि कहैत छी जे अपन आस्थाक प्रश्नपर विवाद ठाढ़ करू, मुदा व्यर्थक बातसभ जेना अपसकुनक भय किंवा किंवदंतीक आधारपर अंधविश्वाससँ अपना आ लगपासक समाजकेँ मुक्त करू । एहिसँ जीवन बेसी अर्थपूर्ण होएत ।

सकारात्मक सोच

एहि संसारमे लोक दिन-राति एही प्रयासमे रहैत छथि जे सुखी रही,नीक घर बनाबी,धीआ-पूताकेँ नीक-सँ-नीक शिक्षा दी,हुनकर नीक नौकरी लागि जानि आ जीवनमे सभ तरहेँ सुव्यवस्थित होथि, जाहिसँ हमआनंद मना सकी । मुदा एहन अवसर जीवनमे बहुत कम होइत अछि । जौँ हम सकारात्मक रुखि रखैत अनकर उपलब्धिकेँ अपने बुझी तँ सुखी हेबाक अवसर अबिते रहत । हम अपने कैटा मकान बना सकब? एकटा-दूटा ,हे तीनटा मुदा लाखोक संख्यामे मकान,फ्लैट आओर लोकसभ बना रहल छथि किंवा बनल बनाओल कीनि रहल छथि। जौँ हम अपना आपकेँ कनी उदार करी आ अनकर सुखसँ सुखी होएब सीखि ली तँ निश्चय बुझु जे हमसभ हजार गुना बेसी

सुखी रहि सकैत छी । नित्यप्रति अपने घरक गृहप्रवेश हेबाक आनंदक अनुभूति कए सकैत छी ।

लोक सोचैत रहैत अछि जे दोसर आदमीसभ कतेक भाग्यवान अछि । सभकेँ अनकर चीज-वस्तु सोहनगर लगैत रहैत छैक। जखन कि कै बेर से बात होइत नहि छैक । असलमे ई संसार विचित्रतासँ भरल अछि । किओ किछु तँ किओ किछु लए मुदा असंतुष्टसभ अछि । जकरा एकटा मकान छैक से दोसरक चक्करमे अछि । जकरा दोसरो मकान भए गेलैक से आओर कथूक पाछु पड़ल अछि । किओ बिरलैके एहन भेटताह जे सभ मानेमे पूर्ण छथि आ जँ से भए जेतैक तँ ओ मनुक्ख नहि रहि जेताह,भगवान भए जेताह । सत पुछल जाए तँ अपूर्णता स्वभाविक थिक । जँ सभ किछु भइए जेतैक तँ हम-अहाँ जीविए कए की करब?

जखन मनुक्खकेँ अभाव हेतैक तँ ओ ओकर प्राप्तिक हेतु प्रयास करत ,प्रयास करत तँ किछु हेतैक,किछु नहि हेतैक । आब एहीठाम आदमी-आदमीमे फर्क भए जाइत अछि । किओ मनोनुकूल परिणाम नहि भेलोपर प्रयास नहि छोड़ैत छथि, अपितु वारंबार प्रयास कए इक्षित फल प्राप्त कए लैत छथि । ओतहि किछुगोटे एहन होइत छथि जे कनीमनी प्रयास करताह आ हाथ बारि देताह । तकरबाद तरह-तरहक कबाइत पढ़ए लगताह ।" हमर तँ भाग्ये खराप अछि। हम कइए की सकैत छी? " एहि तरहक सोचबला व्यक्ति बेसीकाल दुखिए रहैत छथि ।

लोक कतबो पैघ किएक ने भए जाओ,ओकरा समस्या लागले रहैत छैक । मानि लिअ जे किओ प्रधानमंत्री भए गेल तँ की ओ बहुत सुखी अछि, से नहि कहल जा सकैत अछि । एहिबातक किओ गारंटी नहि दए सकैत अछि । कम सँ कम ओकरा दिन-राति एहिबातक चिंता तँ लागले रहैत छैक जे ओकर प्रतिष्ठा बनल रहए,ओ लोकप्रिय रहए,आ

जनतामे ओकर नीक छवि रहैक । ताहि लेल ओ दिन-राति अपसिआँत रहैत छथि । कहक माने जे सुखी होएब कोनो पद वा धनसँ नहि जोड़ल जा सकैत अछि । सही पुछैत छी तँ ई बात लोकक दृष्टिकोणसँ बेसी प्रभावित होइत अछि जे अमुक व्यक्ति सुखी रहताह की दुखी । एकहि बातसँ किओ जान देबए हेतु उतारु भए जाइत छथि तँ ककरो लेल ओएह बात होएब कोनो माने नहि रखैत अछि ।

ककरा कोन बातसँ दुख हेतैक तकर कोनो निजगुत व्याख्या नहि कएल जा सकैत अछि। मुदा एतबा तँ तय अछि जे बहुत रास दुख मनुक्खक स्वयं बेसाहल होइत अछि । कहब से कोना? आब कहैत छी। मानि लिअ जे ककरो बच्चामे गणितक सबाल बुझबाक क्षमता नहि छैक ,तथापि ओ चाहैत छथि जे हुनकर बेटा अभियंता भए जाए,किंवा ककरो बच्चा कहुना कए बीए पास केलक आ ओ अभिलाषा रखैत छथि जे ओ बच्चा आइएएस भए जाथि ,तखन हुनका की हेतनि,निराशा छोड़ि कए किछु आओर हाथ लगतनि? कदापि नहि। इएह बात बुझबाक रहैत छैक । कहबाक माने जे पहिने उत्तर निकालि कए सबाल बनबए चलब तँ की होएत? जीवन यात्राक आनंद सँ एहन व्यक्ति वंचित रहि जाइत छथि जे तखने सुखि हेताह जहिआ सभकिछु हुनकर मोन जोगर भए जेतनि । से ने हेतनि ने ओ कहिओ भरिमोन हँसि सकताह । ने राधाकेँ नौ मोन तेल हेतनि ने ओ नचतीह। सएह हाल बेसी गोटे अपन बना लैत छथि आ तखन दोख देताह भाग्यक ।"हमर तँ भाग्ये खराप अछि?"

"औ बाबू! खराप किओ आन थोड़े केने अछि? कनिको सोचि-विचारि कए चलितहुँ तँ साइत बहुत बेसी सुखी रहि सकितहुँ।

कै बेर जखन भोरे अखबार पढ़ैत छी तँ मोन चिंतित भए जाइत अछि । एक सँ एक योग्य,पढल-लीखल, उच्चपदपर आसीन व्यक्ति आत्महत्या कए रहल छथि । मामुली बात लए पड़ोसीसँ झगड़ा

होइत अछि आ गोली चलि जाइत अछि । सड़कपर बात-बातमे कार सबार मोटर साइकल पर बैसल लोकसंगे गारि-मारिपर उतारु देखल जाइत छथि । आखिर,एना किएक भए रहल अछि? कतहु-ने-कतहि ई लोकसभ अंदरसँ परेसान छथि । मोनमे चैन नहि छनि । पाकल घाव जकँ मौका पबितहि अंदरक विकार बलबला कए बाहर भए जाइत अछि । निश्चित रुपसँ ई चिंताक विषय थिक।

एहि संसारमे साइते किओ भेटत जकरा कोनो-ने-कोनो रुपमे दुख नहि भेल हो । कबीर दास ठीके कहैत छथि-

राजा दुखी परजा दुखी जोगीकेँ दुख दूना ।
कहे कबीर सुनो बाइ साधो एकहु घर नहि सूना ।।

भगवान राम सन चक्रवर्ती आ प्रतापी राजाकेँ कतेको तरहक कष्टक सामना करए पड़लनि। भगवान कृष्णकेँ दुष्टसभक संहार करए हेतु की-की नहि करए पड़लनि । आधुनिक समयमे सेहो एक सँ एक उदाहरण भेटत जतए लोक अपन सिद्धान्त हेतु सर्वस्व दावपर लगा देलनि । नेल्सन मंडेला कतेको साल जेलमे सड़ैत रहि गेलाह मुदा अपन बात पर अडिग रहलाह आ अंततोगत्वा विजयी भेलाह । कहक माने जे दुख सहबाक शक्ति अपना आपमे वरदान अछि। दुख हेबे नहि करए से हमरा-अहाँक वशमे अछि? नहि अछि? तखन तँ ओकर निदान करब आ ताहि हेतु उचित आ आवश्यक धैर्य राखब एकमात्र समाधान भए सकैत अछि । अस्तु, बहुत किछु हमरा लोकनिक मनोवृतिपर निर्भर करैत अछि ।

जावे मनुक्खक जीवन छैक,दुख-सुख लागले रहत । ई प्रकृतिक नियम थिक । सभदिन एकरंग ने ककरो रहलैक अछि आ ने रहतैक । परिवर्तन अवश्यंभावी थिक । तखन की कएल जाए जाहिसँ सुखी आ शांत जीवन जीवि ली? ताहे हेतु गीताक निमन्लिखित श्लोकक ध्यान कएल जाए-

दुखेषु अनुद विग्रमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतराग भय क्रोधः अथितधिः मुनिः उच्यते ।।

कहक मतलब जे जेना जीवन यात्रामे अबैत जाए तकरा तहिना स्वीकार कए चलैत चलू, बढ़ैत चलू । सभ ठीके रहतैक ,ई भावना जँ मोनमे रहत तखने सही मानेमे हमसभ सुखी रहि सकैत छी।

मनक संसार

वैज्ञानिकसभ कहैत छथि जे मनुक्ख अपन दिमागक बहुत लघुअंशक उपयोग कए पबैत अछि । ओकर अधिकांश मानसिक शक्ति व्यर्थ चलि जाइत छैक । हमरा लोकनिक पूर्वज योग आ ध्यानद्वारा अद्भुत मानसिक शक्ति प्राप्त केने छलाह । महाभारतक समयमे संजयकेँ दिव्यदृष्टि प्राप्त रहैक जाहिसँ ओ धृतराष्ट्र लग बैसले-बैसल कुरुक्षेत्रक दृष्यक वर्णन करैत रहल । भए सकैत अछि जे ओ किछु आइ-काल्हिक टेलीवीजनेक प्रारूप रहल हो किंवा ओकर आँखिएमे किछु एहन विशेष शक्ति भए गेल जे ओकरा लेल अदृष्य वस्तु सेहो दृष्य भए गेल । मंत्र द्वारा मोनक शक्तिकेँ कतेको गुना बढ़ा-घटा देबाक सामर्थ्यक चर्च हमसभ अपनसभक शास्त्र-पुराणमे सुनैत रहलहुँ अछि । आखिर मंत्र छैक की? सुनियोजित शब्दक शृंखला मात्र जकर अर्थ ओ ध्वनिसँ मनुक्खक मष्तिष्क प्रभावित भए जाइत अछि। ओना सामान्य जीवनमे हमसभ ई बात देखैत छी जे जँ अनट बात बजलहुँ वा बजा गेल तँ तुरंते सामनेक व्यक्ति तमसा जाएत आ भए सकैत अछि जे जानोपर बनि जाए। कहक माने जे शब्दक प्रभावसँ एहन प्रतिकृया भए गेल। मंत्र सएह काज करैत अछि,एहिमे कोनो सक नहि हेबाक छाही । अस्तु,मनक एकटा अपन अनंत संसार छैक जे हमरा अहाँकेँ कतए सँ कतए लए जेबाक सामर्थ्य रखैत अछि।

देहक मजगूत होएब तखने कारगर भए सकैत अछि जखन ओकरा संगे मोनो मजगूत होइक ,नहि तँ एक-सँ-एक पहलमान सिपाही पातर-छितर अधिकारीक आदेशपर नचैत रहैत अछि । ओतेकटा हाथीकेँ नान्हिटा महावत नचओने रहैत अछि । ओहूमे ओकर मोनेक स्थिति असरदार भए जाइत अछि । सच पुछैत छी तँ आदमी-आदमीमे फर्के ओकर मोनक ऊपर निर्भर करैत अछि । एक आदमी डाक्टर भए जाइत अछि,किओ कलक्टर बनि जाइत छथि तँ ककरो भाग्यमे भरि जिनगी चपरासिएक काज करब रहैत अछि । मुदा एहिसभक पाछु मोनेक शक्तिक चमत्कार थिक ।

ई संसार हमर अपने सोचक प्रतिविम्ब अछि । हम जेहने सोचैत छी,सएह होबए लगैत अछि । जँ हम ककरोसँ नीकसँ गप्प करब तँ ओहो नीकसँ बाजत । जँ हम अलट-विलट काज करब,अंट-संट बाजब तँ जाहिर अछि जे दोसरोक मोनमे तेहने भाव जागत,ओहो तमसाएत । परिणाम केहन होएत से सोचल जा सकैत अछि। आइ-काल्हि की भए रहल अछि? ककरो कोनो मतलब नहि छैक जे ओकरा लगपासक लोक के अछि,केहन अछि? गामो-घरक जीवन बहुत बदलि गेल अछि । लोक चुपचाप अपन दरबाजापर बैसल रहैत अछि। फगुआ हो वा दिआबाती,ककरोसँ किओ भरिमुँह गप्पो नहि करैत अछि । तेहन परिस्थितिमे जँ कोनो विवाद होइत अछि तँ ओ भयानक रुखि लए लैत अछि । संवादहीनताक कारण आपसी सद्भाव नदारद रहैत अछि आ बात एकहि बेर काबूसँ बाहर भए जाइत अछि।

एहन उदाहरण कतेको भेटत जतए लोकसभ कहए लगताह- "की कहैत छी? हमरा तँ साधने नहि अछि ने तँ हम केहन-केहनक कान काटि देतिऐक । मुदा ई सभ बहाना मात्र छैक। एक सँ एक कठिन परिस्थितिमे लोक आगू बढ़बे नहि केलाह अपित समाजक सामने एकटा द्दष्टान्त प्रस्तुत केलाह। कहबी छैक जे रोम एकदिने नहि

बनल । माउंट एवरेस्टपर चढ़बाक हेतु कतेको बेर लोक खसल,कतेको अपन जानोसँ हाथ धोलथि । अंततोगत्वा, विजय भेटल । विजय पताकासभ देखैत अछि मुदा ओकर पाछाक संघर्ष साइते किओ बुझैत अछि । मुदा ई बात तँ मानिए कए चलू जे पैघ उपलब्धिक हेतु ओहने कठोर परिश्रमक प्रयोजन होइत अछि । कोनो पैघ काज करबाक हेतु तेहने सघन प्रयासक प्रयोजन होइत अछि । खुरपी छुलहुँ आ बोनि भए गेल ,ताहि तरहक प्रवृतिसँ जीवनमे उत्कर्षपर नहि पहुँचल जा सकैत अछि । ताहि हेतु चाही दृढ़निश्चयी ,पहाड़सन निस्सन ओ अटल मोन जे रस्ताक संघर्ष ओ कष्ट देखि कए अगुताथि नहि,कर्तव्यपथपर अड़ल रहथि। की मजाल अछि जे एहन अडिग व्यक्तिकेँ सफलता नहि भेटत,भेटबे करत । एहने लोकसभ समाजमे दृष्टान्त बनि जाइत छथि ।

मनक शक्ति अथाह अछि । कतेक तरहक बात कहिआ-कहिआसँ एहिमे संचित रहैत अछि जकर उपयोग हमसभ सुविधानुसार करैत रहैत छी । क्रोध,प्रेम,घृणा,दयाक भावना मनुक्खक मोनमे सुसुप्त रहैत अछि आओर मौका पाबि कए सक्रिय भए जाइत अछि । किओ व्यक्ति जन्मजात क्रोधी,प्रतिशोधी,मतलबी होइत अछि । तँ किओ स्वभावसँ उपकारी,दानी आ उदार एकरा की कहबै? मनुक्खक मोनमे कतेको जन्मसँ संचित कर्म ओकर संस्कारक रुपमे समय-समयपर स्वतः प्रकटभए ओकर स्वभावक रुप दैत अछि। कहक माने जे, जे किछु हम अहाँ कए रहल छी तकर फलाफल एहि जन्ममे तँ भेटिते अछि,बादोमे, आनो जन्ममे हमरसभक पछोड़ करैत अछि ।

मनुक्खक मोनमे परमात्माक बास अछि। ओ जे सोचत से भए कए रहत,बशर्ते ओ आधा-अधूरा प्रयास कए रस्तासँ घुरि नहि जाथि। लक्षकेँ प्राप्त हेबा कालधरि अपन प्रयासमे लागल रहथि ।

मार्गक कष्टसँ व्यथित भए प्रयासकेँ शिथिल नहि करथि । कोनो सबाल नहि अछि जे ओ अपन निर्धारित लक्षयकेँ नहि प्राप्त कए सकथि। मुदा ताहि हेतु चाही धैर्य,ताहि हेतु चाही अनथक प्रयास । जे किओ से केलाह अछि से अवश्य सफल भेलाह अछि ।

सुखी जीवन

अपना ओहिठाम कहल जाइत अछि जे चौड़ासीलाख जोनिमे सबसँ श्रेष्ठ जोनि मनुक्खक होइत अछि। कर्मवश,प्रारव्धवश लोक नाना प्रकारक जोनिमे भटकैत रहैत छथि। बहुत भाग्यसँ मनुक्खक जोनिमे जन्म होइत अछि । कहब जे एहन कोन बात छैक जाहिसँ मनुक्खक जोनिकेँ एतेक प्रमुखता देल गेल अछि । हमरा जनतबे सभसँ विशेषता तँ इएह अछि जे एहि जीवनमे अहाँ कर्म कए प्रारव्धोकेँ बदलि सकैत छी । गाछ-बृच्छ ,चिड़ै-चुनमुन,कीट-फतिंगा सभमे जीवनक समस्त लक्षण देखबामे अबैत अछि । मुदा कर्म करबाक स्वतंत्रता आ तदनुसार जीवनकेँ दिशा देबाक सामर्थ्य मनुक्खेक वशमे बुझाइत अछि,आन कोनो जीव-जन्तुमे अद्यावदि ई शक्तिक जानकारी तँ अखन धरि नहि भेलैक अछि । तेँ मनुक्खक जन्म सर्वोपरि मानल-जानल जाइत अछि ।

आइ-काल्हि जीवनमे भौतिकता ओ बाजारवादक ततेक प्रमुखता भए गेल अछि जे हमसभ सभ चीजकेँ पाइसँ तुलना करैत रहैत छी । अमुक काज केलासँ हमरा कतेक लाभ होएत,कतेक पाइ भेटत?हम की करी जे जलदीसँ जलदी इलाकाक सभसँ पैघ धनीकमे हमर सुमार भए जाए । माने लोकसभ जेना एकटा अंतहीन प्रतिस्पर्धामे सामिल छथि । हमर एकटा मित्र जे प्रसिद्ध चिकित्सक छथि एकदिन कहैत रहथि -" आइ-काल्हि लोक टाका कमेबाक

चक्करमे तरह-तरहक व्योंत कए धीओ-पुताक जन्म टारि रहल छथि मुदा एकटा समय अबैत अछि जखन सभटा कमाओल टाका एकटा बच्चाक जन्म हेतु खर्च करबाक हेतु तैयार रहैत छथि आ कैओ दैत छथि तथापि कै बेर निराशा हाथ लगैत छनि , वच्चा नहि होइत छनि। कहक माने जे जीवनमे सभ चीजक अपन महत्व छैक । सभचीजक अपन समय छैक । हमरा लोकनिकेँ एकटा संतुलन बनाएब जरूरी अछि नहि तँ बादमे पश्चातापे केलासँ की होएत? का बरखा जब कृषि सुखाने? तेँ समयक इसाराकेँ बुझबाक चाही । ई बात बुझबाक चाही जे सुख एकटा भिन्न बस्तु थिक । खोपड़िओमे किओ महराइ गबैत सुखी जीवन जीवि सकैत अछि आ महलोमे रहनिहार समस्त सुख सुविधा अछैत निन्न बिना राति भरि टकटकी लगओने रहि सकैत छथि आ निन्नक गोली खाइत रहैत छथि।

ओना तँ धन-संपत्तिक कोनो अंत नहि अछि मुदा जीवन जीवाक हेतु मौलिक सुख-सुविधा तँ चाहबे करी । रहए लेल घर,पहिरए हेतु वस्त्र आ भुख लगलापर दुनूसाँझ भोजन तँ चाहबे करी। की एतबोपर लोककेँ संतोख होइत छैक ? नहि होइत छैक। आओर इएह थिक अशांतिक जड़ि । कारण जखन हम आवश्यकतासँ बेसी जमा करबाक फिराकमे पड़ब तँ जाहिर छैक जे ककरो वाजिब हक मारल जाएत । जखन किओ सभटा धान अपन बखारीमे एहि लेल भरि लैत छी जे ओकर पौत्र-प्रपौत्रकेँ काज आओत तँ की होएत? अधिकांश लोक भुखले पेटे सुतत। परिणाम? अशांति,जनआक्रोश छोड़ि आओर की भए सकैत अछि?सौंसे संसारमे जरुरत भरि वस्तु भगवान प्रकृतिमे भरि देने छथि। नानाप्रकारक फल,फूल,तरकारीसँ ई पृथ्वी भरल अछि । मुदा हमरासभक स्वार्थी प्रवृतिक कारण अखनो,एहू युगमे जतए विज्ञान एतेक बढ़ि गेल अछि,लाखो लोक भुखले सुतैत अछि । छैक ने दुखक बात?

जहिना जीबाक हेतु मौलिक आवश्यकताक पूर्ति जरूरी अछि तहिना इहो जरूरी अछि जे हमसभ अनावश्यक संग्रह नहि करी। अपना ओहिठाम अयाची मिश्रक कथा बहुत प्रसिद्ध अछि। अत्यंत अभावमे रहितहुँ ओ महराजक मदति स्वीकार नहि केलनि। जे किछु हुनका भगवान देने छलखिन ताहीमे चैनसँ ओ जीबैत छलाह । कोनो हरहर-खटखट नहि । सारांश जे संतोख बड़का बस्तु थिक । एकर बिना हमसभ सुखी नहि भए सकैत छी ।

जीवनमे सुखी रहबाक हेतु शांति बहुत जरूरी अछि । गीतामे भगवान कहैत छथि-"अशांतस्य कुतो सुखम्" । जिनका शांति नहि तिनका सुख कहाँ? शांतिपूर्वक जीवन चलाएब सेहो कला थिक । बहुत देखाबामे किंवा पैघ-पैघ पद भेनहि जीवनमे सुख होएत से जरुरी नहि अछि । सही बात तँ ई थिक जे पैघ पद प्राप्त भए गेलाक बाद लोक ओकरा बचेबाक फिराकमे दिन-राति व्यग्र रहैत अछि । तेँ जरूरी अछि जे जीवनमे संतोखक भाव आबए। से भेनहि शांति भए सकैत अछि । ऐकटा खोपड़ीमे रहनिहार सुखी भए सकैत अछि जँ हुनका संतोख छनि,नहि तँ सभकिछु अछैत लोक भूत जकाँ बौआइत रहि जाइत अछि ।

मनुक्खक जन्म एकटा अद्भुत वरदान अछि । प्रकृति अपन संपूर्ण सामर्थ्यसँ समस्त जीव-जन्तुक निर्वाहक हेतु पर्याप्त साधनक जोगार केने अछि । वायु विना हमसभ कतेक काल जीवि सकैत छी? कनीको काल नहि । पानि पीने विना कतेक दिन जान बाँचत? तहिना सूर्यक प्रकाश , पृथ्वीक आधार हमरासभकेँ प्रकृतिक उपहार अछि । मुदा मनुक्ख अपन स्वार्थमे आन्हर भए सभकिछुपर अपन अधिकार जमओने जा रहल अछि जाहिसँ जीवनमे एतेक संघर्ष अछि । एकगोटे अपन कै पुस्तक हेतु धनसंग्रह करबामे परेसान छथि तँ दोसर केँ

अजुको भोजनक समस्या रहैत अछि । जखन एहन असमानता रहत तखन समाजमे सुख,शांति कोना होएत?

जीवनक आनंदकेँ हम अपनाकेँ दोसरक दुख-सुखसँ जोड़ि कए बेसी नीकसँ अनुभव कए सकैत छी । जखन चारिगोटे मिलि कए कोनो गीत गबैत छी तँ केहन सोहनगर लगैत अछि । सोचिऔ जँ सभ गोटे मिलि कए एकहि भावसँ जीवी,रही तँ कतेक नीक लगतैक । लोक कतेक सुखी रहत । से तँ तखने होएत जखन आपसमे सहयोग आ समाधान होइ । से भेलासँ संपूर्ण वातावरणमे आनंदक बरखा होइत रहत आ जीवनक सही मानेमे हमसभ आनंद उठा सकब ।

आस्था जरुरी अछि

ई संसार आश्चर्यसँ भरल अछि । एहन कोनो वस्तु नहि भेटत जाहिमे प्रकृतिक विचित्रताक अनुभूति नहि होइत हो । से जँ नहि होइत तँ चिरै चुनमुन सँ लए कए समस्त जीवपर्यंत जनमिते अपन माएक संगे कोना सटि जाइत? बाघसँ लए कए गाए पर्यंत अपन संतानक रक्षाक हेतु एना व्यग्र नहि रहैत। केहन अजगुत छैक जे छोट-छोट जीब-जन्तुसभ अपन संतानकेँ एमहर-ओमहर नुकओने फिरैत अछि जे ओकरा शत्रुसँ बचाओल जाए,मनुक्खक तँ कथे कोन ?

एतेक तरहक अन्तर्विरोधसँ भरल एहि संसारमे किछु तँ छैक जे ई चलि रहल छैक । आखिर ओ की अछि? ई प्रश्न कहि नहि कहिआसँ समस्त मानवक मोनकेँ खोचारि रहल अछि। हमरासभ तँ नित्यप्रतिक जीवनमे तेना कए लागल रहैत छी जे बुझाइते नहि अछि जे कोना भोर भेलैक आ करवन साँझ भए गेल। मुदा से सभ प्रकृतिक व्यवस्थाक अनुकूल स्वतः स्वभाविक रूपेँ होइत रहैत अछि आ से तेहन नियमसँ होइत अछि जे कहिओ करवनो एकहु सेकेंड हेतु सूर्य

भगवानकेँ विलंव होइत किओ नहि देखलक,नहि सुनलक । सोचिऔ जे जँ से होइतैक तँ एहि शृष्टिमे प्रलय नहि भए जाइत? तारा, ग्रह सभ एकटा व्यवस्थाक अनुकूल निरंतर चलैत रहैत अछि। जाहि कारणसँ कखनो टकरावक परिस्थिति नहि अबैत अछि । एकटा हमसभ छी जे अनेरे एक दोसरसँ टकराइत रहैत छी। किएक? घमंड कही,अज्ञानता कही ,जे कही । मुदा अछि ई दुखद। हमरा लोकनि निरंतर व्यर्थक चिंतामे पड़ल रहैत छी,कै बेर दुखित भए जाइत छी ,राति-राति भरि जागल रहैत छी जे पता नहि आब की होएत? जे हेबाक छैक से हेतैक आ से भए कए रहत चाहे हम ओकरा पसिन करी वा नहि करी । नियतिकेँ स्वीकार कए एवम् ईश्वरमे आस्था रखलासँ जीवनमे बहुत तरहक परेसानीसँ बचल जा सकैत अछि । जे वस्तु हमर पसिनक भेल से नीक आ जे से नहि भेल तँ आओर नीक कारण ओकरा ईश्वरक इच्छा बूझि स्वीकार कए लेलासँ बहुत रास मानसिक तनावसँ हमसभ बँचि सकैत छी ।

आइ काल्हि लोक तरह-तरहक मानसिक परेसानीसँ गुजरि रहल छथि । बात-बातमे कोट-कचहरी धरि बात पहुँचि जाइत अछि। गाम-गाम गोलैसी होबए लगैत अछि । एना किएक होइत अछि? एही लेल जे हमसभ जथापातकेँ सर्वस्व बूझि रहल छी। नीक विचार ककरो सोहाइत नहि छैक । सब चहैत अछि जे ओ गामक सबसँ पैघ धनीक भए जाए ,चाहे जेना होइ । ककरो ई सोचबाक पलखति नहि छैक जे आखिर अन्यायपूर्वक उपार्जित संपत्तिसँ हम सुखी रहिओ सकब कि नहि ?

जीवनमे अध्यात्मिकताक अभावसँ लोक कोनो तरहसँ धन जमा करएमे लागल रहैत छथि । एहि लोभक कारण नीक-बेजाए कथूक ज्ञान हुनकासभकेँ नहि रहि जाइत अछि । सबाल अछि जे एतेक धन जमा कइओ कए जखन शांति नहि भेटैत अछि तखन की

करी? धनक महत्व छैक ,मुदा एतेक नहि जे कोनो कर्म कए ओकरा पाछा पड़ल रही । एहन लोक अनेको प्रकारक कुकर्म करैत छथि आ अन्ततोगत्वा, स्वतः निर्मित ससरफानीमे फँसि नष्ट भए जाइत छथि ।

कोनो जीव-जन्तुमे सोचबाक विचारबाक क्षमता नहि अछि। मनुक्खमे ओ शक्ति अछि जे ओ बीताल वा आगा होबए बला घटनाक बारेमे सोचि विचारि सकैत अछि । नीक-अधलाहक विभेद कए सकैत अछि । दुर्भाग्यक बात थिक जे जाहि विचार शक्तिक उपयोग मानव कल्याण हेतु भए सकैत छल सएह शक्ति विध्वंशकारी भए गेल अछि । एक सँ एक घातक हथिआर बना कए राखल गेल अछि । एटम बम बनि कए तैयार अछि । एक-सँ-एक मिसाइल बनि गेल अछि जाहिसँ देखिते-देखिते मानवाताक विध्वंस भए सकैत अछि। मुदा लोक आँखि मुनि कए चलल जा रहल अछि ।

किओ कतबो पैघ होअए वा कतबो छोट,प्रकृतिक नियमसभपर समान रूपसँ बिना कोनो अपवादकेँ लागू होइत अछि। जे जनमल अछि से मरत । ई अकाट्य नियम थिक । एक सँ एक धनिक लोक समय अएलापर एहि दुनिआसँ सभ किछु एतहि छोड़ि कए चलि जाइत छथि । सबाल अछि जे ई बात बुझितहुँ हमसभ एतेक बेचैन किएक रहैत छी, दोसरक हक किएक मारि देबए चाहैत छी ? उत्तर सभकेँ बूझल छैक । ई कोनो नव समस्या नहि अछि मुदा मनुक्खक स्वार्थ ओकरा तेना कए आन्हर केने रहैत अछि जे ओ आगू-पाछू किछु सोचि नहि पबैत अछि । एहन नहि हेतैक जे जखन प्रलय हेतेक तँ ओ अनके धरि सीमित रहत । कहक मतलब जे अनिष्टक संग्रह जँ हमसभ करैत रहब तँ ओकर झटका हमरो भोगहि पड़त । जखन एटम बम फुटतैक तँ ओ चिन्हा-परिचय कए लोकक संघार नहि करत ।

अस्तु,शुभ भावनाक संग जीवनमे आगा चलैत रहलासँ लक्ष्य प्राप्ति सुगम होइत अछि संगे जीवनमे स्मृद्धिक संग शांति सेहो भेटैत अछि । अपन उर्जाकेँ सकारात्मक रुखि दैत रहलासँ मनुक्ख एक सँ एक आश्चर्यजनक उपलब्धि प्राप्त करैत अछि । जरूरी एहिबातक अछि जे हम अपन दृष्टिकोणकेँ व्यापक करी आ जहिना अपना हेतु नीक सोचैत छी तहिना अनको लेल सोचिऐक । एहीमे कल्याण अछि,अपनो आ अनको ।

मनुक्ख जखन ईश्वरसँ जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरामे असीम शक्तिक शृजन होइत अछि । ओकर आत्मशक्तिमे चमत्कारिक विकास होइत अछि आ ओ कखनो अपनाकेँ असगर नहि पबैत अछि। ओना सच पूछी तँ मनुक्खक बेसी कष्ट स्वनिर्मित होइत अछि। कोनो काल,केहनो संकटमे जँ हमरा मोनमे ई भाव रहए जे ओ हमरा संगे ईश्वर छथि तँ हमसभ साहसपूर्वक संकटकेँ पार कए विजयश्री हासिल कए सकैत छी ।

वृद्धावस्था

अनादि कालसँ लोक जीवन आ ओकर विभिन्न आयामक बारेमे सोचैत रहल अछि । नाना प्रकारक व्याख्या द्वारा एकर रहस्यकेँ उजागर करबाक प्रयासो करैत रहल अछि । मुदा ई प्रश्न अखनहु अनुत्तरित अछि । हमसभ एहि संसारमे एकदम असहाय,असमर्थ दुधपीबा भए अबैत छी । मातृत्वक अनंत सिनेहसँ माता अपन संतानकेँ कोरामे नुका लैत छथि । ओहि दुधपीबाक कनीकोटा उपलब्धिसँ अपन आनंन्दकेँ जोड़ि लैत छथि। दिन-राति एक कए समस्त सामर्थ्यसँ ओकर पालन करैत छथि। हमसभ क्रमशः ठेहुनिआ दैत छी,फेर ठाढ़ होइत छी,चलए लगैत छी,बजैत छी । सभ किछु

प्रकृतिक विधानक अनुकूल स्वतः होइत जाइत अछि । तहिना हमसभ एकदिन बूढ़ो भए जाइत छी। एहिमे कोनो आश्चर्यक गप्प नहि हेबाक चाही । घटनाक्रम एकटा पूर्ण आवृति लए लैत अछि ।

आब हमरा संगे माताक निःस्वार्थ प्रेम नहि अछि,पिताक रक्षा कवच नहि अछि । धीआ-पूतासभ पैघ भए अपन दुनिआँमे लागि गेल छथि । हमसभ अपन नौकरी किंवा व्यवसायसँ निवृत्त भए गेल छी । देहोमे आब ओ स्फूर्ति नहि अछि। निश्चय ई एकटा नव चुनौती समय हमरा सभक सामने आनि देलक अछि ।

भगवान सूर्य नित्यप्रातःकाल उगैत छथि । सूर्योदयकालमे हुनक आगमनसँ संपूर्ण विश्व आनंदित भए जाइत अछि । अन्हार अपने आप हटि जाइत अछि । लोक अपन-अपन घरसँ बाहर भए काजमे लागि जाइत छथि । पंक्षीगण मधुरगान करैत प्रकृतिमे भए रहल एहि परिवर्तनक स्वागत करैत छथि । समय आगू बढ़ैत अछि। दूपहरिआक तीव्र रौदमे लोक त्राहिमाम करए लगैत छथि। गाछक छाहरिमे सुस्ताए लगैत छथि । किओ ठंडै घोंटि रहल छथि। सभ कहए लगैत छथि,कहुना ई समय जलदी बीतए । भगवान सूर्य समयक प्रवाहक संगे अस्ताचल दिस बढ़ि जाइत छथि । अपन सामर्थ्यकेँ नुका लैत छथि । देखिते-देखिते अन्हार भए जाइत अछि। एहिना मनुक्खक जीवनमे एकटा शिशु क्रमशः युवक,प्रौढ़,आ वृद्ध भए जाइत छथि । ई प्रकृतिक नियम छैक । मुदा हमसभ अस्ताचलगामी सूर्यक हुनक अपन समस्त शक्तिकेँ समेटि लेबाक कलासँ सामान्यतः अनभिज्ञ रहि जाइत छी । जीवनक भोर,दुपहरिआ आ सांझमे जस-के-तस रहि जाइत छी । आ तेँ नानाप्रकारक कष्ट बेसाहने रहैत छी ।

बृधावस्था कोनो एक व्यक्तिक सबाल नहि अछि । ई तँ जीवनक एकटा अनिवार्य आ महत्वपूर्ण भाग अछि । सभकेँ एहिठाम अएबेक छैक । अपना भरि प्रयासे ने करबैक,मुदा सभ किछु ओहने

होइक जेहन हम चाहैत छी वा जे हमर प्रयोजन अछि तखन बाते की छलैक? सामान्यतः से होइत नहि अछि । कतहुँ-ने-कतहुँ,किछु-ने-किछु अनुकूल/ प्रतिकूल होइते अछि ।

तखन कएलकी जाए? ई बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न अछि । एहिमे जीवनमे आध्यात्मिक प्रवृति बहुत सहयोगी भए सकैत अछि। जहाँधरि संभव हो लगपासक लोकसँ संपर्क राखल जाए। रूचिक अनुसार सामाजिक/ धार्मिक संस्थासँ जुड़ल जाए । योग्यता आ क्षमताक अनुसार जरुरतमंदकेँ आर्थिक सहयोग कएल जाए । सारांश जे अपन जीवनक उद्येश्य अपने आ परिवारसँ बढ़िकए समाजोन्मुख कएल जाए । सामान्यतः एहन व्यक्ति बेसी सुखी रहैत छथि । मुदा दोसरकेँ किछु उपकार करब वा बिना कोनो स्वार्थकेँ ककरो मदति कए देब एतेक आसान गप्प नहि होइत अछि । सामान्यतः हम अपन धीयापुतासँ आगू नहि सोचि पबैत छी । ई तय अछि जे किछु अपना संगे नहि जाएबला अछि ,से बात सभ जनितो रहैत अछि,तथापि स्वतःस्फूर्त त्याग करबाक भावना मोनमे नहि अबैत छैक । धिया-पुताकेँ पढ़ा-लिखा देलिऐ,ओकर बिआह-दान भए गेलैक, अपन पैरपर ठाढ़ो भए गेल,आब कथीक झंझटिमे पड़ल छी? अस्तु,हमसभ अपने बनाओल मकड़जालमे फँसल रहि जाइत छी आ कै बेर बहुत कष्टमे समय बिताबैत छी ।

एहन धनक कोन लाभ जाहिसँ कोनो सुखे नहि ? ई तय अछि जे जँ हम अनकर कल्याणमे लगैत छी तँ हमरो हेतु सोचएबला बहुत लोक भेटत । आत्मिक सुख तँ भेटबे करत जे दोसरकेँ मदति केलासँ,त्याग केलासँ प्राप्त होइत अछि । मुदा अधिकांश लोक से सभ नहि सोचि पबैत छथि,करबाक तँ बाते छोड़ू । परिणाम ई होइत अछि जे सभकिछु अछैतो दुख आ अशांतिमे जीबैत छथि आओर एहि दुनिआसँ चलि जाइत छथि ।

वृद्धावस्था अविते हमरा लोकनिक शरीरमे ओ शक्ति नहि रहि जाइत अछि जे युवावस्थामे सदिखन सुलभ रहैत छल । मुदा जीवन भरिक घटना-दुर्घटनासँ अनुभवक भंडार भरि जाइत अछि। हमसभ अपन एहि अनुभवसँ समाजक बहुत उपकार कए सकैत छी। सभदिन तँ हम परिवार ओ समाजसँ लैत रहलहुँ अछि । आब ओ समय आएल अछि जे हम अपन समुचित ज्ञान आ सामर्थ्यसँ लोकक जीवन सुगम बनाबी । से तँ तखने होएत जखन हम स्वस्थ रही । शरीरकेँ संयम ओ व्यायामसँ मजगूत केने रही । हमरा लोकनिकक आर्थिक शक्ति सेहो बढ़ि जाइत अछि । किओ आइ धरि अपना संगे किछु नहि लए जा सकल,हमहु नहि लए जाएब । ई बात सभ जनैत अछि,सभ बजैत अछि,मुदा तकर जीवनमे अनुकरण करैत समय रहिते किछु नीक काज कए लेब,अपन धनक समुचित उपयोग कए लेब बुद्धिमानी होएत । परिवारकेँ ओकर जरुरतक मोताबिक मदति केलाक बाद जे बँचि जाइत अछि तकरा जनकल्याणमे खर्च केलासँ हमर आत्मिक विकास होएत एवम् एहि दुनिआकेँ छोड़ैत काल हमर मोनमे संतोख रहत जे हम ककरो काज आबि सकलहुँ ।

पहिने लोकसभ संयुक्त परिवारमे रहैत छलाह । हुनका बूढ़ भेलापर ई चिंता नहि करए पड़ैत छलनि जे दुखित पड़लापर के अस्पताल लए जाएत? कहीं एहन तँ नहि होएत जे असगर घरेमे पड़ल-पड़ल मरि जाएब आ लगपास लोककेँ तकर सूचना सड़ैत लहाससँ अबैत दुर्गंधसँ भेटत?कहीं एहन तँ नहि होएत जे हमर पार्थिव शरीर कान्ह देबाक हेतु विदेशमे रहनिहार पुत्रक प्रतीक्षा करैत रहि जाएत आ अंततोगत्वा लगपास रहनिहार ककरो दया आबि जेतैक जे मनुष्यतावश हमर कृया-कर्म करत? निश्चय ई सभ सोचैत नीक नहि लगैत अछि। मुदा सत्यसँ आँखिओ तँ नहि मुनि सकैत छी । सामाजिक परिस्थिति बहुत प्रतिकूल भए गेल अछि । तेहन हालतमे

बूढ़ की करथि? जे बात अपन हाथमे अछिए नहि तकरापर बेसी माथापच्ची नहि करथि । भगवानपर छोड़ि देथि ।

एहन बात नहि अछि जे आब लोक साकंक्ष नहि अछि । बहुत तरहक सरकारी संस्थासभ एहि दिशामे काज कए रहल अछि। कानून सेहो बनल अछि । बीमा कंपनी सभ तरह-तरहक योजनासभ आनि लेने अछि। मुदा समस्या तखन हाथसँ बाहर भए जाइत अछि जखन ककरो अपने संतानक खिलाफ जाए पड़ैत अछि । एहन परिस्थितिमे सामान्यतः लोक चुप रहि अन्याय सहैत रहैत अछि । जखन हाथ-पैर काज केनाइ बंद कए देलक तखन कतबो टाका बैंकमे राखल अछि तँ ताहिसँ की उपकार होएत?किछु नहि? चेकोतँ ककरो हाथे पठेबैक ? ई सभ गंभीर व्यवहारिक समस्या छैक जकर सही समाधान अपन समाजमे नहि भए पाबि रहल अछि ।

बूढ़ भेलापर परिवारक सभसँ बेसी प्रयोजन होइत अछि । जीवनसंगीक सानिध्य आ सहयोग जीवनक एहि परावपर सभसँ बेसी जरूरी भए जाइत अछि । दुर्भाग्यवश जे किओ असगर भए जाइत छथि तिनका लेल संघर्ष आओर कठिन भए जाइत अछि । कै गोटे एहन परिस्थितिमे असगर रहैत-रहैत अवसादग्रस्त भए जाइत छथि,आत्महत्याधरि कए लैत छथि । हम एकटा घटनाकेँ जनैत छी जाहि मे दिल्लीक एकटा प्रसिद्ध महिला चिकित्सकक हत्या भए गेल। हत्याक दसो सालसँ बेसी भए गेल मुदा ने किओ पकड़ाएल ने ककरो कोनो जानकारी भेटलैक जे आखिर ई भेल किएक? ओ दिल्लीमे कैटा संपत्तिक मालकिन रहथि । अविवाहित रहथि,असगर रहैत छलीह आ कोनो संवंधीकेँ टपए नहि देथि जे संपत्ति लए लेत । मुदा भेल की ? ओएह संपत्ति हुनकर काल भए गेल ।

असलमे संयुक्त परिवारकेँ टुटि गेलासँ बूढ़क जीवन बहुत कठिन भए गेल अछि । मुदा तकर समाधान की अछि? ई कोनो

व्यक्तिगत समस्या नहि अछि ।गामसँ लए कए सहर धरि सगतरि एहि तरहक परिस्थिति बनि गेल अछि । कानून बनल छैक मुदा ओ व्यवहारिक नहि भए पबैत अछि ।अपने बाल-बच्चाकेँ ऊपर मोकदमा कए कै दिन सुखी रहि सकैत छी ?सभ किछु जनितो किओ भावीकेँ नहि रोकि सकैत अछि ।जे हेबाक छैक से हेतेक। अस्तु,सभकिछु सहबाक अभ्यास करैत रही आ जखन भगवानक घंटी बाजि जाएत तँ शांतिपूर्वक चलैत बनी ।

प्रतिष्ठाक भूख

हमरा लोक बुझए,जे नहि छी सेहो बुझए,समाजमे हमर मान्यता होअए,लोकक दृष्टिमे हम पैघलोकमे जानल-मानल जाइ,ई सभ एहन भावना थिक जे मनुक्खमात्रकेँ परेसान केने रहैत अछि। जकरा आओर किछु नहिओ चाही,जेहो संत-महात्मा भए गेल छथि,विद्वान छथि किंवा उच्चपदासीन छथि , सेहोसभ प्रतिष्ठा अर्जित करबाक हेतु आजन्म प्रयत्नशील रहैत छथि । ओना जँ देखिऐक तँ प्रतिष्ठा प्राप्त करबाक भावनामे किछु अधलाह नहि थिक । कतेको बेर लोक एही हेतु नीक काज करैत छथि । मुदा गड़बड़ तखन होइत अछि जखन हमसभ प्रतिष्ठाक पाछा पड़ि जाइत छी ।परिणामस्वरूप बहुतरास अलट-विलट काज करैत छी ।एहि कारणसँ निरंतर अशांत रहैत छी ।

सकारात्मक प्रयास द्वारा लोक जीवनमे आगू बढ़थि आ प्रतिष्ठा अर्जित करथि,एहिसँ नीक बात की भए सकैत अछि । मुदा कतेकोबेर एहन होइत अछि जे व्यक्तिगत स्वार्थमे अंधभए लोक दोसरकेँ टांग घिचैत छथि जाहिसँ समाजमे अकारण तनाव बढ़ैत अछि आ कतेको बेर निर्दोष लोककेँ परेसानीक सामना करए पड़ैत अछि ।

बिना परिश्रमकेँ दोसरक हक छीनि कए समाजपर अपन प्रभुता स्थापित करबाक एकटा हवा बहि गेल अछि । एहि कारण नीक-बेजाएक भेद खतम भेल जा रहल अछि आ अवसरवादी ओ स्वार्थी लोकसभ तत्काल जीतैत लगैत अछि । एहि तरहेँ समाजक कोनो तरहे हितसाधन नहि होइत अछि । अपितु नीकलोक पाछा भए जाइत छथि जकर कुपरिणाम सभ देखि रहल छी ।

गाम-घरमे प्रतिष्ठाक लेल कतेको लोक की नहि कए लैत छथि। साधनसँ बेसी लंफ-लंफामे रहैत छथि जाहिसँ लोक बूझए जे ओ पैघ लोक छथि । मुदा देखाबटी पैघत्व कै दिन चलत? ओ किछुए दिनमे देखार भए जाइत छथि । बिआह,श्राद्ध,उपनायनमे लोक अगह-बिगह खर्च कए लैत छथि । गामक-गाम भोज करैत छथि जाहिसँ हुनकर यश पसरए ,लोक हुनका पैघ बुझनि । ताहि हेतु खेत-पथार सेहो बेचि लैत छथि । पूर्वमे कतेको परिवार एहिसभक चलते दरिद्र भए गेलाह ।

ई बात तँ तय अछि जे हमसभ जे किछु नीक-बेजाए करैत छी,जे किछु धन-संपत्ति अर्जित करैत छी से सभ एहीठाम रहि जाइत अछि । तेँ बहुतो लोक धन-संपत्ति दान कए दैत छथि। जन कल्याणक काज करैत छथि मुदा ताहूक पाछा हुनकर यशलिप्सा रहैत अछि । बड़का संत-महात्मासभ सेहो यशलिप्सासँ मुक्त नहि भए पबैत छथि । ताहि हेतु तरह-तरहक यज्ञ-जाप करैत छथि,करबैत छथि,ठाम-ठाम मंदिर,धर्मशालाक निर्माण करबैत छथि । गाम-घर त्यागिकए सन्यास लए लेलाह तथापि मोन ओतहि भटकैत रहि जाइत छनि । अपन लोकवेद,अपन जन्मस्थानमे किछु एहन करबाक जिज्ञासा रहिए जाइत छनि जाहिसँ हुनका अपनालोकमे प्रतिष्ठा भेटए। सही मानेमे प्रतिष्ठाक भूखसँ जान छोड़ाएब बहुत मोसकिल काज अछि ।

प्रतिष्ठा मात्र छाँह थिक जकर अपन कोनो आस्तित्व नहि अछि । लोक छाँहक पाछा भागत तँ की ओ भेटतैक ? कदापि नहि? ओ तँ आओर फटकी होइत जेतैक। सएह हाल प्रतिष्ठाक अछि। जँ अपने प्रतिष्ठाकेँ केन्द्रविन्दुमे राखि कए जीब तँ कहिओ जीवनक सत्यकेँ नहि बुझि सकबैक । शक्ति प्रतिष्ठाक पाछा भगलामे नहि अछि । असल शक्ति तँ मनुक्खक अपने हाथमे अछि। ओ की अछि? ओ अछि अहाँक द्वारा कएल गेल कर्म । जँ अहाँ सही कर्म करैत गेलहुँ तँ प्रतिष्ठा के कहए की-की ने अहाँक पाछा-पाछा घुमैत रहत । अस्तु, जीवनमे कर्मक प्रधानता दए निरंतर आगा चलैत रहू, चमत्कार भइए कए रहतैक ।

जे हेबाक छैक से होउ

महाभारतक युद्धक शुरुएमे अर्जुन जखन रणक्षेत्रमे पहुँचलाह आ हुनकर इच्छानुसार श्रीकृष्ण रथकेँ युद्धक्षेत्रक बीचमे ठाढ़ कए देलाह तँ अर्जुन युद्धक दृष्य आ ओहिमे भाग लेनिहार लोकनिकेँ देखितहि अत्यंत दुखी भए कहैत छथि-" हम ई युद्ध किन्नहु नहि लड़ब। एहन राजकेँ पाबिए कए हमरा कोन सुख होएत जे स्वजनक खूनसँ लथपथ होएत । जकरा प्राप्त करबाक हेतु हमरा भीष्म पितामह सन श्रेष्ठ लोकक हत्या करए पड़त । की हम अपन प्रिय गुरु द्रोणाचार्यक मृत्युक कारण बनि राज सुख भोगि सकब ?" भगवान श्री कृष्ण हुनका बहुत बुझओलखिन। हुनकर कहबाक मूल तथ्य इएह रहनि जे अहाँ एहि संसारमे अपन कर्तव्य कर्म करए अएलहुँ अछि,से नहि केलासँ लोक अहाँकेँ कायर बूझत,अहाँपर हँसत । तँ कर्मफलक संपूर्ण त्याग करैत आगू बढ़ू ।" कहक माने जे जीवनमे जे कर्तव्य अछि तकर निर्वाह तँ अवश्य करू मुदा तकर बाद ओकर परिणामक घमर्थनमे नहि पड़ू ।

परिणामक प्रति जतेक कम आसक्ति रहत काजमे ओतेक अधिक मोन लागत ,नहि तँ सदरिकाल इएह सोचैत रहि जाएब जे की होएत की नहि ? जे अपन हाथमे अछि से करू । जे अपना हाथमे अछिए नहि ताहि हेतु माथापच्ची केनाइ व्यर्थ थिक। आइ धरि जतेक पैघ काज भेल अछि ओकर पाछा कर्तव्यक प्रति समर्पण आ परिणामसँ आसक्तिक अभाव रहल अछि । नेल्सन मेंडोला सालक साल जहलमे सड़ैत रहलाह । कोन कष्ट ने भोगलनि। परन्तु अपन सिद्धांतपर अडिग रहलाह तँ एकटा इतिहास गढ़ि देलाह । दक्षिण अफ्रिकाक जननायक भए गेलाह। तहिना अपना देशमे महात्मा गांधी सहित आओर-आओर महान नेतासभ केलनि । जौँ ओ सभ

परिणामक चिंता करितथि तँ किछु नहि कए पबितथि । आधा-अधुरा संकल्प शक्तिसँ जे प्रयास होइत अछि से करवनो अपन लक्ष्यधरि नहि जाइत अछि ।

हमसभ काज शुरु करएसँ पहिनहि सोचए लगैत छी जे एकर फलाफल की होएत । हमरा लाभ होएत कि नहि? हम मनोवांछित फल प्राप्त कए सकब कि नहि ? परिणाम ई होइत अछि जे हमर शक्ति काज करबाक बदला झूठ-मूठ चिंतनमे खर्च भए जाइत अछि । जतेक नीक जकाँ हम प्रयास कए सकैत छलहुँ से नहि कए पबैत छी । विभाजित मनोदशामे कएल गेल काजमे ओ विशिष्टता नहि भए पबैत अछि । जखन काज नीक नहि होएत तँ परिणाम नीक केना होएत?

कै बेर ई देखल जाइत अछि जे इसकूली बच्चाक परीक्षाक परिणाम अनुकूल नहि अएलापर अभिवावक ओकरा तरह-तरहसँ प्रताड़ित करैत छथि । एहिसँ किछु लाभ नहि होइत अछि । जखन जे करबाक छलैक से केलहुँ नहि । बच्चाक पढ़ाइ दिस ध्यान जाइ तकर व्योंत केलहुँ नहि,दिन-राति टाका कमेबाक जोगारमे लागल रहलहुँ आ जखन बच्चा इसकूलमे फेल भए गेल तँ ओकरा मारि-पिटि रहल छी । ई कोन वुद्धिमानी भेल? जखन परिणाम बाहर भए गेल तँ आब आगाक तैयारी करक चाही । वच्चाकेँ कहक चाही जे ओ हतप्रभ नहि होअए ,आगा आओर अवसर अएतैक । अपन प्रयास करैत रहए मुदा हमसभ सामान्यतः उल्टे करैत छी । परिणाम होइत अछि जे वच्चाक मनोवल टुटि जाइत अछि । ओ कै बेर कुमार्गमे पड़ि जाइत अछि । गलत लोकक संगतिमे चलि जाइत अछि । आ एहिसभक जड़िमे रहैत अछि अभिवावक गलत दृष्टिकोण । हमरा लोकनि परिणाम अनुकूल हेबाक लिप्साक आगू नेन्नाक भविष्यकेँ झोकि दैत छी । एहनमे कतेको होनहार नेन्ना बरबाद भए जाइत छथि । एना किएक होइत अछि? एहीलेल जे हमसभ जेना-तेना चाहैत छी जे फल हमर इच्छाक

अनुकूल होअए,चाहे काज तेहन भेल होइ कि नहि । व्यवहारिक जीवनमे एहन कतेको उदाहरण भेटत जतए फलक प्रति अनावश्यक आशक्तिक कारण लोक निहित कर्तव्यक निर्वाह नहि कए पबैत छथि जकर विनाशकारी परिणाम होइत अछि ।

हमरा लोकनि एहि संसारमे किछु समयक हेतु अबैत छी । सभ अपन-अपन परिस्थितिक अनुसार जीवनमे संघर्ष करैत छी आ समय पूरा भेलापर चलैत बनैत छी । जीवन चलैत रहए,सुख सुविधा रहए ताहि हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहैत छी । मुदा सभके भाग्य एकरंग नहि होइत अछि । किओ जनमितहि अछि संपन्नतामे तँ किओ दरिद्रक घरमे । जाहिर छैक जे शुरुएसँ लोक फराक-फराक रस्तापर चलबाक हेतु मजबूर भए जाइत अछि ।

जतेक शांत मनसँ काज होएत,कर्मक गुणवत्ता ततेक नीक रहत । स्वभाविक थिक जे परिणाम तेहने नीक रहत आ जँ मनोवांछित परिणाम नहिओ भेल तँ उद्विग्नतासँ की लाभ होएत? तेँ ई जरुरी अछि जे गीतामे भगवान द्वारा देल गेल संदेशक भावकेँ बुझैत काज करबाक चाही । हमरा अहाँक वशमे काज करब अछि, से नीक सँ करबाक चाही आ तकर बाद जे होइत अछि तकरा सहर्ष स्वीकार करी । जँ अपना मोनक भेल तँ नीक आ जँ ओहिसँ भिन्न भेल तँ सेहो भगवानक इच्छा बुझि स्वीकार कए ली ।

कै बेर मोनमे ई बिचार उठैत अछि जे हम तँ ई केलहुं ,ओ केलहुं,सौंसे जिनगी नीक काज भेटल मुदा हमरा की भेटल । हमरा तुलानमे दोसरसभ एक-सँ-एक पदपर पहुँचि गेलाह । हम ठामहि छी। हम पढ़एमे बेसी तेजगर छलहुँ मुदा हमरासँ बहुत कम नंबर आबएबलासभ बेसी सफल रहलाह । असल जीवन दू दूना चारि जकाँ नहि चलैत अछि । एकर कोनो गणित नहि छैक । कारण की अछि से नहि कहल जा सकैत अछि। मुदा ई बात तँ तय अछि जे जँ

हम जे कए सकैत छलहुँ से जँ कए लेलहुँ तँ हमर अपने मोन गबाही देत,हम संतुष्ट रहब । असलमे नीक प्रयास,नीक काजकहेतु कएल गेल प्रयत्न स्वयंमे पुरस्कार थिक । काज हमरा हाथक गप्प थिक, तकर की फल हेतैक से सदरिकाल अपने हाथमे नहि रहैत छैक । अस्तु,अपन कर्तव्य करू आ गीत गाउ । जे हेबाक छैक से होउ ।

मृत्युक भय

नित्यप्रति कतेको लोक जन्म लैत छथि,मरैत छथि । तै पर हमरसभक ध्यान तखने जाइत अछि जखन ओहिमे हम भावात्मक रूपसँ जुड़ल रहैत छी । जँ हमर किओ अपन लोक मरि जाइत अछि तँ हम बफारि तोड़ए लगैत छी । पैघसँ पैघ ज्ञानी-ध्यानी मृत्यु-शोकसँ नहि उबरि पबैत छथि । एहने परिस्थितिमे अर्जुनकेँ पुत्रमोहमे अतीव कष्टमे देखि भगवान हुनका पूर्वजन्मक दृष्य देखेलथि । ओ देखलाह जे अभिमन्यु खेला रहल छथि । जोर-जोरसँ अर्जुन हुनका बेटा-बेटा कहिकए बजबए लगलाह । अभिमन्यु कहलखिन-"की बेटा-बेटा चिचिआ रहल छी? अहाँकेँ पता हेबाक चाही जे कतेकोबेर अहाँ हमर बेटा भए चुकल छी । एकबेर हम बेटा भेलहुं से अहाँकेँ बिसरा नहि रहल अछि । अर्जुनक आँखि खुजि गेलनि । ओ पुत्रक मृत्युशोकसँ उबड़ि गेलाह आ युद्ध करबाक हेतु आगा बढ़लाह । ओ तँ महान छलाह जे भगवान स्वयं हुनका सभ बात बुझबैत रहैत छलखिन । मुदा सामान्य आदमीकेँ तँ स्वयं सोच-विचार करए पड़ैत अछि । एक-दोसरसँ दुख बाँटि ओ समयानुकूल विमर्श कए संसारक दुखकेँ कम कए लैत छथि । आओर दोसर कोनो रस्तो नहि अछि । जँ जीबाक अछि तँ परिस्थितिसँ सामंजस्य बनाएब अनिवार्य थिक ।

जीवनक प्रति मोह कहू आ कि मृत्युक प्रति अज्ञात भय,किओ एहि दुनिआ सँ मरए नहि चाहैत अछि चाहे ओ भिखमंगा होथि वा अस्पतालमे पड़ल चिररोगी । किओ कतबो पैघ किएक ने होथि हुनका जीवनक एहि अकाट्य सत्यसँ सामना करै पड़ैत अछि। किओ बँचिकए नहि जा सकैत अछि । जखन युधिष्ठिर यक्षक प्रश्नक उत्तर दैत कहने रहथि जे संसारक सभसँ आश्चर्य बात इएह अछि जे नित्यप्रति कतेको लोककेँ मरैत देखि लोककेँ नहि लगैत अछि जे ओहो एकदिन एहि संसारसँ चलि जाएत । सही कहने रहथि । जँ कोनो उपाय रहितैक तँ एक-सँ-एक प्रतापी,धनीक आ विद्वान नहि मरितथि।

कै बेर तात्कालिक परेसानीमे लोक मृत्युकेँ स्वेच्छासँ स्वीकार कए लैत छथि । जेना जखन किओ बहुत बएस भेलाक बाद जीवनसँ बैराग भए जाइत छनि । किंवा ओ सोचैत छथि जे एहि जीवनमे आब ओ व्यर्थ भए गेल छथि । एहनमे कै गोटे आमरण उपास कए प्राणत्याग कए दैत छथि । कैटा संत-महात्मा सेहो एहिना प्राण त्याग कए दैत छथि । कै बेर कोनो मांगक पूर्ति हेतु लोक अनशनपर बैसि जाइत छथि । एहनमे कै गोटेक मृत्यु भए जाइत अछि । हमरा विचारसँ एहि तरहेँ जीवनक नाश कए लेब कोनो बुद्धिमानी नहि थिक। जीवन ईश्वरक वरदान अछि । एकरा नीकसँ जीव आ उपयोगी बनओने रहब हमरा लोकनिक कर्तव्य थिक ।

जे भेनहि छैक,जकर कोनो वचाव नहि छैक तकरा जतेक सहजतासँ स्वीकार कएल जएह सएह वुद्धिमानी थिक । जँ मृत्युसँ वचबाक कोनो उपाय रहितैक,तँ कोनो पैघलोक नहि मरैत,अमर भए जाइत । मुदा से संभव नहि अछि । प्रकृतिक समस्त नियम सभपर समान रूपसँ लागू होइत अछि । मृत्यु सेहो तकर अपवाद नहि अछि। राजा,रंक,फकीर सभ एकदिन एहि संसारसँ विदा होइत छथि ।

गीतामे कृष्ण भगवान मृत्युक विषयमे वारंबार कहैत छथि जे मृत्य तँ मात्र एहि शरीरक होइत अछि । ओहिमे विद्यमान आत्मा अजर,अमर अछि । जहिना लोक पुरान अंगाकेँ फाटि गेलाक बाद नव अंगा पहिरए लगैत छथि तहिना ई आत्मा पुरान देहकेँ छोड़ि कए नव शरीर ग्रहण कए लैत छथि । मृत्युक भयसँ बचबाक एहिसँ बढिआँ समाधान नहि भए सकैत अछि। मुदा मोनो मानए तखन ने । कतेको लोक एहि देहेकेँ सर्वस्व बुझि कए नानाप्रकारसँ एकर रक्षाक व्योंतमे लागल रहैत छथि आ तरह-तरहसँ एकरा सुखी ओ संतुष्ट करबाक प्रयास करैत छथि । देहक नाश अवश्यंभावी अछि। एकरा माध्यमसँ प्राप्त सुख सेहो अनंतकाल धरि नहि रहि सकैत अछि । समय सापेक्ष समस्त जीवन प्रकृयासँ मोहवश हमसभ आवद्ध रहैत छी आ नाना प्रकारक दुख भोगैत छी । इएह सभसँ पैघ विडंबना थिक।

जीवन आ मृत्यु एक-दोसरसँ जुड़ल अछि । जे जन्मल अछि से मरत । एकर कोनो विकल्प नहि छैक । एहिसँ वचावक कोनो रस्ता नहि छैक । राजा,रंक,फकीरसभ एकदिन एहि संसारसँ चलि जाइत अछि। सबाल ई अछि जे मृत्युक बाद की होइत छैक? की मृत्यु अपना-आपमे अंत अछि किंवा ओकर बादो ई चक्र चलैत रहैत अछि? एहि प्रश्नक जबाब देबाक प्रयास बहुत दिनसँ भए रहल अछि परंतु कोनो निजगुत उत्तर किओ आइ धरि नहि दए सकलाह। कारण जे वस्तु दृष्य छैहे नहि तकर वास्तविक धरातलपर की व्याख्या कएल जा सकैत अछि? अपन धर्मशास्त्रमे मृत्युक बादो आत्माक अमरताक गप्प अछि । कहल जाइत अछि जे शरीरक नाश होइत अछि,आत्माक कथमपि नहि । लोक अपन कर्मक अनुसार पुनर्जन्म लैत अछि । बात जे होइक,लोक मृत्युक बाद जन्म लैत छथि वा नहि,से विवादक किंवा परिचर्चाक विषय भए सकैत अछि मुदा एतबा तँ तय अछि जे मृत्यु

अवश्यंभावी अछि । जखन से बात सभ जनिते छी तखन तकर भय कथीक ?

प्रतिशोध

सोचिऔ जे सभकिछु जँ अपने मोनक अनुसार होइतैक तँ ई दुनिआ कतेक रमनगर रहितैक? मुदा से होइत छैक? कदापि नहि? एक-सँ-एक पैघ लोक एहि प्रयासमे लागल रहलाह जे ओ जे चाहथि सएह होइक,हुनकेटा चलनि आ जे से नहि करैत अछि तकरा तेहन दंड देल जाए जे आओर किओ फेर तेहन गलती करबाक साहस नहि कए सकए? मुदा रावणोकेँ से कएल नहि भेलैक । कहबी छैक जे सभकिछु ओकर अधीन भए गेल रहैक,तइओ जखन समय अएलैक ओ कालक अधीन भए एहि दुनिआ सँ चलि जाइत रहल । सौंसे जिनगी ओ प्रतिशोध लैत रहल। लक्षमण सूर्पनखाक नाक काटि देलखिन । ताहि बातसँ अपमानित भए सूर्पनखा रावण लग पहुँचल आ ओकरा तरह-तरहसँ एहि अपमानक बदला लेबाक हेतु उत्तेजित केलक । प्रतिशोधक आगिमे धधकैत अहंकारी रावणक वुद्धि भ्रष्ट भए गेल आ ओ एकपर एक गलती करैत चलि गेल । सीता हरण सेहो तेँ भेल छल । परिणाम की भेल? ओकर घरहंज भए गेल । कहबी छैक जे रहा न कुल कोइ रोवन हारा । रावणक सभकिछु चल जाइत रहलैक। तेँ प्रतिशोध बहुत हानिकारक भावना थिक जे मनुक्खकेँ कै बेर राक्षस बना दैत अछि आ ओ एहन काज सभ कए बैसैति अछि जे ओकरा बादमे स्वयं पश्चाताप होइत छैक । जरुरी अछि जे समय रहिते मनुक्ख चेति जाए आ बेसी फसाद नहि करए।

अपन शास्त्र-पुराणमे एहन खिस्सासभ भरल अछि जाहिमे प्रतिशोध लेबाक कारण देबता-राक्षसमे कतेको युद्ध भेल । महाभारत

तँ ऐहि तरहक घटनासँ भरल अछि । द्रोपदी दुर्योधनपर हँसि देलथि,किछु अनट बात कहि देलथि ,ताहि बातसँ अपमानित दुर्योधन की-की केलक से ककरा नहि बूझल अछि । बात एहि हदधरि चलि गेल जे भरल सभामे छल द्वारा द्युतमे पाणडवसभकेँ हरा कए हुनकर राज-पाटसभटा तँ चलिए गेल,अपितु द्रोपदीकेँ नाङटकए आनल जेबाक प्रयास भेल । ओहिसभामे कर्ण सेहो अपन अपमानक बदला लेबएमे नहि चुकलाह आ द्रोपदीकेँ की-की ने कहि देलखिन ,किएक? एही लेल जे ओ हुनका संग द्रोपदी बिआह करए हेतु तैयार नहि भेल रहथि,कारण जे रहल हो । एहन शुर-वीर लोकसभ एहन नीचतापर उतरि गेलाह कारण हुनकासभपर प्रतिशोधक भूत सबार छल । परिणामक चर्च करब आवश्यक नहि अछि । सभ जनैत छी जे तेहन भयानक युद्ध भेल जे घरहंज भए गेल । अहीं कहू,एहिमे के जीतल?

मनुक्खक जखन तामस हदसँ बेसी भए जाइत छैक आ ओकरा लगैत छैक जे ओएहटा सही अछि, सभ ओकरासंगे अन्याय कए रहल छैक तँ ओ बदला लेबाक भावनासँ दोसर व्यक्तिक क्षति करैत अछि । मुदा तामसेटामे एहन काज होइत छैक से बात नहि अछि । जेना कै बेर लोक सोचि-विचारि कए सेहो एहन काज करैत अछि जाहिसँ जे व्यक्ति ओकर क्षति केलक तकरा सूदि,मूर समेत घाटा कएल जा सकए । मूलतः ओलि चुकाबक हेतु लोक एहन काज करैत छथि । जाहिर बात छैक जे एहन निषेधात्मक विचारसँ कोनो शुभ नहि भए सकैत छैक ।

जीवन अछिए कतेकटा? देखिते-देखिते लोक बच्चासँ बूढ़ भए जाइत अछि । जौं एहि ब्रह्मांडक आयुसँ तुलना करी तँ हमरा लोकनि जीवन ओकर एकटा बहुत छोट क्षणक समान अछि । एतेक छोट जीवनमे कतेक उठापटक हमसभ कए लैत छी । कै बेर तँ छोट-छोट बात हेतु अपने लोकक हत्यापर उतारू भए जाइत छी। पुछब जे

की करी,अन्याय सहब कोन नीक बात भेल? एहि तरहक बहुत तर्क देल जा सकैत अछि आ सएह सभ कहि लोक आवेशमे , प्रतिशोधपूर्ण काज करैत छथि जाहिसँ अपनेटा नहि अनको दुखी करैत रहैत छथि। जीवनमे संतुलन बनाकए रहलासँ एवम् सहनशील रहलासँ बहुत रास समस्याकेँ आसानीसँ सलटल जा सकैत अछि । अपन उर्जाक सकरात्मक उपयोग जँ हमसभ करब तँ अपन उन्नति तँ हेबे करत बहुत रास आनो लोकसभक उपकार कए सकब । मुदा ताहि लेल तँ क्षमाशील होएब बड़ जरुरी अछि । नहि तँ छोट-छोट बात हेतु हमसभ दिन-राति व्यग्र रहब । कमसँ कन चैनसँ तँ नहिए रहि सकब।

एहन बात नहि अछि जे बदमास वा कम पढ़ल-लिखल लोक प्रतिशोधी होइत छथि । अपितु, एक-सँ-एक पढ़ल-लिखल,विद्वान आ उच्चपद आसीन व्यक्तिसभ कै बेर ततेक प्रतिशोधी होइत छथि वा भए जाइत छथि जे जानवरोकेँ पाछा छोड़ि दैत छथि । जौँ अपने हुनकर अहंपर कतहु चोट कए देलिअनि तरखन तँ भगवाने मालिक । जाहिर थिक जे मनुक्खक जतेक अहंकारी,क्रोधी होएत ओकरामे प्रतिशोधक मात्रा ततेक बेसी होएत। आइ-काल्हि तँ ई हाल अछि जे मामूली बातपर गोली चलि जाइत अछि जेना मनुक्खक जीवनक कोनो मूल्ये नहि होइक। रस्ता चलैत जँ अहाँक मोटर साइकल कारसँ टकरा गेल तँ भए सकैत अछि जे दोसरे क्षण गोलीक आबाजसँ कान बहीर भए जाए। अखबार रोज एहन घटनासँ पाटल रहैत अछि । पड़ोसीसँ गाड़ीक पार्कींगपर झंझट भेल आ दोसरे क्षण कैटा लहास देखए पड़ि सकैत अछि । कतेक दुखक गप्प थिक जे मनुक्ख जीवनक जेना कोनो मोले नहि रहि गेल होइक । अस्तु,प्रतिशोध निश्चय राक्षसी प्रवृति थिक एवम् एकर त्याग करबेमे सभक कल्याण अछि।

आइ-काल्हि छोट-छीन घटनासभ भयानक रुप ग्रहण कए लैत अछि । मामुली बातमे लोक हिंसापर उतारु भए जाइत अछि आ

जान लेब तँ जेना सामान्य बात भए गेल अछि । अखबार एहन समाचारसँ भरल रहैत अछि। आखिर, मानवमूल्यक एहन क्षरण किएक भेल? जाहि देशमे चुट्टी-पिपड़ी धरिकेँ ईश्वरक अंश मानि पूजा कएल जाइत रहल अछि ताहीठाम ईश्वरक सुंदरतम कृति मनुक्खक किछु मोल नहि रहि गेल अछि । कैठाम तँ एहन देखल गेल जे पचीस-तीस टकाक झगड़ामे आदमीक जान चलि गेल । ई महज दुर्घटना नहि कहल जा सकैत अछि । असल बात ई अछि जे मनुक्खक देहमे लोक राक्षसक रुप धए लैत अछि,कखन? जखन ओकरामे निषेधात्मक प्रवृतिक बहुलता भए जाइत अछि ,जखन लोक स्वार्थमे आन्हर भए किछु करएपर उतारु भए जाइत अछि । एहने समयकेँ लोक कलियुग कहैत अछि । अहाँ कहि सकैत छी जे समस्या तँ बुझलहुँ मुदा सबाल अछि जे एहि परिस्थितिसँ उबरी कोना?

निश्चित रुपसँ प्रतिशोध एकटा गंभीर समस्या अछि जकर निवारणक कोनो सर्वमान्य समाधान नहि भए सकैत अछि कारण ई व्यक्तिक स्वभावसँ जुड़ल समस्या अछि । व्यक्ति-व्यक्तिक स्वभाव फराक-फराक होइत अछि । किओ कनी जल्दिए अगुता जाइत छथि तँ किओ बहुत सहनशील होइत छथि । मुदा जाधरि हमसभ तामसक त्याग नहि करब आ व्यर्थक अहंकारसँ ऊपर नहि उठब ताबे प्रतिशोधक आगिमे जरिते रहब । क्षमाशील व्यक्तिमे प्रतिशोधक भावना कम भए जाइत अछि । तेँ हेतु हमसभ जँ क्रोध,अहंकार सन-सन निषेधात्मक भावनासँ जतेक फराक रहब,जतेक बँचल रहब, प्रतिशोधक आवेगसँ ततबे बँचब आसान भए जाएत ।

प्रतिशोधक परिणाम कै बेर बहुत घातक होइत अछि जाहिमे घुन संगे सातुओ पिसा जाइत छथि । जापानपर बम खसलैक तँ भने अमेरिका, ब्रिटेनसभ युद्ध जीति गेल मुदा मानवताक जबरदस्त पराजय भेलैक । हजारो निर्दोष नागरिक जे युद्धमे भाग नहि लए रहल

छल मारल गेल वा अपाहिज भए गेल । आइ-काल्हि कतेको देश भयानक आणविक हथिआरसभ जमा केने छथि । जाहिर छैक जे ओहि हथिआरसँ कोनो पूजा-पाठ तँ हेतैक नहि? जखन कखनो आ जे किओ ओकर उपयोग जाहि कोनो कारण सँ करत तँ ओ नरसंहारे करत। सबाल ई अछि जे हमसभ एतेक उन्नत सभ्यताक अंग होइतहुँ एहि दुनिआकेँ एहि तरहक मानव निर्मित प्रलयसँ बचा सकैत छी कि नहि? ओ तँ तखने संभव होएत जखन एक-एक व्यक्तिमे मानवीय गुणक अधिकता हेतैक जाहिसँ ओकर तामसी प्रवृति हल्लुक पड़ि जाइ। तखने मनुक्ख मात्रक कल्याण संभव अछि ।

चिंता छोड़ू,सुखी रहू

चिंता करब मनुक्खक कमजोरी थिक । जाहि व्यक्ति वा वस्तुसँ लोककेँ जतेक बेसी लगाव रहैत अछि तकरा विषयमे ओ ततेक बेसी सोचैत अछि । सोचलासँ होइते की छैक?किछु नहि,अपितु स्वास्थ्य सेहो गड़बड़ेबाक संभावना भए जाइत अछि । मुदा मोन अछि जे मानिते नहि अछि आ लोक वारंबार चिंता करैत रहैत अछि । असलमे चिंता करब नकारात्मक प्रवृत्ति थिक । एहिसँ किछु लाभ नहि होइत अछि । तथापि लोक स्वभाववश चिंता करिते अछि । जीवन अपना आपमे बहुत रहस्यात्मक अछि । करवनो किछु,करवनो किछु होइते रहैत अछि । ओहि सभकेँ शांतिपूर्वक निबाहैत जीवन यात्राकेँ गंतव्य धरि पहुँचाएब एकटा महान यज्ञ थिक । एहन बात नहि छैक जे गरीबेकेँ कष्ट रहैत छैक। जीवनमे दुख-सुख लागले रहैत अछि। की पैघ की छोट सभ एहि अवस्थासँ प्रभावित होइत छथि । तखन केहनो अवस्थामे जिनकर विश्वास बनल रहैत अछि से जीवनमे आगू बढ़ि जाइत छथि । जिनका से नहि होइत अछि वो तरह-तरहसँ परेसान भए जाइत छथि ।

सुख-दुख तँ जीवनमे लगले रहैत अछि । एहन नहि होइत अछि जे सभदिन अन्हरिए रहए । जँ धैर्यपूर्वक समयक संगे चलैत रहब तँ आइ ने काल्हि इजोरिओ अएबे करत । कहबाक माने जे धैर्यपूर्वक सही दिशामे प्रयासरत रहलासँ हाथक रेख सेहो बदलि जाइत अछि । कोनो जरुरी नहि अछि जे हम जएह चाहबै सएह हेतैक । मुदा जे भए रहल अछि तकरा सहर्ष स्वीकार कए, बिना बेसी उठापटककेँ जीवन जीवाक कला विकसित कएल जा सकैत अछि । मोनमे संतोख होअए तँ कनीकोमे लोक शांतिपूर्वक जीवन चला सकैत अछि। आखिर किओ किछु लादि कए अपना संगे नहि लए जा सकल,ने

आगुओ किओ लए जाएत । ई बात सभ बुझैत अछि । तखन समस्या कथीक अछि? मोनक फेर छैक आओर किछु नहि । दोसर संगे जे हम अपनाकेँ तुलना करैत छी सएह कष्टकारी प्रयोग भए जाइत अछि। सभक अपन कर्म छैक । अपन-अपन भाग्यसँ लोक जीवैत अछि । एहिमे ककरोसंगे घेंटजोड़ी करबाक कोन काज? कोनो जरुरी नहि जे जकरा हमसभ बहुत सुखी आ संपन्न बूझैत छी से सही मानेमे सुखी होथि । अंदरक हाल तँ ओ स्वयं कहि सकैत छथि।

जीवन भरि प्रयास केलाक बादो कै बेर होइत छैक जे हम की केलहुँ? कहीं हमर जिनगी व्यर्थ तँ नहि चलि गेल? कै बेर लोके खीधांस करैत भेटत ।" एह! की केलहुँ? कोनो पोखर -इनार खुनेलहुँ की?आब पोखरि-इनार खुनेबाक जमाना नहि रहलैक । पहिलुका समयमे एकर महत्व एहि लेल छलैक जे लोक केँ एहिसँ जीवनमे सुविधा होइक । आब तँ समय बदलि गेल । सभक घर-आंङनमे चापाकल छैक,सौचालय-स्नानगृहक व्यवस्था छैक,तखन किओ पोखरि दिस किएक जाएत? समयक अनुसार लोकक अपेक्षा बदलि जाइत छैक।

एकहि जिनगीमे लोककेँ पिछला बातसभ कै बेर अप्रासंगिक लागए लगैत छैक। जखन जे भेलैक,से भेलैक,ओहिपर माथापच्ची केनाइ व्यर्थ थिक। लोक की कहैत छथि वा की कहताह ताहि हिसाबे चलब तखन तँ भए गेल । जरुरी अछि जे अपन मोनकेँ स्थिर कए सोची जे हमर की कर्तव्य अछि,हम की कए सकैत छी । अहाँ अपन हालतकेँ सभसँ नीकसँ अपने बुझि सकैत छी । तेँ जे अपना ठीक बुझाए सएह करबाक चाही आ जे बात बीति गेल तकरा बारे मे सोचि-सोचि समय नष्ट नहि करबाक चाही। एहि बातकेँ सदिखन ध्यान राखबाक चाही जे हम असगर नहि छी,ईश्वर हमरा संगे छथि । आस्तिक वुद्धि आ भगवानमे विश्वास रहलासँ पैघ सँ पैघ संकटपर विजय पाओल जा सकैत अछि ।

यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर: ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।

गीताक ई अंतिम श्लोक अछि । एहिमे एकहिठाम संजयक मुँहे सभकिछुक सारांश कहि देल गेल अछि । विजय ओकरे जतए भगवान श्रीकृष्ण छथि । महाभारत युद्धमे धृतराष्ट्रकेँ युद्धक परिणामक चिंता छलनि । रहि-रहि कए ओ संजयसँ एतबे पुछैत रहैत छलाह जे युद्ध क्षेत्रमे हुनकर पुत्रसभक की हाल अछि? ओ सभ जीत सकताह की नहि? संजय साफे कहैत छनि जे एहि युद्धमे संख्या ओ शस्त्रवलक कोनो अर्थ नहि रहि गेल अछि। विजय,विभूति ओ श्री ओतहि होएत जतए भगवान श्रीकृष्ण छथि,जतए धनुर्धारी अर्जुन छथि ,कारण हुनके संगे धर्म अछि । तात्पर्य जे धर्मक रस्तापर चलैत रहू,विजय हेबे करत।

मनुखक पास सीमित समय अछि । नान्हिटा जीवनकेँ नीकसँ बिता लेब एकटा कला थिक । कल्पित भय ओ व्यवधानक चिंता केलासँ किछु नहि होइत अछि,अपितु बनितो काज बिगड़ि जाइत अछि । जीवनमे ओएह आगू बढ़ैत छथि जे अपन सोचकेँ सकारात्मक रखैत प्रयत्नशील रहैत छथि । अस्तु,चिंता छोड़ू,सुखी रहू।

****

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.
विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/197004.
समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)
https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।